विज्ञान फंतासी कथाएँ

विज्ञान फंतासी कथाएँ

प्रकाश मनु

ज्ञान विज्ञान एजूकेयर

प्रकाशक • **ज्ञान विज्ञान एजूकेयर**
3639, प्रथम तल
नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • 2022
मूल्य • तीन सौ पचास रुपए
मुद्रक • आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

VIGYAN FANTASI KATHAYEN *stories* by Prakash Manu ₹ 350.00
Published by **GYAN VIGYAN EDUCARE**
3639 Netaji Subhash Marg, Darya Ganj, New Delhi-110002
ISBN 978-93-84344-29-0

अनुक्रम

1.	कुप्पू की करिश्माई कुरसी	7
2.	मार्था की नीली गुड़िया	16
3.	मिकी मोंपाई की घड़ी	25
4.	लो चला पेड़ आकाश में!	33
5.	अनोखी चिड़िया 'शिंगाई फू शुम्मा'	41
6.	गोपी की फिरोजी टोपी	49
7.	अमरता की खोज	60
8.	मंगल-ग्रह की लाल चिड़िया	69
9.	पप्पू की रिमझिम छतरी	82
10.	गिली गुलगुल	89
11.	दुनिया का सबसे अनोखा सुपर हाइटेक चोर	93
12.	चंद्रलोक की अदृश्य दुनिया	114
13.	गिल-गिल सेवन चौकीदार	129
14.	नीली किताब का रहस्य	137
15.	शब्द-भेदी तीर	150
16.	प्रोफेसर जोशी बादल देश में	161

कुप्पू की करिश्माई कुरसी

कुप्पू कुरसी पर बैठा कहानियों की किताब पढ़ रहा था। बड़ी ही अनोखी कहानियों की किताब। उसमें विज्ञान के नए-नए खेल दिखानेवाले भुल्लन चाचा के रोमांचक किस्से थे। उनके लिए विज्ञान ही खेल था और खेल विज्ञान के अजूबों जैसा। सिर पर टोप लगाए, बड़ी सी दाढ़ी-मूँछोंवाले भुल्लन चाचा हर वक्त हँसते रहते थे और बच्चों से उनकी दोस्ती बड़ी जल्दी हो जाती थी। जहाँ भी वे जाते, बच्चे उन्हें घेर लेते थे। भुल्लन चाचा अपने जादुई खटोले पर बैठे-बैठे उड़ते रहते थे, जिसे पता नहीं, कौन-कौन से वैज्ञानिक करिश्मों और कलपुरजों से उन्होंने तैयार किया था। अपने इस जादुई खटोले पर बैठ भुल्लन चाचा सारी दुनिया की सैर करने निकलते और कभी-कभी तो अपने साथ बच्चों को भी ले जाते थे। बच्चे भी भुल्लन चाचा के साथ मगन होकर गाना गाते हुए हवा में उड़ते और पूरी दुनिया की सैर कर आते थे।

कुप्पू को भुल्लन चाचा की कहानियाँ इतनी अच्छी लगीं कि वह उनमें पूरी तरह खो गया। कहानियों की किताब उसने बंद की और थोड़ी देर आँखें बंद करके कुरसी पर बैठा-बैठा सुस्ताने लगा।

अचानक उसके मन में एक खयाल आया, बड़ा ही अजीब खयाल और इसके साथ ही उसे बड़ी जोर की हँसी आई। वह देर तक हँसता ही रहा, जैसे हँसते-हँसते हँसी का गोलगप्पा बन गया हो।

'ओह, कहीं दूसरे कमरे से मम्मी न आ जाएँ, यह देखने के लिए कि कुप्पू अकेला बैठा-बैठा क्यों हँस रहा है?' सोचकर उसने बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोकी। पर भीतर खुदर-बुदर तो हो ही रही थी। उसे भला वह कैसे रोक पाता?

असल में कुप्पू के मन में, जो खयाल आया, वह था ही इतना अजीब और प्यारा कि वह चाहकर भी अपने भीतर की गुदगुदी को रोक नहीं पा रहा था। वह

सोच रहा था, 'काश, जिस कुरसी पर मैं बैठा हूँ, वह भी उड़ने लगे, भुल्लन चाचा के जादुई खटोले की तरह! फिर तो मैं झटपट सारी दुनिया की सैर करके आ सकता हूँ। तब कितना मजा आएगा, सचमुच कितना मजा!'

और सचमुच जैसे ही कुप्पू ने यह सोचा, उसके आसपास हवा में एक अजीब लहर सी शुरू हो गई। उसे लगा, कमरे की हवा जो अभी तक शांत थी, अब उसमें बड़ी तेज हलचल है और एक विचित्र सा कंपन, जिसके कारण कमरे में जितनी भी चीजें हैं, वे अपनी जगह पर ही थर-थर काँप सी रही हैं।

''अरे, यह क्या! क्या इस कमरे में कोई भूत आ गया? मैंने तो सिर्फ यही सोचा था कि काश, जिस कुरसी पर मैं बैठा हूँ, वह उड़ने लगे। पर यह सोचने के साथ ही भला ऐसा क्या हो गया कि··· ?'' कुप्पू हैरान। वह अपने आपसे कह रहा था, ''कहीं खटोले पर उड़नेवाले भुल्लन चाचा ही तो इस कमरे में नहीं आ गए? और उन्होंने आते ही ऐसी उथल-पुथल मचा दी कि राम-राम··· !''

□

कुप्पू कुछ और सोच पाता, इतने में ही उसने देखा कि कमरे में जैसे एक तेज अंधड़ सा आ गया। कमरे की हर चीज अब इतनी जोर से थरथरा रही थी कि उसे लगा, अगर उसने झटपट नहीं सँभाला तो अलमारियों में रखी चीजें और सारा सामान थर-थर करता हुआ जमीन पर आ गिरेगा। और फिर जो टूट-फूट होगी, उसकी कल्पना करते ही वह सिहर गया।

कुप्पू फौरन उठकर चीजों को सँभालना चाहता था। इतने में उसने देखा, किताबोंवाली अलमारी की सारी-की-सारी किताब-कॉपियाँ जोर-जोर से हिलती-काँपती हुई एक के बाद एक जमीन पर आ गिरी हैं। यही नहीं, उसका कीमती कलरबॉक्स, ज्यॉमेट्रीबॉक्स, बड़ा वाला स्टील का स्केल और यहाँ तक कि ऊपरवाली रैक पर रखे तमाम रंग-बिरंगे खिलौने, फ्रेम में जड़े फोटो, तरह-तरह की गुड़ियाँ, हवाई जहाज, टेडीबियर, खरगोश और बारहसिंगा सब-के-सब बुरी तरह औंधे होकर गिरे थे और कुछ चकराए हुए से अपने आसपास देख रहे थे, जैसे जानना चाहते हों कि यह मामला क्या है।

और कुप्पू भी क्या कम चकराया हुआ था!

'अरे, यह क्या··· ? मैंने ऐसा थोड़े ही कहा था··· !' उसने जैसे हालात को सँभालना चाहा।

पर इतने में ही कमरे में ऊपर रखा काँच का बड़ा सा फूलदान गोल-गोल घूमता हुआ एकाएक तेजी से नीचे आ गिरा और 'धड़ड़ड़ड़···धम्म!' की आवाज

के साथ कोई हजार टुकड़ों में बँट गया। चारों तरफ काँच की किरचें और फूल बिखर गए।

''ओह, यह तो बुरा हुआ। बहुत बुरा। अब तो जरूर मम्मी आकर पूछेंगी तो मैं क्या कहूँगा कि यह हुआ क्या था! आखिर मुझे उड़ने की सूझी ही क्यों··· ?'' कुप्पू पछता रहा था।

पर इतने में नीचे जमीन पर गिरी ढेर सारी किताबें-कापियाँ एकाएक हवा में उड़ीं और कमरे में गोल-गोल घूमने लगीं। और यही नहीं, एक के बाद एक इतने अजीबोगरीब तमाशे हुए कि कुप्पू ठोड़ी पर हाथ रखे हैरानी से देख रहा था। कुप्पू का हवाई जहाज जो जमीन पर गिरा था, वह हवा में उड़ने के लिए 'गुर्र-गुर्र' कर रहा था। पर वह हवा में उड़ता, इससे पहले उसमें खरगोश, बारहसिंगा, गुड़िया, बंदर और न जाने कौन-कौन बैठ गए। जहाज हवा में उड़ा तो सबके मजे आ गए। पर सबसे खुश था—छोटा सा ठुनकू बंदर, जो मजे में ठुनकता हुआ जहाज से नीचे झाँककर अपने दाँत दिखा रहा था!

'अरे, यह सब क्या है? कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा?' कुप्पू ने अपनी बाँह में चिकोटी काटी। फिर बोला, 'नहीं-नहीं, मैं तो जाग रहा हूँ और पूरी तरह होश में हूँ, तो फिर··· ?'

कुप्पू उठकर कमरे में गोल-गोल घूमती चीजों को पकड़ना चाहता था, पर वह तो खुद चक्कर में था। इसलिए कि उसकी कुरसी भी बड़ी तेजी से गोल-गोल घूम रही थी। बगल में पड़ी मेज की तो और भी बुरी हालत थी। पता नहीं, वह कैसे उलट गई थी और इसी हालत में गोल-गोल घूमने लगी थी, जैसे शीर्षासन कर रही हो। और उसके बाद पता नहीं कैसे, कमरे की खिड़कियाँ भड़ाक से खुलीं और गोल-गोल घूमने लगीं। कुप्पू की कुरसी एक जोर के झटके से अपनी जगह से हिली और फिर उड़ने लगी। उड़ते-उड़ते वह कमरे से निकली और हवा में उठ गई। उठती चली गई। और फिर बड़ी तेजी से उड़ने लगी।

अब वह बिलकुल हेलीकॉप्टर की तरह सबके घरों से ऊपर उड़ती हुई जा रही थी। देख-देखकर कुप्पू को बड़ा मजा आ रहा था। पर जो लोग जमीन पर से उसे देख रहे थे, वे देख-देखकर चकरा रहे थे, 'अरे, अरे, यह क्या? देखो, यह कुरसी पर बैठा हुआ लड़का उड़ रहा है। भई, यह क्या तमाशा है। कहीं यह लड़का गिर न पड़े!'

कुप्पू के दोस्त नीचे से जोर-जोर से चीख-चिल्ला रहे थे, ''कुप्पू, ध्यान से बैठे रहना। मजबूती से कुरसी के हत्थे पकड़े रहना। कहीं गिर न पड़ो। देखो, ऊपर

हवा तेज है, बड़ी तेज। अपना खयाल रखना।''

होते-होते कुप्पू के घर के आसपास तो मेला जमा हो गया। हजारों-लाखों लोग इकट्ठे हो गए। सबकी नजर कुप्पू और उड़ती हुई कुरसी पर थी। सब सोच रहे थे, 'अरे-अरे, यह क्या? हमने तो भई, ऐसा अजूबा पहले कभी देखा नहीं।'

□

बात धीरे-धीरे अखबारों के दफ्तरों तक पहुँची, टीवी चैनलों में भी। सारे-के-सारे कैमरे अब कुप्पू की कुरसी की ओर लगे थे और कुप्पू मजे से हँसता-गाता हुआ हवाओं से बात कर रहा था। चाहे ऊँचाई से ही सही, वह सारी दुनिया की एक झलक देख पा रहा था। लोग उसकी सलामती की दुआएँ कर रहे थे। कुछ लोगों ने हवन और यज्ञ भी शुरू कर दिए थे। दुनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिक यह अटकलें लगाने में लीन थे कि अरे भई, यह कुरसी उड़ी तो उड़ी कैसे?

उधर तेज हवा के झोंकों में कुप्पू को नींद आ गई। टीवीवालों के कैमरों ने यह देखा कि कुप्पू कुरसी पर बैठा-बैठा सो गया है, तो रिपोर्टरों ने झट अपने समाचारों में बताया। सुनकर हड़कंप सा मच गया। लोगों की ऊपर की साँस ऊपर, नीचे की नीचे। सब बुरी तरह चिंतित थे, 'हाय-हाय, कुप्पू गिर न जाए। अरे भैया, कहीं कुप्पू हमारा गिर न जाए!'

बात की बात में चारों तरफ हल्ला हो गया कि कुप्पू को नींद आ गई।

''यह तो बड़ा गजब हुआ। बड़ा ही गजब! उसकी जान खतरे में। हो सकता है, कोई अनिष्ट हो जाए। पर नहीं-नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। बिलकुल नहीं!'' घबराकर लोग एक-दूसरे से कह रहे थे।

''कुप्पू की जान खतरे में है···!'' देखते-ही-देखते फेसबुक, ट्विटर, गूगल प्लस···सब पर हल्ला हो गया। पूरी दुनिया में कुप्पू के लाखों फैंस मोमबत्तियाँ जलाकर प्रार्थना कर रहे थे, ''हे भगवान्, कुप्पू का कुछ अनर्थ न हो।''

भारत, अमेरिका, जापान, चीन, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस—सब देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने कुप्पू के लिए शुभकामना संदेश भेजे। पूरी दुनिया में इतनी तेज हलचल थी कि संसार के बड़े-से-बड़े वैज्ञानिक सकते में थे। हर कोई कुप्पू की कुरसी के उड़ने का राज दूसरों से पहले जान लेना चाहता था, पर वे इंतजार कर रहे थे कि पहले वह अंतरिक्ष से नीचे उतरे, तब वे इस बारे में अच्छी तरह सोच पाएँगे।

जमीन से ही बड़े-बड़े कैमरों द्वारा धरती के छोटे से हीरो कुप्पू के फोटो खींचने की कोशिशें जारी थीं। फोटो बहुत अच्छे नहीं आए, पर कुरसी पर बैठा और ऊपर उड़ता कुप्पू फिर भी काफी साफ दिखाई देता था। और यह भी कि नींद

में वह कुरसी के एक हत्थे के सहारे सिर टिकाकर मजे में सो रहा है।

जंगल में आग की तरह पूरी दुनिया में यह खबर फैल गई थी कि धरती का अजब-अनोखा अंतरिक्ष-यात्री सो रहा है। और यह खतरे की घंटी जैसा है। 'एन अलार्मिंग सिगनल···!' हॉराइजन टीवी की सुरखी, जिसने सबसे पहले यह खबर दी थी।

''क्या कुछ ऐसा नहीं हो सकता कि कुप्पू जाग जाए?'' फेसबुक पर कुप्पू के फैंस अकुलाकर एक-दूसरे से पूछ रहे थे।

और यह समस्या अब नासा के प्रतिभाशाली अंतरिक्ष विज्ञानी मि. हैज ब्राउनी तक जा पहुँची थी।

''क्या कुछ ऐसी तीव्र लेजर किरणें या रेडिएशंस अंतरिक्ष में भेजे जा सकते हैं मि. ब्राउनी, जो कुप्पू के पास पहुँचकर तेज हलचल मचा दें, जिससे कि वह उठ बैठे?'' अपनी प्रयोगशाला में चिंतित बैठे मि. हैज ब्राउनी से हजारों लोगों ने एक साथ सवाल किया। वे इसी विषय पर पिछले पंद्रह सालों से रिसर्च कर रहे थे। गूगल के जरिए कुप्पू के फैंस ने यह पता लगा लिया था।

''इस बारे में कुछ और वैज्ञानिकों की राय भी ली जानी चाहिए। एक्चुअली एक पूरी कमेटी यह फैसला ले, तो बेहतर है।'' मि. ब्राउनी का संक्षिप्त और सधा हुआ जवाब। बात साफ थी, वे इस मामले में कोई रिस्क नहीं लेना चाहते थे।

आनन-फानन में जाने-माने अंतरिक्ष विज्ञानियों की टीम मि. ब्राउनी की लैब में पहुँच गई, ताकि इस बारे में अच्छी तरह सोच-विचार किया जा सके। आखिर लंबी मीटिंग के बाद वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया, ''इस वक्त ऐसी कोई कोशिश ठीक नहीं। इसलिए कि इससे उलटा नुकसान हो सकता है। बहुत संभव है कि ऐसा करने से कुप्पू की कुरसी एक झटके से गिरे। इससे उसकी जान को खतरा हो सकता है···!''

''ओह! लेकिन अगर सोते-सोते वह गिरा, तब भी तो उसकी जान जा सकती है?'' टीवी पर नासा के वैज्ञानिकों का वक्तव्य सुननेवाली अधीर जनता का प्रश्न।

''बिलकुल···बिलकुल, यही तो पेंच है। असल में यह बड़ा संजीदा मसला है, बड़ा पेचीदा···'' नासा के सारे वैज्ञानिक सिर से सिर मिलाकर बैठे, गंभीर चिंतन में डूबे थे। जैसे उन्हें कोई सही रास्ता न सूझ रहा हो।

उधर कुप्पू गहरी नींद में बड़ा मजेदार सपना देख रहा था। सपने में भी वह आसमान में उड़ रहा था और धीरे-धीरे बुद-बुद करता हुआ अपने आप से कह

रहा था, ''मैं सारी दुनिया में घूमूँगा, सारी दुनिया में! तब देखना, कितना मजा आएगा। कितना··· !''

सपने में वह चंद्रलोक की मजेदार सैर के बाद अब मंगल-ग्रह की लंबी यात्रा के लिए निकल पड़ा था। और उसकी कुरसी अब भी अंतरिक्ष में उड़ रही थी। वह उड़ती हुई ऊपर, और ऊपर, और ऊपर जा रही थी।

लोगों की साँसें जैसे थम गई थीं, पर कुप्पू के मन में तो जैसे खुशी का नशा था। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, सपने में भी नहीं।

इधर कुप्पू की नींद ने उसके दोस्तों की नींद उड़ा दी थी। ''हाय-हाय अब क्या होगा? हमारे प्यारे कुप्पू को कुछ हो गया तो··· ? अगर वह एकाएक अंतरिक्ष से नीचे गिर पड़ा तो··· ! क्या जीवित बच पाएगा?''

''दोस्तो, करो जो भी कर सकते हो। यह करो या मरो का सवाल है।'' कुप्पू के एक दोस्त देबू हालदार ने ललकारते हुए कहा तो उसके सब दोस्तों में हलचल मच गई।

आखिर झटपट वे एक बड़ा सा लाउड स्पीकर ले आए, जिसके साथ बहुत बढ़िया बैटरी और माइक भी था। उसपर एक साथ पूरा जोर लगाकर चिल्लाते हुए उन्होंने कुप्पू को जगाया, ''जागो कुप्पू, जागो! वरना बड़ा खतरा है। तुम गिरे तो भैया, हाथ-पैर सलामत न रहेंगे।''

शोर सुनकर कुप्पू की नींद खुल गई और देखनेवालों की जान में जान आई। ओह, इस चीज के लिए वे कितने परेशान थे।

कुप्पू के दोस्त अब खुश होकर भँगड़ा कर रहे थे। अपनी कुरसी पर अंतरिक्ष में उड़ता हुआ कुप्पू भी यह देख रहा था और बड़े जोर से हँस रहा था।

□

आखिर इतने सारे खेल-तमाशे करने के बाद आधी रात को सारी दुनिया का चक्कर लगाकर कुरसी वहीं आ गई, जहाँ से उड़ी थी। कुप्पू ने देखा, उसके घर के चारों ओर लोगों का भारी हुजूम था। टीवीवाले अपने-अपने भारी-भरकम कैमरे लिये खड़े थे।

कुप्पू को अपनी जादुई कुरसी पर बैठे-बैठे नीचे उतरते देखा तो सारे टीवीवालों ने उसे घेर लिया, ''क्यों कुप्पू, तुम्हें कैसा लग रहा है? ऊपर से दुनिया कैसी लगती थी? कहीं तुम्हें चक्कर तो नहीं आए!''

कुप्पू को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। बोला, ''आप लोग क्या कह रहे हैं, मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। हाँ, मैंने एक सपना तो देखा था कि मैं

कुरसी पर बैठा-बैठा उड़ रहा हूँ। इससे ज्यादा मुझे कुछ याद नहीं है।''

टीवीवालों ने यही बात अपनी खबरों में बताई। यही बात अगले दिन अखबारों की बड़ी-बड़ी सुर्खियों में छपी कि धरती का एक लड़का अपनी कुरसी पर बैठा-बैठा अंतरिक्ष में हो आया। पर यह क्या जादू है, किसी को पता ही नहीं। बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की समझ में भी कुछ नहीं आ रहा।

अगले दिन दुनिया के जाने-माने वैज्ञानिकों ने कुप्पू को घेर लिया। वे तरह-तरह के परीक्षण करके यह जानने की कोशिश करने लगे कि कुप्पू की कुरसी उड़ी तो उड़ी कैसे?

उनमें से बहुतों की राय थी, 'कुप्पू ने अंतरिक्ष में उड़ने के बारे में इतनी शिद्दत से सोचा कि कमरे की हवा में एक अव्यक्त ऊष्मा और विक्षोभ पैदा हो गया! और हवा हलकी होकर उसे उड़ाती हुई अंतरिक्ष में ले गई।'

''पर यह तो हमारी पुरानी थ्योरी को ही साबित करता है कि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत, पारब्रह्म को पाइए, मन ही की परतीत!'' कुप्पू की हिंदी की मैडम मिसेज केसरवानी बड़े गर्व से आसपास के लोगों से कह रही थीं।

''हाँ, मन में अकूत ऊर्जा है, अगर कोई उसका इस्तेमाल कर सके तो! चाहे जिस दिशा में आप इसे ले जा सकते हैं। कुप्पू के मन में उड़ने की बेतरह इच्छा थी, तो वह उड़ा···और बगैर किसी बाहरी साधन के, बस अपनी कुरसी पर बैठे-बैठे उड़ने लगा।'' कुप्पू के साइंस-टीचर मनचंदा साहब ने अपनी संतुलित व्याख्या पेश की।

इतने में एक टीवीवाले ने कुप्पू के मम्मी-पापा से बात की।

''सच में, कुप्पू कुछ निराला तो है, एकदम शुरू से ही! कोई दो-ढाई साल का था, तभी से मैंने देखा, यह अपने आप में डूबा रहता था। जैसे कुछ सोच रहा हो।'' कुप्पू की मम्मी ने कहा।

''हमने कुप्पू को साइकिल ला दी, तो वह साइकिल पर बैठकर चाँद के पास जाने के लिए मचल पड़ा। कहता था—पापा, इस साइकिल के पहिए पर रॉकेट लगा दिया जाए, तब तो मैं जरूर चाँद तक पहुँच जाऊँगा!'' कुप्पू के पापा बता रहे थे।

''उसने एक सपना भी देखा था कि कैसे अपनी नीली साइकिल से वह चाँद पर जा पहुँचा है।'' कुप्पू की मीनू दीदी टीवीवालों को चहक-चहककर बता रही थी, ''और यही नहीं, सपने में चाँद ने उसका स्वागत किया और कहा कि सुनो कुप्पू, तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। जब भी चाहो, तुम बड़ी खुशी से यहाँ आ

सकते हो। और इतना ही नहीं, उस सपने में चाँद ने वहाँ के पत्थर भी एक बैग में भरकर दिए, ताकि लोगों को यकीन हो जाए कि कुप्पू सचमुच चाँद तक पहुँचा है।''कुप्पू ने इसपर एक स्टोरी भी लिखी थी, जो मैंने उसकी डायरी में पढ़ी थी।''

टीवीवालों को यह कमाल की बाइट मिल गई थी और वे झटपट-झटपट इसे अपने दर्शकों तक पहुँचाने की जुगत में लग गए।

''ओह, तो वाकई इतनी तड़प थी कुप्पू में अंतरिक्ष-यात्रा के लिए! तभी तो उसकी इस तड़प ने हवा को कँपा दिया और इतनी हीट और ऊष्मा पैदा हुई कि हवा में तीव्र विक्षोभ पैदा हो गया। हवा का वही तीव्र विक्षोभ उसे ऊपर उड़ाकर ले गया! हालाँकि इसपर 'फाइनल ओपीनियन' तो अभी शोध के बाद ही दिया जा सकेगा!'' एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक मि. स्वामीनाथन ने कहा।

□

इस अजीबोगरीब मामले की सही-सही वैज्ञानिक व्याख्या होनी अभी बाकी है। और कुप्पू के लाखों फैंस को उसका इंतजार है। हजारों वैज्ञानिकों को भी, जो कुप्पू की इस उड़नेवाली करिश्माई कुरसी को एक नए फिनोमना के रूप में देख रहे हैं।

इसपर टीवी के चैनलों पर भी बड़ी गरमागरम बहसें सुनाई दे रही हैं। कुछ लोग कहते हैं, ''पहले जमाने में बड़े-बड़े योगी इसी तरह ध्यान की शक्ति से हवा में उड़कर कहीं-से-कहीं पहुँच जाते थे। फिर कुप्पू की कुरसी अगर उड़ने लगी तो इसमें कौन सी कमाल की बात है?''

जवाब में बहुत से लोग दलील देते हैं, ''यह तो ठीक है कि पहले ऋषि-मुनि लोग ऋद्धि-सिद्धि और अपनी बहुतेरी आध्यात्मिक शक्तियों से चमत्कार दिखा देते थे। पर कुप्पू तो अभी बच्चा ही है। उससे हम चमत्कार की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?''

''है तो बच्चा, पर मन में तेज इच्छा हो तो आसपास काफी कंडेंस्ड रेडिएशंस फैल सकते हैं, जिनसे बहुत तीव्र ऊष्मा-संचार होता है। कुप्पू के साथ जो हुआ, वैसा बिलकुल संभव है। हालाँकि याद रहे, यह एक्सेप्शनल केस है...यानी अपवाद। लाखों बच्चों में कोई एकाध बच्चा ही कुप्पू जैसा होता है!''

''हमें देखना होगा कि कुप्पू में क्या खास बात है, जिससे उसकी इच्छा की डोर से बँधी कुरसी इस कदर हवा में उड़ी कि सारी दुनिया में हल्ला मच गया।'' बंगलुरु के एक बुजुर्ग वैज्ञानिक सोमचंद्रन ने सवाल उठाया, तो उसकी गूँज पूरी दुनिया में फैली।

आखिर कुप्पू की किस-किस तरह की वैज्ञानिक जाँच और टेस्ट किए जाएँ, इसपर विचार करने के लिए पूरी दुनिया के वरिष्ठ वैज्ञानिकों की एक टीम बंगलुरु आ रही है। उसमें संसार के जाने-माने और नोबेल प्राइज विजेता कई वैज्ञानिक भी हैं। वे यह मान चुके हैं कि कुप्पू और उसकी उड़नेवाली कुरसी इस समय विज्ञान की सबसे बड़ी और अबूझ पहेली बन चुकी है, जिसकी विज्ञान की मौजूदा थ्योरीज से व्याख्या करना संभव नहीं है। इसलिए वैज्ञानिक अब 'मन की ऊर्जा' को लेकर एक नया परावैज्ञानिक सिद्धांत गढ़ने पर विचार कर रहे हैं। इससे प्राचीनकाल की बहुत सी मिथकीय कथाओं के चमत्कारों को भी नए ढंग से समझा जा सकेगा।

विश्व के प्रमुख वैज्ञानिकों की इस टीम में एडवांस्ड साइंटिफिक रिसर्च इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर मि. स्वामीनाथन को भी शामिल होने का निमंत्रण मिला है, जिन्होंने अभी हाल में मन में उठती तरंगों में छिपे रेडिएशंस की थ्योरी दी है, जिस पर उन्हें फिजिक्स का नोबेल प्राइज दिए जाने की बात सुनाई दे रही है।

यों कुप्पू की उड़नेवाली कुरसी ने सब ओर बड़ी हलचल मचा दी है। और कुप्पू···? वह सबकुछ भूल अपने होमवर्क की तैयारी में जुटा है। सबको यों खामखाह-सिर खपाते देख, उसकी हँसी छूट जाती है। मगर कम-से-कम एक-एक बार और हवा में इसी तरह उड़ ले, यह इच्छा उसकी जरा भी कम नहीं हुई और उसे लगता है, जब भी वह हवा में फिर से उड़ने की बात सोचेगा, उसकी कुरसी फिर इसी तरह थरथराएगी···और फिर सबके देखते-देखते अंतरिक्ष में अपनी करिश्माई उड़ान शुरू कर देगी।

□

मार्था की नीली गुड़िया

मार्था छुट्टियों में पहाड़ की तलहटी में बसे अपनी नानी के गाँव वंडरवुड में आई थी। साथ में मम्मी-पापा भी थे। छोटा भाई जॉन भी। नानी मिसेज डेजी पिकेट उसे देखकर खिल उठीं। इसलिए कि वे जानती थीं कि मार्था को गाँव वंडरवुड की सुंदर प्राकृतिक छटा के साथ-साथ, उनकी मजेदार जादुई कहानियाँ इस कदर पसंद हैं कि छुट्टियाँ होते ही उसकी रट शुरू हो जाती है, ''चलो मम्मी, नानी के घर चलो। जल्दी!''

तीसरे दिन मम्मी-पापा और जॉन तो वापस लौट गए, लेकिन मार्था रह गई नानी के पास। उसे नानी की बातें सुनना अच्छा लगता था और इससे भी बढ़कर नानी के अजीबोगरीब किस्से-कहानियों की दुनिया का रोमांच। उसने नानी से वायदा करा लिया था कि रोज रात में वे उसे कहानी सुनाया करेंगी।

नानी कहानी सुनातीं तो मार्था बड़े चाव से सुनती। जितनी देर नानी कहानी सुनाती रहतीं, मार्था उतनी देर बस कहानी की दुनिया में खोई रहती। बार-बार पूछती, ''फिर क्या हुआ''? फिर क्या हुआ आगे?'' नानी खूब खुश होकर आगे कहानी सुनाती जातीं और मार्था इतने ध्यान से सुनती कि एक बार सुनते ही उसे पूरी कहानी याद हो जाती। फिर अगले दिन डायरी में वह पूरी कहानी उतार लेती और रात होते ही, फिर उसकी जिद शुरू हो जाती, ''नानी, कहानी''कोई नई कहानी!''

इसके अलावा मार्था को एक चीज और बहुत अच्छी लगती थी—नानी का खूब बड़ा सा पुराना संदूक, जिसपर जब देखो, एक बड़ा सा पीतल का ताला लटकता रहता था। जब-जब नानी संदूक खोलतीं, मार्था दौड़ी-दौड़ी उनके पास पहुँच जाती और बड़ी हसरत से उसके अंदर छिपी चीजें देखने लगती। नानी के संदूक खोलते ही उसके अंदर छिपीं जाने कितनी ही रंग-बिरंगी चीजों की झलक मार्था को मिल जाती। रेशमी कपड़े, बटुए, रंग-बिरंगे खिलौने। पुरानी स्वेटरें और स्कार्फ। चाँदी

और पीतल के छोटे-छोटे गिलास, कटोरियाँ। पुराने चाँदी के सिक्के। चाँदी के पुराने सिक्के। तरह-तरह के मोतियों की मालाएँ। और भी न जाने क्या-क्या!

मार्था को हैरानी होती—'अरे वाह! नानी ने भी अपने संदूक को क्या बढ़िया अजायबघर बना रखा है।'

एक दिन मार्था ने कहा, ''नानी-नानी, जरा अपना संदूक खोलो न! मैं अच्छी तरह देखना चाहती हूँ, तुमने उसमें क्या-क्या छिपाकर रखा है।''

सुनकर नानी भी हँसने लगीं। हँसते-हँसते उन्होंने संदूक का ढक्कन खोलकर कहा, ''आ मार्था, अब देख ले।''

मार्था नानी का संदूक देख रही थी, तो अचानक काठ की एक गुड़िया पर उसकी नजर गई। वह नीले रंग की सुंदर सी, बड़ी लंबी और पतली गुड़िया थी। उसके दोनों हाथों में पीतल की चम-चम करती सुंदर थालियाँ थीं। गुड़िया को जरा पीछे से दबाओ, तो झट पीतल की थालियाँ बजने लगतीं। मीठा-मीठा संगीत सुनाई देने लगता।

बस, मार्था तो वह गुड़िया देखकर खुशी के मारे नाच उठी। बोली, ''नानी-नानी, मैं यह गुड़िया लूँगी।''

इसपर नानी बोलीं, ''ठीक है, रख ले। पर मार्था, जरा इसे सँभालकर रखना। यह मेरे बचपन की गुड़िया है। बड़ी ही कमाल की!''

फिर आगे उन्होंने बताया, ''मेरे पिता, यानी तेरे परनाना ने इसे खुद अपने हाथों से बनाया था। बड़े ही गजब के कलाकार थे तेरे परनाना। और यह गुड़िया तो उन्हें पसंद भी खूब थी। ज्यादातर यह उनके कमरे में ही रहती थी। मैं बचपन में कभी-कभी उनसे माँगकर इससे खेला करती थी। फिर तेरी मम्मी जब छोटी थी, तो वह भी इससे खेलती रही। तू भी कुछ रोज खेली। फिर मैंने इसे संदूक में छिपा दिया। तुझे बड़ी प्यारी लगती है यह। क्यों है न?''

''चिंता न करो नानी, मैं इसे बहुत सँभालकर रखूँगी।'' कहकर मार्था ने गुड़िया को छाती से लगा लिया।

और उसी दिन उसने उस सुंदर नीली गुड़िया का नामकरण भी कर दिया। बड़ा ही सुंदर नाम उसके होंठों पर आया और उसने धीरे से फुसफुसाकर कहा—''साशा···! बस, साशा ही नाम होगा मेरी गुड़िया का। जितनी प्यारी गुड़िया, उतना ही प्यारा नाम—साशा! वाह, कितना खूबसूरत नाम है!''

नानी उस समय सिलाई मशीन पर मार्था के लिए गुलाबी फ्रॉक सी रही थीं। मार्था की फुसफुसाहट जाने कैसे उन तक भी पहुँच गई और वे हँसकर बोलीं,

''बिलकुल ठीक कहा मार्था। सुंदर सी गुड़िया के लिए सुंदर सा नाम! वाकई साशा नाम तुम्हारी इस प्यारी गुड़िया पर खूब जँचेगा।'' मार्था ने सुना तो जैसे निहाल हो गई। उसने प्यार से अपनी गुड़िया को चूम लिया।

उसके बाद तो मार्था एक पल के लिए भी उस नीली गुड़िया साशा को अपने से अलग नहीं करती थी। वह नानी से कहानियाँ सुनती तो साशा को भी अपनी गोदी में बैठा लिया करती थी। फिर धीरे से फुसफुसाकर कहती, ''सुन साशा, नानी की कहानी। कितनी सुंदर कहानी है! तुझे अच्छी लग रही है न?''

मार्था नानी के गाँव से घर लौटी, तो भी उस नीली गुड़िया साशा को हर पल अपने साथ ही रखती थी। रात-दिन उसे अपनी गोदी में लिये रहती। उसके साथ मीठी-मीठी बातें करती। उसे प्यारी-प्यारी कविताएँ और कहानियाँ सुनाती और उसके साथ खेल खेलती। उसे नए-नए कपड़े पहनाती, सजाती-सँवारती। यहाँ तक कि पाठ याद करती तो भी उसे अपने साथ ही बैठाए रखती। रात को अपने साथ ही सुलाती।

बस, जब वह स्कूल जाती, तब बड़ी मुश्किल से साशा को घर पर अपनी खिलौनों की अलमारी में छोड़कर जाती। और घर आते ही फिर उसे गोद में लेकर नाचने-कूदने, गाने लगती।

नीली गुड़िया साशा मार्था के साथ इतनी घुल-मिल गई थी कि दोनों मिलकर देर तक खूब बातें करतीं। मार्था उसे अपनी सहेलियों के बारे में खूब सारी मजेदार बातें बताती। सुनकर गुड़िया खूब हँसती, खूब हँसती। और तब खुद-ब-खुद उसके हाथों की पीतल की थालियाँ खनखनाने लगतीं। आसपास मीठा-मीठा संगीत बिखर जाता। यह मार्था को बहुत अच्छा लगता।

फिर मार्था साशा को बताती कि आज स्कूल में क्या-क्या हुआ। उसने कौन-कौन सी शरारतें कीं···क्लास में क्या-क्या पढ़ाया गया? बातें करते-करते मार्था को अचानक अपना होमवर्क याद आ जाता। कहती, ''अरे बाप रे! मुझे तो पूरी एबीसीडी याद करनी है।'' और मार्था एबीसीडी याद करने लगती तो साथ-ही-साथ गुड़िया से भी कहती, ''ओ री साशा, तू भी याद कर ले न, ए फॉर एप्पल!''

दो ही दिन में मार्था की नीली गुड़िया ने एबीसीडी याद कर लीं। मार्था बोली, ''वाह गुड़िया! अब झटपट मेरे साथ एक से सौ तक गिनती भी याद कर ले। मुझे कल क्लास में सुनानी है।''

□

ऐसे ही दिन बीत रहे थे। न मार्था को अपनी प्यारी गुड़िया के बगैर चैन था

और न गुड़िया को मार्था के बगैर।

लेकिन एक दिन गजब हो गया। मार्था सुबह उठी तो देखा, उसकी प्यारी नीली गुड़िया साशा गायब! यहाँ-वहाँ सब जगह देखा, मगर साशा कहीं नहीं मिली। उसने मम्मी से भी कहा। मम्मी बोलीं, ''तुझे चीजें सँभालकर तो रखना आता नहीं है। अब नानी के घर जाएगी तो क्या कहेगी?''

मार्था और भी दुःखी हो गई। अरे! उसका दुःख तो कोई समझता ही नहीं है। ऊपर से उलटे तोहमत और लगाई जा रही हैं।

उसने साशा को हर जगह तलाशा। खिलौनों की अलमारी में। पड़छत्ती पर, जहाँ उसके पुराने कपड़े, किताबें, पत्रिकाएँ और राम जाने घर का क्या-क्या कबाड़ पड़ा हुआ था। छत पर···जहाँ शाम को वह टहलने जाती है। यहाँ तक कि पास के झूला-पार्क में भी वह साशा को तलाश कर आई। इसलिए कि उसे अचानक याद आया कि वहाँ गुलाबों की बगीची के पास वह एक बार साशा को घुमाने ले गई थी। क्या पता, वह खुद ही टहलती हुई अकेले वहाँ चली गई हो और अब घर का रास्ता भूल गई हो!

पर साशा को न मिलना था और न वह मिली। मार्था के दुःख का कोई ठिकाना न था। रात-दिन वह बस साशा को ही याद करती थी।

अगले साल छुट्टियों में मार्था नानी के घर गई तो नानी ने छूटते ही कहा, ''मार्था, मेरी गुड़िया नहीं लाई?''

''नानी!'' मार्था ने उदास होकर कहा, ''वह तो कहीं चली गई।'' कहते-कहते मार्था की आँखों में आँसू छलछला आए।

सुनकर नानी को बड़ा दुःख हुआ। पर फिर मार्था की हालत देखकर बोलीं, ''चल, रो मत। मैं तुझे दूसरी गुड़िया देती हूँ।''

लेकिन नानी ने संदूक खोला तो मार्था का मुँह खुला-का-खुला रह गया। देखा, उसकी प्यारी नीली गुड़िया वहाँ थी। मार्था बोली, ''अरे, तुम यहाँ!''

इसपर नीली गुड़िया मुँह फुलाकर बोली, ''तुम तो मुझे अपने साथ खेलने के लिए ले गई थीं। फिर खेल भूलकर पाठ रटाने लगीं। तो फिर मैं भला क्या करती?''

मार्था को अपनी भूल पता चली। उसने गुड़िया से माफी माँगी।

नानी ध्यान से मार्था और नीली गुड़िया साशा की बातें सुन रही थीं और हैरान थीं कि दोनों एक-दूसरे को कितना चाहती हैं। साशा भले ही मार्था से रूठकर चली आई थी, पर मार्था को कतई भूल नहीं पाई थी और उसे देखते ही उसकी आँखों में अनोखी चमक भर गई थी।

इस बार मार्था फिर नानी से गुड़िया माँगकर ले गई और घर जाते ही उससे ढेर सारी बातें शुरू कर दीं। साथ ही शिकायत भी की, ''सुनो मेरी प्यारी डॉल, अगर तुम्हें मुझसे कोई शिकायत थी, तो पहले मुझे बताना तो चाहिए था न? तुम तो गुस्से में ऐसे ही चली गईं। पता है, मुझे कितनी परेशानी हुई? मैं रात-दिन बस तेरे बारे में सोचती थी और रोती रहती थी।''

और मैं···! मैं क्या कम परेशान थी? दोस्ती क्या होती है, यह मैंने पहली बार जाना। इसलिए तुम्हारी तरह मेरी आँखों से आँसू चाहे न निकले हों, पर दिल तो मेरा भी बहुत भरा हुआ था। और मैं हर पल इंतजार करती थी कि कब मेरी प्यारी सहेली मार्था आएगी और मुझे इस बंद संदूक से मुक्ति मिलेगी।''

कहते-कहते नीली गुड़िया एक पल को सीरियस हुई, फिर हँसने लगी, खिल-खिल, खिल-खिल। हँसते-हँसते बोली, ''क्या बताऊँ मार्था, मुझे गुस्सा ज्यादा ही आता है। गुस्सा आए तो मैं कुछ ज्यादा सोच नहीं पाती।''

''क्यों, ऐसा क्यों मेरी प्यारी सहेली?'' मार्था चौंकी। उसने पहली बार किसी गुड़िया को ऐसी बातें करते देखा था।···यानी उसकी गुड़िया तो एकदम दूसरी लड़कियों की तरह बातें करती है। उसे अपने दिल की बात भी बता सकती है। तब तो यह वाकई पक्की सहेली बन गई उसकी।

□

मार्था का सवाल सुनकर नीली गुड़िया एक पल के लिए चुप रही। फिर बोली, ''असल बात यह है मार्था, कि मुझे बनाया था तुम्हारे परनाना ने। शायद नानी ने तुम्हें बताया हो। नानी, जब तुम्हारी तरह बहुत छोटी सी थीं, तब परनाना ने सोचा कि बेबी डेजी के खेलने के लिए कोई बढ़िया सी, सुंदर गुड़िया होनी चाहिए। और फिर तुम्हारी नानी के खेलने के लिए उन्होंने मुझे बनाया था। तुम्हारे परनाना को गाँव में सब पीटर पॉल कहकर बुलाते थे। वे गाँव के मशहूर बढ़ई थे, पर साथ ही उन्हें विज्ञान की भी अच्छी जानकारी थी। इसलिए वे बड़ी अजब-गजब चीजें बनाया करते थे, जैसे कि मैं···!''

''जैसे कि तुम! क्या कह रही हो साशा···? क्या तुम भी कुछ अजब-गजब हो? मतलब···रहस्यपूर्ण!'' मार्था ने हैरान होकर पूछा।

''हाँ, इसमें क्या शक!'' कहकर साशा हँसने लगी।

''ओहो! तो क्या तुम इसलिए मुझे छोड़कर चली गईं कि तुम जादूवाली गुड़िया हो और तुम्हें उड़ना आता है?''

''बिलकुल ठीक कहा तुमने, मार्था!'' कहते-कहते नीली गुड़िया साशा खिलखिलाई।

''अरे!'' साशा की बात सुनते ही मार्था के माथे पर लकीरें खिंच गईं। अचरज से भरकर बोली, ''यह कैसी बात? मैंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि कुछ ऐसा होगा।···इतनी विचित्र बात! पर मुझसे यह छिपी कैसे रह गई?''

''बहुत सी चीजें हमारे आसपास होती हैं, पर हम उन्हें नहीं देखते या नहीं जानते, क्योंकि हम उन्हें उतने ध्यान से नहीं देखते, जितना कि देखना चाहिए। और अगर हम देखें तो सचमुच दुनिया कुछ नई-नई और जादुई लगे।'' नीली गुड़िया साशा ने कहा, ''अब देखो, तुमने ही गौर नहीं किया कि मैं बोल सकती हूँ। तुम्हारे परनाना ने पता नहीं, किस तकनीक से मुझमें आवाज भर दी। मैं बहुत ज्यादा नहीं बोल सकती, पर कुछ तो बोल ही सकती हूँ। शायद तुम्हारे परनाना को टेपरिकॉर्डर जैसी किसी तकनीक की जानकारी रही हो, जो उन्होंने चुपके से मुझमें फिट कर दी। या शायद यह कोई और वैज्ञानिक करिश्मा हो···मैं कह नहीं सकती!''

फिर वह मार्था को उसके परनाना के बारे में एक-से-एक अनोखी और बड़ी अजीबोगरीब बातें बताने लगी।···

''सच्ची बात तो यह है मार्था कि बड़े अजीब और धुनी थे पीटर पॉल। कम-से-कम मैंने तो उन जैसा धुनी आदमी कोई और देखा नहीं···!''

नीली गुड़िया साशा बता रही थी—

''···मार्था, मुझे अच्छी तरह याद है कि धुन के पक्के तुम्हारे परनाना रात-दिन बस यही सोचते थे कि वे एक ऐसी उड़न-मशीन बनाएँगे, जिससे आदमी चिड़ियों की तरह उड़कर आसमान की सैर कर सके। अपने जीवन के कोई पचास साल उन्होंने इस काम में लगाए। गाँव के लोग कहते—''अरे मिस्टर पॉल, किस झंझट में पड़ गए आप? जिंदगी तो जीने और मजा लेने के लिए है···!''

''हाँ, पर जिंदगी बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने के लिए भी है।'' पीटर पॉल हँसकर कहते और उनके हाथ वसूला, आरी वगैरह-वगैरह थामे, फिर से अपने काम में जुट जाते। आखिर उन्होंने इस तरह के कलपुरजे बनाने में सफलता हासिल की कि थोड़ा जोर से ऊपर उछाला जाए, तो उनकी बनाई हुई उड़न-मशीन कोई पंद्रह-बीस फीट तक ऊपर आसमान की ओर चली जाती।

कोई पंद्रह-बीस फीट···! बस, इतना ही। अपने वजन के मारे यह और ऊपर नहीं जा पाती थी। पर यह भी तो कोई छोटा कमाल नहीं था। हालाँकि मि. पीटर पॉल जरा भी संतुष्ट नहीं थे। वह हर वक्त बस यही सोचते कि आखिर इस समस्या का क्या हल होना चाहिए?

''या तो यह मशीन कुछ हलकी हो जाए या फिर किसी चीज की मदद से

इतनी ताकत से इसे ऊपर की ओर फेंका जाए कि यह ऊपर आसमान में जाए, तो अपने लक्ष्य तक पहुँचे बिना वापस न आए।'' पीटर पॉल सोचते। उन्हें कोई सही तरीका समझ में नहीं आता था। उन्हीं दिनों उन्होंने मुझे बनाया था और मैं इतनी प्रिय थी, उन्हें कि हर वक्त मुझे अपने पास ही रखते थे।

फिर एक दिन अचानक उनके मन में खयाल आया, ''अगर कोई ऐसी चीज मैं ऊपर आसमान में भेजूँ, जिसका वजन ज्यादा न हो तो शायद कोई मुश्किल नहीं आएगी। अपनी उड़न-मशीनवाले कलपुरजे ही मैं उसमें लगा दूँगा।''

तभी उनकी निगाह मुझ पर गई। और उसी क्षण उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे मुझे आसमान की सैर कराएँगे।

''अगर उड़न-मशीन का मेरा सपना पूरा नहीं हो सका तो कम-से-कम इस बोलनेवाली नीली गुड़िया को तो मैं आसमान की सैर करा ही सकता हूँ!'' और यह सोचते ही वे फिर से काम में जुट गए। उनकी निराशा मानो खत्म हो गई थी और मन में नया जोश भर गया था। कोई महीने भर के अंदर उन्होंने वह करिश्मा कर दिखाया, जिसका सपना वे बचपन से देख रहे थे। एक रात जब सारा गाँव सो रहा था, उन्होंने मुझे काफी ऊँचाई तक ऊपर भेजने में सफलता हासिल की। और कुछ दिनों के बाद ही सुबह-सुबह गाँव के पुराने तालाब के किनारे पूरे गाँववालों के आगे उन्होंने इसका प्रदर्शन किया।

पीटर पॉल का यह करिश्मा देखकर सब हैरान थे। भला यह कमाल हुआ कैसे? किसी की समझ में नहीं आ रहा था। बहुतों को लग रहा था कि नीली गुड़िया आसमान में चली तो गई, पर अब वापस नहीं आएगी। पर जब मैं वापस आई और ठीक उसी समय वापस आई, जिसकी घोषणा पीटर पॉल सबके सामने कर चुके थे तो हर किसी की आँखें फटी-की-फटी रह गईं। पर इससे भी बड़ा करिश्मा तो अभी होना बाकी था। जब मैंने आसमान से लौटकर अपनी यात्रा का हाल सुनाना शुरू किया तो हर कोई हैरान था।

अब तो पीटर पॉल का दूर-दूर तक नाम हो गया। बड़े-बड़े धनी लोग और जमींदार उनसे खरीदना चाहते थे, पर नहीं...! जो पीटर पॉल को अच्छी तरह जानते थे, बस, वही सोच सकते थे कि उनका जवाब क्या होगा। मुझे खरीदने का प्रस्ताव करनेवालों से उन्होंने साफ शब्दों में कहा, ''यह गुड़िया मैंने अपनी बेटी डेजी के लिए बनाई है और यह बिकाऊ नहीं है। इसकी कीमत आप में से कोई नहीं लगा सकेगा और न कृपया ऐसी कोशिश करें।''

''उनकी बेटी कौन? समझ गई न मार्था?'' मार्था के परनाना का किस्सा

सुनाते-सुनाते अचानक रुककर साशा ने पूछा।

''हाँ-हाँ, मेरी नानी। मेरी नानी श्रीमती डेजी पिकेट··· !'' मार्था बोली।

''बिलकुल ठीक।···तुम्हारी नानी ने ही मुझे सँभालकर रखा। पर उन्हें पता नहीं चला कि मेरा स्वभाव कैसा है। और अब तुम मिली हो मार्था और मेरी एकदम पक्की सहेली बन गई हो, तो मैं तुम्हें बताए बगैर नहीं रह सकी···कि मैं थोड़ी गुस्सैल हूँ। इसलिए कि मुझे बनानेवाले तुम्हारे परनाना भी बड़े भले और धुनी इनसान थे, पर साथ ही थोड़े गुस्सैल भी थे। जो बात उन्हें पसंद नहीं आती थी, उसे बिलकुल बरदाश्त नहीं करते थे। और वैसी ही, मैं भी हूँ। मैं—यानी तुम्हारी प्यारी गुड़िया साशा!''

कहते हुए साशा हँसने लगी।

□

मार्था हैरान थी। उसे लगा कि अपनी इस अद्‌भुत सहेली साशा को आज वह पहली बार समझ पाई है। उसने उसी समय निश्चय किया कि नीली गुड़िया साशा से सुना यह गजब का किस्सा वह लिखेगी। और सचमुच अगले ही हफ्ते उसने लिखा तथा स्कूल की मैगजीन में छपने के लिए अपनी क्लास टीचर मिसेज नैंसी बारबरा को दिया।

और जब स्कूल मैगजीन में मार्था का लेख छपा तो हर कोई हैरान। सब जानना चाहते थे कि उसने जो कुछ लिखा है, वह सच है या सपना··· ? और मार्था के यह कहते ही कि उसने तो एकदम सच्ची बात लिखी है जो उसकी प्यारी नीली गुड़िया साशा ने उसे सुनाई है, मारे अचरज के सबकी आँखें गोल-गोल घूमने लगीं। हर कोई एक-दूसरे से कह रहा था—''अरे भई, यह कैसी बात··· ? ऐसी बात तो न पहले कभी देखी, न सुनी!''

सबसे ज्यादा हैरत में थे—प्रिंसिपल हैरी मून साहब। और फिर एक दिन अचानक शाम के समय प्रिंसिपल हैरी मून सर उसके घर आए। उनके साथ ही शहर की मॉडर्न साइंस इंस्टीट्यूट के स्पेस विंग के हैड डॉ. विन अब्राहम भी थे।

उस दिन संयोगवश नानी भी आई हुई थीं। प्रिंसिपल सर को अचानक आया देखकर नानी तो घबरा ही गईं। पर फिर पता चला कि वे मार्था की नीली गुड़िया का राज जानने आए हैं तो उन्हें कुछ चैन पड़ा।

नानी ने प्रिंसिपल हैरी सर के पूछने पर बताया कि यह तो सच्ची बात है कि उनके पिता पीटर पॉल जरा गुस्सैल स्वभाव के थे और कोई गलत चीज बरदाश्त नहीं करते थे। यही बात, जाने कैसे इस नन्ही गुड़िया साशा में भी आ गई।

बताते हुए नानी जैसे पुरानी यादों में पहुँच गईं। फिर बोलीं, ''यह तो मुझे भी पता था कि यह कमाल की गुड़िया है। इसलिए मैंने अभी तक सँभालकर रखा हुआ था। फिर एक दिन मार्था इसे ले गई। मैंने उसे गुड़िया को सँभालकर रखने के लिए तो कहा, पर यह बताना भूल गई कि मार्था, इस गुड़िया को नाराज न करना। असल में मेरे पिता पीटर पॉल कहा करते थे, इस सुंदर लेकिन गुस्सैल गुड़िया के दिमाग को ठंडक पहुँचाने के लिए अभी कुछ और प्रयोग करने होंगे···और वे आखिरी समय में इसी काम में लगे थे। पर इसी बीच उनके जीवन का दीया बुझ गया। मैंने एक दिन सुबह-सुबह चाय पीने के लिए उन्हें उठाया तो देखा कि उनमें जान ही नहीं थी।···वे मुझे बताया करते थे कि अकसर रात को सपने में भी वे अपने नए प्रयोगों के बारे में ही सोचा करते हैं। हो सकता है, यही सब सोचते हुए सपने में प्राणांत··· !''

और नानी इससे आगे कुछ और नहीं कह पाईं। कुछ देर बाद प्रिंसिपल हैरी सर और उनके वैज्ञानिक मित्र विन अब्राहम विदा लेकर चले गए।

अगले दिन शहर के अखबार मार्था की हवा में उड़नेवाली रहस्यपूर्ण नीली गुड़िया की चर्चा से भरे पड़े थे। पढ़कर मार्था के मम्मी-पापा और नानी ही नहीं, खुद मार्था भी हैरान थी। उसे खुद पता नहीं था कि यह नीली गुड़िया इतनी कीमती और करिश्माई है कि इसे उसके परनाना पीटर पॉल द्वारा किया गया अठारहवीं शताब्दी का मशहूर आविष्कार मान लिया जाएगा।

उस दिन स्कूल में प्रिंसिपल सर ने मार्था को विशेष सम्मान के रूप में सोने का एक मेडल दिया, क्योंकि उसी के कारण इस विचित्र गुड़िया के वैज्ञानिक रहस्य का पता चला। साथ ही मार्था की नानी के प्रति भी सम्मान प्रकट किया गया, जिन्होंने विज्ञान की एक अनमोल विरासत को सहेजकर रखा।

कुछ दिनों बाद मार्था ने अपनी प्यारी नीली गुड़िया साशा पर एक मजेदार किताब लिखी। उस किताब का नाम था—'मेरी करिश्माई नीली गुड़िया'।

मार्था की किताब की लाखों प्रतियाँ महीने भर में ही बिक गईं और मार्था की नीली गुड़िया का नाम अब सभी के होंठों पर था। हालाँकि मार्था को शायद अब भी चैन नहीं था। वह खुद भी कोई ऐसा वैज्ञानिक करिश्मा कर दिखाना चाहती थी, जैसा उसके प्यारे परनाना पीटर पॉल ने किया था।

□

मिकी मोंपाई की घड़ी

यह किस्सा एक छोटे से देश शिमीका का है, जहाँ गरीबी और मार तमाम मुश्किलें थीं तथा विज्ञान के बारे में जाननेवाले लोग तो बहुत ही कम थे। लिहाजा वहाँ काम की छोटी-मोटी चीजें भी नहीं थीं और घड़ी जैसी चीज वहाँ नियामत थी। फिर एक दिन मिकी मोंपाई ने शिमीका देश की पहली घड़ी बनाई। लोग खुश थे और खुशी के मारे उछल रहे थे कि ''आहा, हमारे देश में भी घड़ी बन गई। आहा-आहा, हमने भी कुछ कामयाबी हासिल की!''

मगर इसका नतीजा यह हुआ कि जिस मिकी मोंपाई ने घड़ी बनाई, उसका तो सिर ही फिर गया। वह किसी से सीधे मुँह बात तक नहीं करता था। आखिर अब वो महान् जो हो गया था।

वैसे जिस छोटे, बहुत छोटे कसबे का रहनेवाला था—मिकी मोंपाई, उसमें भला घड़ियाँ किसने देखी थीं? बल्कि आसपास के गाँवों-कस्बों के लोग भी कुछ न जानते थे। खुद मिकी मोंपाई एक दफे किसी की बारात में पड़ोसी देश मिनतारा गया था तो उसने पहलेपहल घड़ी देखी थी। देखकर हैरान रह गया था, ''अच्छा, ऐसा शै भी है इस धरती पर!'' तभी उसने निश्चय किया था कि कभी मौका मिले, तो वह भी ऐसी घड़ी बनाकर दिखा देगा।

मिकी मोंपाई का तब ताले ठीक करने का काम था। औजारों की थोड़ी-बहुत जानकारी थी। कुछ औजार हाथ से भी बना लेता था। ताले ठीक करते-करते उसने दिमाग लगाया और बहुत सारे पुरजे बनाने के बाद उन्हें जोड़कर एक दिन घड़ी बना डाली।

घड़ी चल पड़ी—टिक-टिक, टिक-टिक···! और मिकी मोंपाई का दिल बल्लियों उछलने लगा, ''अरे वाह, मैंने तो घड़ी बना ली। वाह-रे-वाह, यारो, मैंने तो घड़ी बना ली!''

पूरे शिमीका के लोग आए और यह घड़ी देखकर गए। सब हैरान थे कि आखिर मिकी मोंपाई ने घड़ी कैसे बना ली?

मिकी मोंपाई ने मुसकराकर कहा, ''पिछले पूरे पाँच साल पुरजे तैयार करने में लगाए हैं। तब बनी है यह घड़ी। कोई हँसी-खेल नहीं है!''

लेकिन पाँच साल की मेहनत से बनी घड़ी पूरे पाँच दिन भी नहीं चली और बंद हो गई। घड़ी थी भी बड़ी बेडौल। देखकर लगता था, किसी कबाड़खाने से निकलकर आई है। पड़ोसी देश मिनतारा वाली घड़ी भला कितनी सुंदर थी!

अब तो मिकी मोंपाई और सारे काम छोड़कर बस, घड़ी सुधारने में जुट गया। सारे-सारे दिन वह कमरे में बंद रहता और उसके एक-एक औजार को तराशता। उसकी घिर्री में तेल डालता। उसकी कमानी को और ज्यादा चुस्त-चौकस बनाने की तरकीब सोचता। वह यह भी सोचता था कि घड़ी का पेंडुलम बेहद सुंदर हो और हर घंटे बाद 'टन्न' करनेवाली उसकी आवाज इतनी प्यारी हो कि लोग अश-अश कर उठें!

उसने एक-से-एक नए-नए प्रयोग किए। हर तरह की जुगत बैठाई। पर मुश्किल ज्यों-की-त्यों थी और उसे हल करते-करते मिकी मोंपाई का दिमाग जड़ हो जाता था। वह अकेले में बुदबुदाता था, ''क्या मुसीबत गले पड़ी है! इससे तो ताले ठीक करनेवाला काम ही अच्छा था। कम-से-कम दिमाग की ऐसी चक्करघिन्नी तो नहीं बनती थी!''

मगर घड़ी तो जैसे मिकी मोंपाई का पूरा इम्तिहान लेने पर उतारू थी। लिहाजा उसकी हर कोशिश बेकार जा रही थी। नतीजा, वही ढाक के तीन पात। हर बार यही मुसीबत मिकी मोंपाई की नाक के आगे आकर खड़ी हो जाती कि घड़ी चाबी देने पर चलती तो थी, पर पाँचवें-सातवें रोज फिर से रुकती तो उसकी सूइयाँ मिकी मोंपाई को अपना मजाक उड़ाती लगतीं।

शहर के नामी सेंट कोलंबस स्कूल में विज्ञान के अध्यापक मि. पियरे निकल्सन पूरे शिमीका देश में सबसे काबिल और बुद्धिमान माने जाते थे। किसी ने मिकी मोंपाई को उनकी मदद लेने के लिए कहा तो बात उसकी समझ में आ गई। उसी दिन मि. निकल्सन के घर जाकर उसने सिर झुकाकर कहा, ''सर, मैं आपको एक तकलीफ देने आया हूँ।''

मि. निकल्सन मिकी को अच्छी तरह जानते थे। उससे कई बार ताले ठीक करवा चुके थे। और उन्हें यह भी पता था कि मिकी इन दिनों घड़ी बनाने की कवायद में जुटा है।

''बताओ मिकी, तुम्हें मेरी क्या मदद चाहिए?'' मि. निकल्सन ने मुसकराते हुए कहा।

''सर आपको मेरे घर चलना होगा। मैं एक मुसीबत में फँस गया हूँ। मैं शिमीका देश की पहली घड़ी बनाना चाहता हूँ और वह काफी हद तक बन भी गई है, पर एक मुसीबत आ गई है कि मेरा दिमाग चल-निकला है। सर, आपको एक बार मेरे घर आना होगा। मैं आपको सारे कलपुरजे दिखाना चाहता हूँ। आप ही बता पाएँगे कि मुश्किल कहाँ है? सर, मुझे इस मुसीबत से निकालिए।'' मिकी ने विनम्रता से सिर झुकाकर कहा।

''ठीक है, कल सुबह मैं तुम्हारे पास आऊँगा। कोशिश करूँगा कि मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ।'' मि. निकल्सन ने उसे तसल्ली देते हुए कहा।

और मि. निकल्सन अगले दिन सचमुच मिकी मोंपाई के घर पहुँचे। मिकी ने उन्हें देखा तो खुशी से विभोर हो गया। बोला, ''मि. निकल्सन, आप···आप आ गए! अब मुझे यकीन हो गया—पूरा यकीन कि मेरी घड़ी चलेगी, जरूर चलेगी। आप जब खुद चलकर यहाँ आए हैं तो अब मेरी मुसीबत जरूर टल जाएगी।''

मि. निकल्सन ने बहुत बारीकी से घड़ी के कलपुरजों को देखा। खासकर घड़ी की कमानी को, और कुछ सोचने लगे। उन्होंने उसे कई तरह से हिला-डुलाकर देखा, फिर कहा, ''लगता तो है मिकी कि समस्या कुछ समझ में आ गई है। असल में गड़बड़ कमानी में है। तुम कमानी थोड़ी बदलो···''

और उन्होंने एक डिजाइन झट कागज पर बना दिया। बोले, ''कमानी कुछ इस ढंग की रखो, तो मुझे लगता है, घड़ी नहीं रुकेगी। और हाँ, कमानी को जरा और कसना होगा। उसके सारे कस-बल निकाल देना।''

□

मिकी को तो इतनी खुशी हुई, जैसे डूबते को सहारा मिल गया हो। वह नए उत्साह से जुट गया। कमानी को सुधारने के साथ-साथ उसने कुछ और भी बदलाव किए। आखिर दो-ढाई महीने की मेहनत के बाद मिकी मोंपाई ने ऐसी घड़ी बना ली और अपनी दुकान में टाँग ली। घड़ी थी भी सुंदर, और 'टन्न' की आवाज तो ऐसी मधुर, जैसे कोई बुलबुल बोल रही हो!

सारे शिमीका में फिर से हल्ला हो गया कि मिकी मोंपाई ने तो भाई, घड़ी बना ली। बड़ी ही सुंदर घड़ी बना ली है!

और उस दिन के बाद से मिकी मोंपाई की दुकान पर बस मेला ही लगने लगा। खासकर बच्चे तो इस तरह उमड़ते कि उन्हें हटाना ही मुश्किल।

शिमीका के एक बड़े व्यापारी कारोमिन ने कहा, ''भाई मिकी मोंपाई, ऐसी एक घड़ी तो तुम हमारे लिए भी बना दो।''

मिकी मोंपाई ने कहा, ''बना दूँगा मि. कारोमिन, जरूर बना दूँगा। लेकिन देख लीजिए, पूरे पाँच सौ रुपए लगेंगे।''

कारोमिन ने फौरन सौ-सौ रुपए के पाँच नोट मिकी मोंपाई की हथेली पर रख दिए। बोले, ''ठीक है, लेकिन बनाना थोड़ा जल्दी।''

मिकी मोंपाई ने कोई महीने भर में उन्हें घड़ी बनाकर दे दी। इसके बाद तो मिकी मोंपाई के पास फरमाइशों का ढेर लग गया। शिमीका के ही नहीं, आसपास के गाँव-कस्बों के लोग भी आते और जिद करते, ''मिकी मोंपाई, पहले हमें घड़ी बना के दो।''

मिकी मोंपाई कहता, ''पहले पैसे जमा करने होंगे। जिसके पैसे पहले आएँगे, उसकी घड़ी पहले बनाकर दूँगा।''

अब तो हालत यह थी कि घड़ी के पैसे जमा कराने के लिए लोग लाइन लगाकर खड़े होते मिकी मोंपाई की दुकान के आगे। उनमें एक-से-एक अमीर लोग, बड़े-से-बड़े अफसर होते। वे आग्रह करते, ''मिकी मोंपाई, हमारी घड़ी पहले बना दो।'' पर मिकी मोंपाई सख्ती से कहता, ''जिसके पैसे पहले आएँगे, घड़ी उसी को पहले मिलेगी।''

सुनकर सब चुप रह जाते। सोचते, 'मिकी मोंपाई बात तो सही कह रहा है।'

पर कुछ दिन बाद मिकी मोंपाई इतना घमंडी हो गया कि किसी से भी सीधे मुँह बात नहीं करता था। हर किसी को फटकार देता। कहता, ''मैं कोई मामूली आदमी हूँ? मैंने घड़ी बनाई है—कोई मामूली बात है यह? कोई और बनाकर तो दिखा दे!'

हद तो तब हो गई, जब मिकी मोंपाई के बचपन के मित्र बिली गोगा ने उसे सलाह दी, ''मिकी, यह घड़ी तुमने मि. निकल्सन की मदद से बनाई है। याद करो, तुम किस मुसीबत में फँसे थे, जब उन्होंने तुम्हारी मदद की। इसलिए एक घड़ी तो तुम्हें मि. निकल्सन को उनके घर भेंट करके आनी चाहिए।''

इसपर मिकी ने कंधे उचकाकर कहा, ''हाँ-हाँ, ठीक है बिली कि उन्होंने कमानी ठीक करने का मुझे सुझाव दिया था और उससे मुझे मदद मिली। पर कमानी—सिर्फ एक कमानी ठीक करने का सुझाव मि. निकल्सन ने मुझे दिया। इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं एक घड़ी बनाकर उन्हें भेंट कर दूँ। आखिर इसमें पैसे लगते हैं भाई और बड़े-बड़े सेठ-साहूकार भी तरसते हैं कि मैं उनके लिए घड़ी बनाऊँ। कितने सारे लोग सुबह से ही मुझे दरवाजे पर हाथ बाँधे खड़े मिलते हैं। फिर भला

मैं मि. निकल्सन के लिए घड़ी कब बनाऊँ और क्यों बनाऊँ?''

यह बात सुनकर मिकी मोंपाई का दोस्त बिली गोगा तो उससे रूठा ही, और दोस्तों ने भी दूरी बना ली।

बात मि. निकल्सन तक भी पहुँची। पर सारी बात सुनी तो वे बस हँसकर रह गए। हाँ, इतना उन्होंने जरूर कहा कि कोई भी आविष्कार किसी की बपौती नहीं होता। साथ ही सुझाव दिया कि वह और लोगों को भी साथ लेकर काम बढ़ाए···और लोगों को सिखाए, ताकि हमारा शिमीका देश भी तेजी से विज्ञान की तरक्की में शामिल हो।

पर मिकी मोंपाई इतने घमंड में चूर था कि उसपर कोई असर नहीं हुआ। इस बात से मि. निकल्सन दु:खी हुए, पर उन्होंने कुछ कहा नहीं।

शहर में जिसने भी यह प्रसंग सुना, उसी ने दु:खी होकर कहा, ''अरे, यह तो ठीक नहीं। आखिर मिकी मोंपाई को क्या होता जा रहा है!'' पर मिकी तो हवा के घोड़े पर सवार था। उसे भला इन चीजों की क्या परवाह थी।

अब लोग मिकी मोंपाई से बात करने से कतराते। पर उसकी बनाई घड़ी इतनी सुंदर होती थी कि उसे लेने के लिए लोगों को उसकी दुकान पर जाना ही पड़ता था।

मिकी मोंपाई ने अब हर चीज से अपने को काट लिया। उसकी बोलचाल कस्बे में किसी से भी नहीं थी। बस, रात-दिन कमरे में बंद रहता। हर वक्त घड़ियाँ बनाता रहता।

एक-दो लोगों ने सुझाया, ''भाई मिकी मोंपाई, ऐसे कब तक चलेगा? यों घड़ियाँ बनाते-बनाते तो तुम पागल हो जाओगे। अपनी मदद के लिए एक-दो कारीगर रख लो।''

मिकी मोंपाई को डर था कि अगर कारीगर रख लूँगा तो वे घड़ी का भेद न पा जाएँगे? पर मन का यह भाव छिपाकर ऊपर-ऊपर से कहता, ''भाई, यह घड़ी बहुत नाजुक चीज है। कोई हँसी-ठठ्ठा थोड़े ही है। उसे तो कोई मिकी मोंपाई ही बना सकता है।''

सुनकर लोग चुप हो जाते। मिकी मोंपाई पर उन्हें दया आती। पर मिकी मोंपाई का घमंड तो जैसे सातवें आसमान पर पहुँच गया था।

मिकी मोंपाई ने एक बड़ी सी घड़ी बनाकर शिमीका के मुख्य चौराहे पर भी लगा दी थी। खूब ऊँचाई पर, ताकि दूर-दूर से लोगों को दिखाई दे और समय का पता चलता रहे। साथ ही उसकी कीर्ति का नगाड़ा उस घड़ी के बहाने चारों तरफ बजता रहे।

एक दिन एक छोटा सा बच्चा भागता-भागता आया। बोला, ''मिकी अंकल, तुम्हारी घड़ी तो रुक गई।''

''कौन सी घड़ी?'' मिकी मोंपाई चिल्लाया।

''अरे वही, चौराहे वाली!'' बच्चे ने जवाब दिया।

मिकी मोंपाई ने उसी समय अपने औजारों का डिब्बा उठाया और भागा चौराहे की ओर। देखा, घड़ी रुकी हुई थी और लोग उसे देख-देखकर मिकी मोंपाई पर फब्तियाँ कस रहे थे।

पर मिकी मोंपाई ने किसी की बात नहीं सुनी। सीढ़ी लगाकर सीधा घड़ी तक पहुँचा और घड़ी के पुरजे खोलकर उसे सुधारने में जुट गया।

घंटा बीता, फिर दो घंटे, चार घंटे, आठ घंटे बीत गए। पूरा दिन बीत गया, लेकिन घड़ी ठीक होने में नहीं आ रही थी। उधर लोग चिल्ला रहे थे, ''मिकी मोंपाई, यह तुम्हारे घमंड का नतीजा है। इसीलिए घड़ी चल नहीं रही।''

जब रात का अँधेरा घिर आया, तो मिकी मोंपाई ने चुपके से घड़ी उतारी और उसे कंधे पर टाँगकर घर ले आया।

□

रात भर मिकी मोंपाई घड़ी को सुधारने में जुटा रहा। आखिर यह उसकी इज्जत का मामला था। मगर घड़ी थी कि सुधर ही नहीं रही थी। मिकी मोंपाई बुरी तरह खीज गया। एक बार तो उसका मन हुआ कि हथौड़ी उठाकर घड़ी पर दे मारे और फिर सुबह होने पर एक नई घड़ी बनाकर वहाँ टाँग आए।

''क्या मैं फिर से मि. निकल्सन के पास जाऊँ? वे बुद्धिमान हैं। जरूर कोई-न-कोई रास्ता निकालेंगे। पहले भी उन्होंने ही मेरी समस्या का हल···!''

''पर जाऊँ किस मुँह से? मैंने खुद तो उनका इतना अपमान किया है। तो अब···?'' दु:खी होकर वह सोचने लगा।

''तो ठीक है, मैं खुद ही कोशिश करूँगा, खुद ही···! आखिर कुछ-न-कुछ रास्ता तो निकलेगा।'' मिकी मोंपाई ने खुद को तसल्ली देने की कोशिश की।

फिर उसने अपने आपसे कहा, ''आधी रात से ज्यादा हो चुकी है। अब सो जाना ठीक है। सुबह उठकर फिर से काम में लगूँगा। तब हो सकता है, कोई नई बात सूझ जाए।''

पर मिकी मोंपाई अभी घंटा-आधा घंटा ही सोया होगा कि उसे लगा, उसकी बाँहों पर कोई चीज उछली है। झट से उसकी नींद खुल गई। एक छोटी सी चुहिया जो किसी तरह उसकी बाँह पर चढ़ आई थी।

मिकी मोंपाई ने जोरों से हाथ झटका तो चुहिया उछली और 'धम्म' से उसी घड़ी पर जा गिरी। वह ऐन उस घड़ी की कमानी पर गिरी थी।

''ओह, सत्यानास! अब तो यह घड़ी ठीक होने से रही।'' कहते-कहते मिकी मोंपाई ने फिर से हाथ को झटक दिया, तो डर के मारे चुहिया फिर से उछली और दरवाजे के पीछे गायब हो गई।

मिकी मोंपाई को उस चुहिया पर बेहद गुस्सा आया। अभी वह उस चुहिया को मारने के लिए डंडा उठाकर दौड़ना ही चाहता था कि अचानक उसके पाँव अपनी जगह ठिठके रह गए। उसे एक सुरीली टिक-टिक-टिक की आवाज सुनाई दी।

''अरे, यह तो इसी घड़ी की आवाज है! मिकी मोंपाई ने सोचा और तेजी से घड़ी को उठाकर सीधा किया, तो देखकर हैरान रह गया कि घड़ी मजे से चल रही है—टिक-टिक, टिक-टिक···टिक!

मिकी मोंपाई तो जैसे भौचक्का रह गया। हक्का-बक्का होकर बोला, ''अरे, जिस घड़ी को ठीक करने में मैंने अपनी पूरी जान लगा दी, वह मुझसे नहीं, एक चुहिया से ठीक हुई। एक छोटी सी चुहिया से!''

मिकी मोंपाई सिर पकड़कर बैठ गया और अपने आपसे पूछने लगा, ''मैं घमंड किस बात का करता हूँ? मैं खुद को बड़ा तीस मारखाँ समझता हूँ। लेकिन यह छोटी सी चुहिया तो मुझसे भी ज्यादा होशियार निकली।''

□

अगले दिन सुबह-सुबह मिकी मोंपाई चौराहे पर घड़ी टाँगने जा रहा था तो उसकी चाल में अकड़ नहीं थी। उसने चौराहे पर खड़े लोगों को रात की घटना के बारे में बताया और कहा, ''आप लोग मुझे माफ कर दीजिए। मैं अपने को बहुत महान् समझने लगा था। सोचता था, मैंने बहुत बड़ी खोज की, इसलिए घड़ी बनाने की कला अपने तक ही रखूँगा। किसी और को नहीं पता चलने दूँगा। पर नहीं, आज मुझे अपनी गलती पता चल गई। आज से मैं घड़ियाँ बनाऊँगा नहीं, आप लोगों को घड़ियाँ बनाना सिखाऊँगा।''

फिर भीड़ में एक तरफ खड़े मि. पियरे निकल्सन दिखाई पड़े तो उनके आगे सिर झुकाकर बोला, ''मैं अपराधी हूँ सर, आप जो भी सजा देना चाहें, मुझे मंजूर है।''

''अपराधी तुम नहीं हो, मिकी। तुम तो अच्छे इनसान हो। शिमीका देश को तुमने एक बड़ी अनमोल सौगात दी है। हाँ, अपराधी तुम्हारा घमंड है, जो बिलकुल अच्छा नहीं है। विज्ञान तो एक बड़ा समंदर है। अगर कोई कुछ थोड़ा या ज्यादा

हासिल कर लेता है तो घमंड में इतराना तो अच्छी बात नहीं है। तुमसे पहले कितने लोग रहे होंगे, जिनसे तुमने सीखा और यह घड़ी बनाई। तुम्हारे बाद बहुत से लोग तुमसे सीखेंगे और इससे भी बड़े आविष्कार करेंगे। यही तो विज्ञान की प्रगति की निशानी है। दुनिया ऐसे ही आगे बढ़ती है··· !''

''सॉरी सर, सॉरी !···मैं जानता हूँ कि मैंने कितना आपका दिल दुखाया है !'' कहकर मिकी मोंपाई निकल्सन के पैरों पर गिर पड़ा।

मि. निकल्सन ने बड़े प्यार से उसे उठाया। फिर मुसकराकर बोले, ''सुनो, मिकी मोंपाई, एक बड़े मजे की बात सुनो ! घड़ी तो सचमुच तुमने बना ली। पर मैंने जिस कमानी के सुधार की बात कही थी, वह तुमसे ज्यादा एक नन्ही चुहिया ने सीख ली !''

सुनकर मिकी मोंपाई चकराया। हैरान होकर बोला, ''आप···आप क्या कह रहे हैं मि. निकल्सन ?''

''बिलकुल ठीक कह रहा हूँ··· !'' कहते हुए बच्चों जैसे सरल स्वभाव के मि. पियरे निकल्सन की दाढ़ी हौले-हौले हिल रही थी। बोले, ''मैंने तुम्हें कमानी सुधारने के लिए सुझाव दिया था। तुमने डिजाइन तो उसका सही कर दिया, पर मैंने कमानी के कस-बल अच्छी तरह निकालने के लिए कहा था, वह तुम भूल गए। और यह चीज तुमसे ज्यादा समझ में आई उस नन्ही चुहिया को। वह अनजाने में तुम्हारी घड़ी पर कूदी तो एकाएक उसके बोझ से कमानी खुद-ब-खुद खिंच गई और घड़ी चल पड़ी—टिक-टिक-टिक··· !''

सुनकर मिकी मोंपाई का मुँह खुला-का-खुला रह गया और एक पल के लिए तो उसके मुँह से एक शब्द तक नहीं निकला। यह रहस्य पहली बार उसके सामने खुला कि अनजाने में उस चुहिया के गिरने से घड़ी चल कैसे पड़ी !

□

उस दिन से मिकी मोंपाई एकदम बदल गया। उसे अपनी भूल पता चल गई थी। लिहाजा उसका घमंड तो खत्म हुआ ही, लोभ-लालच भी सदा के लिए चला गया।

और सचमुच मिकी मोंपाई ने इतने लोगों को घड़ी बनाना सिखा दिया कि शिमीका में घर-घर घड़ियाँ बनने लगीं। पूरी दुनिया में शिमीका में बनी घड़ियों की माँग होने लगी थी। और धीरे-धीरे दुनिया का एक पिछड़ा हुआ देश शिमीका तरक्की करता हुआ बड़े वैज्ञानिक-आविष्कारों का देश बन गया।

□

लो चला पेड़ आकाश में!

अज्जू को अपने पापा सुकांत भट्टाचार्य अच्छे लगते हैं और उनकी बातें भी। कई बार तो उनकी बातें इतनी अजीब होती हैं कि हँसते-हँसते अज्जू के पेट में बल पड़ जाते हैं।

ऐसा ही एक किस्सा आज हुआ।

...अज्जू के पापा दफ्तर चलने के लिए तैयार हुए ही थे कि अचानक उनके मुँह से निकला, ''सचमुच, अब तो दफ्तर पहुँचना खुद में एक आफत हो गई है। एक तो इतनी दूरी, फिर जगह-जगह ट्रैफिक जाम, धूल, धुआँ, प्रदूषण...दफ्तर पहुँचते-पहुँचते सिर चकराने लगता है।''

इसपर अज्जू की मम्मी बोली, ''आप अकेले तो हैं नहीं, सभी जाते हैं। हालात जो भी हो, अपना काम तो सभी को करना पड़ता है...'' और फिर एकाएक उनकी हँसी छूट गई। बोलीं, ''अब आपके लिए कोई उड़नखटोला तो आएगा नहीं, जो आपको सड़क के बजाय, ऊपर हवा में उड़ाकर ले जाए!''

अज्जू के पापा झूम उठे। बोले, ''वाह, क्या बात कही है तुमने! ऊपर आसमान में प्रदूषण इस धरती से तो कम ही होगा। वैसे, सच पूछो तो मेरा मन करता है, यह जो हमारे आँगन का कचनार का पेड़ है न, यही उड़कर दफ्तर चला चले और फिर दफ्तर से घर भी ले आए। बस, सारे झंझट खत्म। न डीजल-पेट्रोल के धुएँ का प्रदूषण और न ट्रैफिक जाम की किच-किच...!''

सुनते ही अज्जू के पापा के साथ-साथ, अज्जू भी, उसकी मम्मी भी हँसने लगी।

थोड़ी देर बाद अज्जू के पापा ने अपना ब्रीफकेस उठाया और दफ्तर के लिए चल पड़े।

लगभग दो-ढाई महीने तो गुजर ही गए होंगे। इसके बाद का किस्सा है।...एक

दिन सुकांत भट्टाचार्य घर से निकले ही थे कि अचानक उन्हें घर के सामने एक सुंदर, हरा-भरा, ठिगना पेड़ दिखाई दिया। वह देखकर हैरान रह गए, 'अरे, यह कहाँ से आ गया? अभी कल तक तो था नहीं।... और फिर इसके पत्ते भी कुछ अजीब हैं, तना और शाखाएँ भी। जैसे ताजा-ताजा वार्निश की गई हो। क्या चक्कर है, पेड़ असली है कि नकली?'

अभी वह इस अचरज से उबर पाते कि अचानक उन्हें आवाज सुनाई दी, ''आइए...आइए, मि. सुकांत भट्टाचार्य, आइए!''

''अरे, यह कौन है, जो मुझे मेरे नाम से पुकार रहा है, पर दिखाई नहीं दे रहा है।'' सुकांत बाबू चकित होकर इधर-उधर नजर घुमा रहे थे। तभी उन्हें तेज, 'खिल-खिल' सुनाई दी। आवाज पेड़ के भीतर से आ रही थी।

''क्या सचमुच यह पेड़ ही बोल रहा है?'' सुकांत भट्टाचार्य की हैरानी कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही थी।

''हाँ-हाँ, मैं पेड़ ही बोल रहा हूँ कि सुकांत भट्टाचार्य!...मैं!''

''तुम!...'' सुकांत भट्टाचार्य की आँखें अचरज से फैल गईं।

''हाँ...मैं आपको दफ्तर पहुँचाऊँगा। आप उस दिन कह रहे थे न, कि काश, पेड़ ही उड़कर मुझे दफ्तर पहुँचा देता तो...!''

''हाँ-हाँ, मगर...!'' सुकांत बाबू समझ नहीं पा रहे थे कि क्या कहें।

''अगर-मगर कुछ नहीं। आप बिलकुल निश्चिंत होकर बैठिए। बस, अभी कुछ ही देर में आप अपने दफ्तर के सामने होंगे।''

''मगर बैठूँगा कहाँ?...'' सुकांत भट्टाचार्य अभी यह सोच ही रहे थे कि अचानक पेड़ का ऊपरी हिस्सा हिला। देखते-ही-देखते उसके भीतर बैठने की आरामदायक सीट नजर आने लगी और सीढ़ियाँ भी। जैसे ही सुकांत भट्टाचार्य सीढ़ियों पर चढ़कर बैठे, पेड़ फिर पहले जैसा हो गया। और फिर अचानक उड़ने लगा।...वाकई!

सुकांत बाबू दिल थामकर बैठे थे कि पता नहीं, उनके साथ क्या होनेवाला है, क्या नहीं! कहीं यह पेड़ उन्हें उड़ाकर किसी ऐसी जगह ले गया कि...

पर पेड़ शायद सुकांत भट्टाचार्य के दिल की हालत समझ रहा था। बोला, ''आराम से बैठिए मि. सुकांत, आराम से...! चिंता छोड़कर और यात्रा का आनंद लीजिए।''

सुकांत भट्टाचार्य को अब थोड़ी तसल्ली मिली। सोचने लगे—रास्ता काटने के लिए इस पेड़ से ही दो बातें करें। उन्होने पूछा, ''क्यों भई पेड़, यह माजरा क्या

है? तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो और फिर तुम्हें पता कैसे चला मेरे नाम का?''

पेड़ हँसा, ''घबराइए नहीं मि. सुकांत, मैं आपको आपके दफ्तर ही ले जाऊँगा, कहीं और नहीं। दिनभर आपका इंतजार करूँगा, ताकि शाम को आपको वापस घर ले आऊँ।··· और जहाँ तक सवाल इस बात का है कि मैंने आपको पहचाना कैसे तो इसका जवाब तो यह है कि मुझे अच्छी तरह आपकी तसवीर दिखाकर मेरी मैमोरी में 'फीड' कर दी गई थी। फिर भला मैं आपको कैसे न पहचानता?''

पेड़ की बात शायद ठीक हो, पर सुकांत बाबू पसोपेश में थे। उन्हें अब भी माजरा समझ नहीं आ रहा था।

उधर पेड़ वाकई उड़ रहा था और काँच की एक छोटी सी खिड़की से नीचे के दृश्य साफ नजर आ रहे थे। थोड़ी ही देर में सुकांत भट्टाचार्य को अपने दफ्तर की मल्टीस्टोरी बिल्डिंग 'आकाशमेघ' नजर आने लगी।

'आकाशमेघ' के नजदीक आते ही, सचमुच पेड़ नीचे उतरने लगा। बिल्डिंग के गेट के पासवाले लॉन में वह उतरा। फिर पेड़ का ऊपरी हिस्सा खिसका। सुकांत बाबू बाहर आए, तो पेड़ फिर एकदम पेड़ की तरह उस लॉन पर जम गया।

सुकांत बाबू ने अचरज से उसे देखा और फिर दफ्तर की ओर चल पड़े।

चलते हुए एकाएक न जाने क्या सोचकर उन्होंने पीछे देखा। पेड़ हँस रहा था। बोला, ''शाम को आप कितने बजे आएँगे मि. सुकांत? मैं आपका इंतजार करूँगा।''

''छह बजे!'' सुकांत भट्टाचार्य ने कहा और तेज कदमों से अपने दफ्तर की ओर बढ़ गए।

: 2 :

दफ्तर पहुँचकर सुकांत काम में जुट गए। पर जाने क्यों उड़नेवाला पेड़ उन्हें चैन नहीं लेने दे रहा था। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था, आज सुबह उनके साथ जो कुछ घटा है, वह असलियत है या सपना?

'अगर मैं किसी को यह बताऊँ कि आज सुबह मैं बस से नहीं, उड़नेवाले पेड़ पर बैठकर दफ्तर आया, तो वह मुझे पागल समझेगा।' सोचते-सोचते उन्हें हँसी आ गई। उन्हें यों बेबात हँसते देख, उनके एक साथी ने पूछा, ''मि. सुकांत, क्या बात है, कोई मजेदार वाकया याद आ गया क्या?''

सुनकर सुकांत बाबू सकपकाए। फिर अगले ही पल मुसकराते हुए बोले, ''कुछ नहीं, कुछ भी तो नहीं। बस, ऐसे ही एक छोटी सी बात···!''

पर शाम को छह बजे सुकांत भट्टाचार्य दफ्तर से निकले तो उनका मन थोड़ा डरा हुआ था। सुबह तो यात्रा ठीक-ठाक रही, पर अब तो कुछ-कुछ अँधेरा सा छा

गया है। कहीं कुछ गड़बड़ हो गई तो?

अलबत्ता छह बजे उनके पैर उसी पेड़ की दिशा में बढ़े। जैसे ही वे पेड़ के पास पहुँचे, पेड़ ने मुसकराते हुए कहा, ''आइए मि. सुकांत, मैं आपका इंतजार ही कर रहा था।''

और फिर उसी तरह सुकांत बाबू पेड़ के भीतरवाली सीट पर आराम से बैठे और वापसी की यात्रा शुरू हुई। रास्ते में उन्होंने पेड़ से उस कंप्यूटर इंजीनियर का नाम पूछा, जिसने जादू की तरह यह नायाब खोज कर डाली। इसपर पेड़ का जवाब था, ''सुनील···सुनील अमरापुरकर। आपके बेटे अज्जू का वह दोस्त है। शायद उसी का मन रखने के लिए मि. सुनील ने यह अनोखा यंत्र बनाया। यों भी सुनील साहब अज्जू को बहुत प्यार करते हैं।''

एक क्षण रुककर पेड़ ने बताया, ''शायद आपके बेटे अज्जू ने ही बातों-बातों में उसे यह आइडिया दिया। और मेरे रचनाकार ने, जो एक अद्‌भुत कंप्यूटर इंजीनियर होने के साथ-साथ गहरी सूझवाले शख्स हैं, मुझे रच डाला। उन्होंने अपने सॉफ्टवेयर के जरिए मुझे ऐसा मस्तिष्क दिया, जिससे मैं आपकी सारी बातें समझकर उनका जवाब दे सकूँ।''

''मगर भई,'' सुकांत बाबू बोले, ''तुम्हारी भी तो कोई जरूरत होगी?''

''कुछ खास नहीं।'' पेड़ हँसा, ''बस, सप्ताह में आपको एक बार मेरी बैटरी को चार्ज करना होगा। आप चाहें तो हर इतवार को कर सकते हैं। आपकी छुट्टी भी रहती होगी उस दिन···''

''हाँ, यह ठीक है।'' कुछ सोचते हुए सुकांत बोले। इतने में काँच की गोलाकार खिड़की से उन्हें अपना घर दिखाई दिया। हैरान होकर बोले, ''अरे, घर आ गया, इतनी जल्दी! बातों-बातों में कुछ पता ही नहीं चला।''

उस दिन सुकांत बाबू पेड़ को 'बाय-बाय' करके घर गए, तो एकदम हलके-फुलके थे। पहले जब दफ्तर से आते थे, तो थककर सोफे में धँस जाते थे। खाना खाकर लेटते ही खर्राटे भरने लगते थे। पर आज उन्होंने चाय पी, फिर कई दिनों से टलते आ रहे कुछ जरूरी कामों को निबटाया। मित्रों को चिट्ठियाँ लिखीं। इशारों-इशारों में उन्हें उड़नेवाले अनोखे पेड़ के बारे में लिखा, पर पूरी बात टाल गए।

बहुत देर से अज्जू नोट कर रहा था कि पापा आज बहुत खुश हैं। बोला, ''पापा, आज कोई खास बात है? आज आप बहुत खुश हैं, आपकी आँखों की चमक बता रही है।''

इसपर सुकांत बाबू ने अज्जू और उसकी मम्मी को विज्ञान के उस अद्‌भुत

करिश्मे के बारे में बताया, जो उड़नेवाले पेड़ के रूप में उन्हें घर से दफ्तर और दफ्तर से घर लाया था। और···

''अरे पापा!'' अज्जू को एकाएक कुछ याद आया। बोला, ''एक दिन मैंने सुनील भैया को यह आइडिया बताया तो था। आप जानते हैं न, वही सुनील अमरापुरकर, जो एक-दो बार अपने घर भी आए हैं···और वे 'न्यू साइंस होराइजन' नाम की सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करते हैं···पर वे इतनी जल्दी उसे असली जामा पहना देंगे, यह तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।''

''हुआ यह कि एक दिन आपने कहा था न, कि काश, यह पेड़ ही उड़कर मुझे दफ्तर पहुँचा देता! तो आपकी बात सुनकर मुझे बड़ा मजा आया।'' अज्जू चहककर बोला, ''बस पापा, यही बात मैंने सुनील भैया को बताई, तो वे उछल पड़े।'' बोले, ''आइडिया···बेहतरीन आइडिया! अभी तक तो मैंने यह सोचा ही नहीं था, पर उड़नेवाला पेड़ तो बन सकता है। मैं बनाकर दिखाऊँगा।···और आज सचमुच बना ही दिया उन्होंने।''

उस दिन मि. सुकांत अपनी स्टडी में देर तक बैठकर कंप्यूटर के आविष्कार और उसके कारनामों पर लिखी गई पुस्तकें पढ़ते रहे। इंटरनेट से भी बहुत सी सामग्री उन्होंने 'डाउन लोड' कर ली थी। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जो पेड़ उन्हें घर से दफ्तर और दफ्तर से घर लाया था, वह भी एक किस्म का रोबोट ही था! यह बात खुद में उन्हें दिलचस्प लगी कि रोबोट की कल्पना सबसे पहले एक लेखक ने की थी, जिसने अपने उपन्यास में इसका जिक्र किया था। बाद में न सिर्फ उसकी कल्पना साकार हुई, बल्कि उसी का दिया नाम 'रोबोट' भी चल निकला।

: 3 :

उस रात सुकांत सोए, तो पूरी रात उन्हें चलने-फिरने और उड़नेवाले रोबोटों के ही सपने आते रहे। वह एक ऐसी निराली दुनिया में पहुँच गए थे, जो जादू-मंतर से भी ज्यादा करिश्माई थी। अगले दिन सुकांत दफ्तर के लिए निकले तो घर के बाहर वही पेड़ नजर आया। बोला, ''गुड मॉर्निंग मि. सुकांत! उम्मीद है, आपकी रात अच्छी गुजरी होगी!''

''हाँ बिलकुल!'' सुकांत बाबू बोले, ''बल्कि सच तो यह है कि मैं रात भर लगातार तुम्हारे बारे में सोचता रहा। मुझे ताज्जुब इस बात का है कि तुम एकदम आदमियों की तरह सोच भी लेते हो।''

''यह कमाल मेरा नहीं, सुनील अमरापुरकर का है मि. सुकांत। उन्होंने इतना विकसित सॉफ्टवेयर मुझमें डाला है कि मैं न सिर्फ आदमी की तरह आपसे बात कर

सकता हूँ, बल्कि आपकी भावनाएँ भी महसूस कर सकता हूँ।''

''इसका मतलब तो यह हुआ न कि जो सॉफ्टवेयर तुममें डाला गया है, वह एकदम आदमी के मस्तिष्क से मिलता-जुलता है?''

''हाँ, मि. सुकांत भट्टाचार्य, मैं पेड़ और आदमी एक साथ हूँ। सोचने-समझने में आदमी, लेकिन काम करने में पेड़···!''

''वह कैसे?···'' सुकांत चौंके।

''आसान सी बात है मि. सुकांत। जरा सोचिए, आज आप लोग इतने भयानक प्रदूषण के शिकार क्यों हुए?'' पेड़ बोला, ''इसीलिए न कि आज पेड़ काटे जा रहे हैं। पेड़ एक ऐसा बहादुर सैनिक है, जो दिन भर प्रदूषण से लड़ता है। कार्बन डाई ऑक्साइड सोखता है, ऑक्सीजन छोड़ता है···और यही काम मैं भी करता हूँ।''

''क्या सचमुच?'' सुकांत को यकीन नहीं आ रहा था।

''जी हाँ, सचमुच!'' पेड़ बोला, ''मेरे भीतर इस तरह का यंत्र है, जो निरंतर कार्बन डाई ऑक्साइड सोखता है। उसमें से कार्बन अलग होकर एक जगह जमा होता रहता है। ऑक्सीजन धीरे-धीरे बाहर निकलती रहती है। तभी तो आपने नोट किया होगा कि कल आपके दफ्तर के पास प्रदूषण काफी कम था—मेरे कारण।''

''अरे वाह! यह तो मैंने सोचा ही नहीं था।''

सुकांत बाबू को हैरान देख, पेड़ हँसा। बोला, ''अरे, आप इतने चकित क्यों हो रहे हैं? भूलिए नहीं कि मैं एक पेड़ हूँ और पेड़ का काम तो प्रदूषण से लड़ना ही है।''

''तो क्या तुममें पेड़ के और भी गुण है?''

''हाँ, क्यों नहीं!···मेरी पत्तियों में भी क्लोरोप्लास्ट है, जिसमें क्लोरोफिल रहता है। उसी से इन पत्तियों का रंग इतना हरा है।''

'ओह! ऐसा अद्‌भुत साइंटिस्ट है सुनील अमरापुरकर। मैंने तो यह सोचा ही नहीं था।' सुकांत सोच रहे थे।

उसी शाम को सुकांत भट्टाचार्य के पत्रकार मित्र दिवाकर द्विवेदी दफ्तर में आए। सुकांत बाबू ने उन्हें उड़नेवाले पेड़ के बारे में बताया, तो वे उछल पड़े।

''अरे मि. भट्टाचार्य, आपने अभी तक बताया क्यों नहीं? चाहो तो, मैं इसे कल के अखबार की मेन स्टोरी बना सकता हूँ। बोलिए, ठीक रहेगा न? कोई छोटा-मोटा कमाल तो यह है नहीं। समझिए कि कल को यातायात-क्रांति हो सकती है इससे! कौन है यह इतना परफैक्ट साइंटिस्ट? जरा मुझे उससे मिलवाइए तो!···जल्दी!''

और उस शाम, उस उड़नेवाले पेड़ से अकेले सुकांत नहीं, उनके पत्रकार मित्र

दिवाकरजी ने भी यात्रा की।

कैलाश हिल कॉलोनी पहुँचकर सीधे वे दोनों सुनील के घर गए। सुनील अभी दफ्तर से लौटा ही था। सुकांत अंकल को अचानक आया देख, वह हैरान हो गया।

सुकांत बाबू ने अपने साथ आए पत्रकार दिवाकर द्विवेदी का परिचय कराया। बोले, ''सुनील, ये हैं 'नेशनल टाइम्स' के विशेष संवाददाता। तुमसे इंटरव्यू करने आए हैं, ताकि तुम्हारी आश्चर्यजनक खोज सारी दुनिया के आगे···''

सुनते ही सुनील सकुचा गया। बोला, ''यह तो मेरा नहीं, अज्जू का कमाल है। उसने यह आइडिया मेरे सामने इस ढंग से रखा कि मैं सोचे बिना रह ही नहीं सका। और अचानक यह पेड़ बन गया···उड़नेवाला पेड़!''

दिवाकरजी ने पूछा, ''तब तो सुनील बहुत जल्दी हमारे यहाँ यातायात-क्रांति हो सकती है। तुम बताओ, ये उड़नेवाले पेड़ बहुत अधिक सस्ते और बहुतायत में नहीं बन सकते? और इनके लिए आकाश में ट्रैक तथा सिगनल भी बनाने होंगे, ताकि ये एक-दूसरे से टकराएँ नहीं। आसमान में उड़नेवाले विमान या हेलीकॉप्टर से ये न टकराएँ, इसका भी कोई इंतजाम···''

इसपर सुनील ने विस्तार से सारी बातें बताईं। यह भी बताया कि इस उड़नेवाले पेड़ से लगातार ऐसे सिगनल निकलते हैं, जिससे इसकी पहचान हो जाती है और अनचाही दुर्घटना की आशंका नहीं रहती।

''अच्छा, उड़ते हुए पेड़ को देख, लोग चौंके नहीं?'' दिवाकर द्विवेदी ने अचानक सुकांत बाबू से पूछ लिया। पर जवाब दिया सुनील अमरापुरकर ने। बोला, ''यह पेड़ खासा इंटेलीजेंट है। यह जानता है कि कब इसे अदृश्य हो जाना है और कब इसे दिखाई देना है। ज्यादातर समय तो यह अदृश्य होकर ही प्रदूषण दूर करने के अपने काम में जुटा रहता है।''

दिवाकर द्विवेदी ने जल्दी-जल्दी कुछ और भी सवाल किए और उनके उत्तर अपनी डायरी में दर्ज कर लिये। फिर घर जाकर अपने कंप्यूटर से झटपट इ-मेल किया, पूरी खबर विस्तार से लिख भेजी।

: 4 :

और सचमुच अगले दिन 'नेशनल टाइम्स' में यह पूरी स्टोरी मोटे-मोटे अक्षरों में खूब विस्तार से छपी थी। सुनील के बड़े से चित्र के साथ उसके आविष्कार का जिक्र था। एक दिन सुबह-सुबह सुकांत भट्टाचार्य के घर, जो किस्सा हुआ था, और अचानक उड़ते हुए पेड़ की चर्चा चल निकली थी, खबर में उनकी भी चर्चा

थी। फिर सुनील का यह वक्तव्य भी छपा था कि मेरे इस आविष्कार का किस्सा बड़ा मजेदार है। कुछ रोज पहले मेरे एक नन्हे दोस्त अज्जू ने बताया कि 'भैया, आज हमारे घर में बड़ा मजेदार किस्सा हुआ। पापा उड़नेवाले पेड़ पर बैठकर दफ्तर जाना चाहते थे।' उसने पूरी बात बताई तो मैं चीख उठा, 'आइडिया···आइडिया···!' तभी मैंने सोचा कि उड़नेवाला पेड़ बनाना है···बनाकर दिखा देना है। और आज सचमुच वह बन गया। मुझे खुशी है कि इससे औरों को भी खुशी मिली। इसमें कुछ कमियाँ भी हो सकती हैं, पर वे आगे ठीक कर ली जाएँगी।''

पूरी बात लिखकर 'नेशनल टाइम्स' के विशेष संवाददाता ने अपनी यह टीप भी लिखी कि पुरानी कहावत है—'आवश्यकता आविष्कार की जननी है।' हो सकता है कि आगे हेलीकॉप्टरों और हवाई जहाजों की तरह उड़ते हुए पेड़ों का भी जमाना आ जाए और उसे रोबोटों की दुनिया में एक नए और चमत्कारी आविष्कार की तरह देखा जाए।···क्योंकि यह उड़ता हुआ पेड़ कुछ और नहीं, आनेवाली सदी का रोबोट-यान ही है, जो हो सकता है, बाईसवीं सदी में घर-घर दिखाई दे।

सुबह का अखबार पढ़ते हुए सुकांत भट्टाचार्य ने उमंग से भरकर कहा—''और अज्जू, इस महान् आविष्कार का श्रेय तुम्हारी मम्मी को जाता है!···''

''जी हाँ, न मैं उड़नखटोला की बात करती और न यह बनता। लीजिए, अब खाइए गरम-गरम गुलाबजामुन, अभी-अभी मैंने घर में ही बनाए हैं।'' अज्जू की मम्मी हँसकर बोलीं।

इतने में सुनील भी वहाँ आ गया तो अज्जू बोला, ''पापा, सुनील भैया···!''

''लो आ गए, रोबोट की दुनिया के नए हीरो···लो, खाओ गुलाबजामुन और हमारे साथ सेलिब्रेट करो।''

सुनील ने मुसकराते हुए गुलाबजामुन उठाकर मुँह में डाल लिया। फिर बोला, ''यह तो मुझे पता था कि मेरा यह काम चर्चा में आएगा, पर यह नहीं पता था कि इसकी इतनी धूम मच जाएगी। और अब तो मुझे लगता है, मेरी बाकी जिंदगी उड़ते हुए पेड़ों को बनाने में ही खर्च होगी!''

''हाँ भैया, आप बाकायदा इसकी एक नई फैक्टरी खोल लीजिए। नाम रखिए सुनील अमरापुरकर के उड़ते हुए पेड़!'' अज्जू ने कहा, तो सभी एक साथ ठहाका मारकर हँस पड़े।

□

अनोखी चिड़िया 'शिंगाई फू शुम्मा'

नील ने अपनी प्रिय किताब 'वंडर्स ऑफ साइंस' बंद की और फिर आँखें बंद करके सोचने लगा। अभी-अभी उसने अनोखी साइंस फैंटेसी लेखिका एली मून का लिखा विचित्र वृत्तांत पढ़ा था—'शिंगाई फू शुम्मा।' यह शिंगाई फू शुम्मा नाम की चिड़िया का बड़ा ही दिलचस्प किस्सा था, जो आकाश में उड़ती थी तो उसका आकार बड़ी तेजी से बढ़ने लगता था, चाल एकाएक आँधी-तूफान सरीखी हो जाती थी, फिर तमाम अजूबे देखने को मिलते। और वह बोलती भी थी। भले ही हमारी तरह न बोलती हो, पर उसके शरीर से विचित्र रेडिएशंस निकलते थे, जिनसे लगता था, उसकी बात हमारे कानों तक पहुँच रही है और हमारी बात बड़ी अच्छी तरह वह सुन और समझ रही है। यहाँ तक कि मनुष्यों की तरह वह खुदर-खुदर हँसती भी थी।

एली मून के इस विचित्र वृत्तांत में से जादूगर की पोटली की तरह, मन को हैरान करनेवाले किस्सों पर किस्से निकलते जा रहे थे और नील अवाक्।

''शिंगाई फू शुम्मा···! ओह, कितना अजीब नाम है और किस्से तो उससे भी अजीब। क्या सचमुच ऐसी चिड़िया होती होगी? कल्पना करना ही मुश्किल है।'' नील ने सोचा, ''पर एली मून का तो कहना है कि उसने ऐसी चिड़िया को वाकई देखा है, खुद अपनी आँखों से और उसके साथ सारी दुनिया की सैर करके लौटी है। उसने अपनी उन हैरतअंगेज यात्राओं का पूरा हाल भी लिखा है।''

''यह कैसे हो सकता है, कैसे?'' नील अब भी आँखें बंद करके उसी अद्‌भुत विज्ञान फंतासी की दुनिया में गोते खा रहा था, जिसका शीर्षक था—'शिंगाई फू शुम्मा।'

पढ़ते समय हैरानी के मारे उसके दिल की धड़कनें बढ़ गई थीं। उसे पूरी तरह यकीन नहीं हो रहा था कि सचमुच ऐसी कोई चिड़िया भी हो सकती है।

लेकिन एली मून ने तो अपनी इस विचित्र विज्ञान-कथा के साथ शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया का बड़ा सा, सुंदर चित्र भी दिया था, जिसे उसने खुद वाटर-कलर्स से बनाया था।

''लेकिन चित्र ही क्यों? फोटो क्यों नहीं?'' नील के मन में फिर से उधेड़-बुन शुरू।

पर कुछ आगे चलकर एली मून ने खुद इस बारे में लिखा और वह भी कम हैरतअंगेज न था। एली मून ने लिखा कि उसने शिंगाई फू शुम्मा का फोटो लेने की बहुत कोशिश की। काफी देर तक उसने मोबाइल से उसके चित्र लिये भी। उस समय की उसकी प्रसन्नता और उत्तेजना का ठिकाना न था। पर घर आकर देखा तो उसके उत्साह पर घड़ों पानी पड़ गया। रंग-बिरंगी खूबसूरत चिड़िया शिंगाई फू के वे सारे कमाल के चित्र पता नहीं, किस जादू से उड़ चुके थे।

आगे उसने पूरा किस्सा लिखा था। असल में हुआ यह कि एली मून अपना मोबाइल मेज पर रखकर माथा पकड़े अभी इस अजूबे के बारे में सोच ही रही थी कि फोटो अचानक कहाँ चले गए। तभी उसे फिर वह अद्‌भुत चिड़िया शिंगाई फू शुम्मा नजर आई। और उसका ध्यान इस बात पर गया कि वह अनोखी चिड़िया हँस रही है। एली हैरान थी कि ''अरे, यह विचित्र चिड़िया हँस क्यों रही है?''

इसपर शिंगाई फू शुम्मा ने कहा, ''सुनो एली मून, तुम मुझे कैमरे में कैद नहीं कर सकतीं। कोई नहीं कर सकता। हाँ, बना सको तो मेरा एक सुंदर चित्र बनाओ। जो कुछ तुमने देखा और मेरी जो छवि तुम्हारे मन में है, उसे कागज पर उतारो।''

''चित्र···? मैं···? पर मैं तो कोई चित्रकार नहीं। एली मून कुछ और कहती, इसपर शिंगाई फू शुम्मा ने कहा, ''बनाओ, तुम बना सकती हो।''

कहकर वह झट उड़ गई।

एली मून ने आगे लिखा, ''और फिर आखिर मैंने उस विचित्र चिड़िया को जिस रूप में देखा और मेरे मन में उसकी जो सुंदर छवि थी, उसे कागज पर उतारने की कोशिश की। मैं कोई बहुत अच्छी चित्रकार तो नहीं हूँ। हाँ, बचपन में जरूर बच्चों की तरह मैं भी चित्र बनाया करती थी। पर तब से तो एक लंबा अरसा हो गया। मैंने हाथ में ब्रश कभी पकड़ा ही नहीं। लेकिन चित्र तो बनाना ही था। हर हाल में। उस अनोखी चिड़िया का चित्र बनाए बगैर मैं रह ही नहीं सकती थी। और एकाएक पड़ोस के एक बच्चे के रंग और ब्रश लेकर मैंने उसी समय चित्र बनाना शुरू कर दिया।

''चित्र ज्यादा अच्छा नहीं बना। पर मेरे भीतर इतनी ज्यादा बेसब्री थी कि मैंने

कोई सौ चित्र बनाए होंगे। फिर उन्हें एक-एक करके देखा तो इस चित्र पर नजर अटक गई। मन ने कहा, सुनो एली मून, बस, यही है उस सुंदर चिड़िया का सबसे सुंदर और सजीव चित्र। और उसी को मैं अपने पाठकों के लिए पेश कर रही हूँ, ताकि वे कल्पना कर सकें कि कितनी अद्‌भुत और मनोहारी थी—शिंगाई फू शुम्मा, जिसे मैंने बहुत नजदीक से देखा, जिससे खूब ढेर सारी बातें कीं और जिसके पंखों पर बैठकर सारी दुनिया की सैर करके लौट आई।''

□

''अद्‌भुत···सचमुच अद्‌भुत!'' नील अभी तक शिंगाई फू शुम्मा की कल्पना में खोया हुआ था। सिर पर नीले रंग का खूबसूरत मुकुट, सात रंग के पंख, चोंच सुनहरी और आँखों में एक खास तरह की चमक, जिससे पता चलता था कि यह चिड़िया उतनी भोली नहीं है कि किसी के जाल में फँस जाए। यह मानो दुनिया के बारे में बहुत कुछ जानती है और हमारे दिलों को अंदर तक पढ़ रही है।

नील इन्हीं विचारों में गुम था और सोच रहा था, ''काश, मैं भी मिल पाता इस अद्‌भुत चिड़िया से और मशहूर लेखिका एली मून की तरह दुनिया को बता पाता कि हाँ, यह झूठ नहीं। वाकई धरती पर है ऐसी चिड़िया और मैंने खुद अपनी आँखों से देखी है।''

कुछ देर बाद नील ने आँखें खोलीं तो अचरज के मारे चीख पड़ने को हुआ।

अरे, यह क्या? अभी-अभी जिस शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया के बारे में उसने किताब में पढ़ा था, वह अब उसके सामने बैठी फुदक रही थी। एकदम सामने, हू-ब-हू वही सात रंग की चिड़िया। सिर पर बड़ा सा नीला मुकुट, बड़े-बड़े सुंदर पंख और आँखों में कुछ अलग सी चमक।

शिंगाई फू शुम्मा उसके इतने पास थी कि वह चाहता तो उसे हाथ बढ़ाकर पकड़ सकता था। फिर भी उसने अपने आपको यकीन दिलाने के लिए पूछा, ''तुम क्या शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया हो?''

''हाँ-हाँ, क्यों! यकीन नहीं आता?'' कहकर शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया ने खुशी के मारे अपनी पूँछ हिलाई और मुसकराने लगी।

''तो क्या तुम भी किताब की तरह मुझे सात रंगों के उस लोक 'मिलिनारा' में ले जाओगी, जहाँ सुना है कि दुनिया के सबसे बुद्धिमान और विकसित प्राणी मिंपी रहते हैं? मैंने किताब में पढ़ा है कि विज्ञान और तकनीक में वे मनुष्यों की दुनिया से हजारों साल आगे हैं और कभी-कभी धरती पर भी घूमने आते हैं। पर यहाँ के लोगों को वे ज्यादा पसंद नहीं करते।''

सुनकर शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया उदास हो गई। बोली, ''तुम ठीक कह रहे हो नील। पर अफसोस, मिंपी नाम के वे बुद्धिमान प्राणी तो अब वहाँ नहीं रहते। हाँ, वह सात रंगों की दुनिया तो अब भी है और पहले जैसी ही सुंदर है। क्या तुम उसे देखना चाहोगे?''

''वाह! क्यों नहीं! नेकी और पूछ-पूछ।'' कहकर नील उछल पड़ा।

''तो फिर बैठो मेरे पंखों पर!'' शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया बोली।

''पर···तुम तो छोटी सी हो। बहुत छोटी सी, शिंगाई फू।'' नील के मुँह से निकला, ''फिर मैं बैठूँगा कैसे?''

हालाँकि कहते ही उसे अपनी गलती पता चल गई। एली मून ने तो कितने अच्छे ढंग से लिखा था कि शिंगाई फू शुम्मा जैसे ही आसमान में उड़ती है, उसका आकार तेजी से बढ़ता जाता है और वह किसी छोटे-मोटे हवाई जहाज सरीखी लगती है।

शायद इसीलिए वह रहस्यमय चिड़िया अब मुसकरा रही थी। नील को बड़ा अचरज हुआ, शिंगाई फू शुम्मा की मुसकान ऐसी ही थी, जैसे आदमी हँसते और मुसकराते हैं।

''चिंता मत करो, तुम बैठो तो सही!'' रहस्यपूर्ण चिड़िया शिंगाई फू शुम्मा ने कहा और नील के बैठते ही वह उड़ने लगी आसमान में। ऊपर, बहुत ऊपर। उसकी चाल इतनी सधी हुई थी कि लगता था, अपनी मंजिल का उसे बहुत अच्छी तरह पता है और वह तीर की तरह एक निश्चित गति से, निश्चित दिशा की ओर बढ़ रही है।

आश्चर्य! जैसे-जैसे शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया आसमान में ऊपर उठती जाती, वह बड़ी होती जाती। और होते-होते वह इतनी बड़ी हो गई कि जैसे वह चिड़िया न हो, सात रंगों का इंद्रधनुषी यान हो। नील को लगा, अरे वाह! मैं तो सचमुच सात रंग के इंद्रधनुष पर सवार होकर उड़ रहा हूँ। ऐसा तो मैं कभी सोच भी नहीं सकता था।

उड़ते-उड़ते शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया नील को एक ऐसे लोक में ले आई, जहाँ सात रंगों का अजब नजारा था। वहाँ सात रंग के सुंदर फूल खिले थे। दूर-दूर तक बर्फ से ढके पहाड़-ही-पहाड़, जिनसे सतरंगा प्रकाश निकल रहा था। पेड़ों पर सात रंग के पत्ते। यहाँ तक कि वहाँ की जमीन भी सतरंगी थी।

देखकर नील खुश, बहुत खुश। वह जैसे खुशी से भरकर चीख पड़ा, ''अरे वाह, मैं मिलिनारा में पहुँच गया! यह तो सचमुच सतरंगी दुनिया है। इतने अच्छे,

इतने प्यारे रंग तो मैंने कहीं और देखे ही नहीं।''

''हाँ नील, बहुत सुंदर है यह देश और दुनिया के सबसे बुद्धिमान प्राणियों मिंपी लोगों ने बड़े प्यार से इसे बसाया था। सतरंगे पहाड़ों, पेड़-पौधों और सतरंगी धरतीवाली यह सृष्टि उनकी अनोखी तकनीक का ही कमाल है। लेजर किरणों से वे जैसा चाहें, वैसा आभास उत्पन्न कर सकते हैं। यही इन सतरंगे पहाड़ों और सतरंगी धरती का रहस्य है। इसी तरह पर्यावरण की रक्षा के लिए उन्होंने एक अजब तरीका अपनाया। यहाँ शहर इस तरह बसाए गए कि हर शहर फूलों का शहर था। हर शहर गोलाई में बसा था और लोगों के घरों के साथ-साथ बसी थीं फूलों की घाटियाँ। जहाँ उद्योग लगाए गए, वहाँ भी चारों ओर हरियाली की कतारें। कूड़े और फालतू चीजों से बिजली पैदा करने के यंत्र बनाए गए, जिससे कहीं प्रदूषण न फैले।''

सुनकर नील हैरान था। सोच रहा था, ''अरे, धरती पर तो हम इन चीजों को अभी सपने की तरह देखते हैं। पर मिंपी लोगों ने अपनी बुद्धिमत्ता और अजब सी धुन से इन्हें हकीकत में बदल दिया। आश्चर्य!''

फिर उसने पूछा, ''प्यारी शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया, यह तो तुमने बताया नहीं कि यहाँ जो बुद्धिमान मिंपी लोग रहते थे, वे अब कहाँ चले गए? इतने सुंदर देश मिलिनारा को उन्होंने छोड़ क्यों दिया? वे अब हैं भी या नहीं?''

''हैं क्यों नहीं?'' शिंगाई फू शुम्मा बोली, ''पर अब वे ऊपर, और भी ऊपर चले गए हैं। एक दूसरी ही दुनिया में। वह इससे भी सुंदर दुनिया है, सुइनारा। पर वहाँ मैं तुम्हें नहीं ले जा सकती।''

''क्यों शिंगाई फू? क्या मैं उन बुद्धिमान प्राणियों से मिल नहीं सकता? मैं असल में मिंपी लोगों से पूछना चाहता हूँ कि इतनी सुंदर सतरंगी दुनिया छोड़कर क्यों चले गए?'' नील ने हैरान होकर पूछा।

''जाना तो वे नहीं चाहते थे।'' शिंगाई फू शुम्मा ने दुःखी होकर कहा, ''पर यहाँ लालची लोग आने लगे थे। कुछ ने यहाँ की दौलत पर कब्जा करने की कोशिश की। कुछ यहाँ के फूल-पत्तों को नोचकर अपने साथ ले गए और यहाँ प्रदूषण फैलाने लगे। कुछ ने मिलिनारा के उन बुद्धिमान प्राणियों से इतने बुरे ढंग से बातें कीं कि वे दुःखी और परेशान हो गए। लूटपाट और तोड़फोड़ करनेवाले अपराधी भी आने लगे। आखिर मिलिनारा के प्रधानमंत्री ने सोचा, यह स्थान हमें छोड़ना ही पड़ेगा। इसके बाद उन्होंने अपने लिए एक और सतरंगी दुनिया बसा ली, इससे भी सुंदर, जहाँ मनुष्यों का पहुँचना बहुत मुश्किल है!'' शिंगाई फू शुम्मा ने बताया।

''तो क्या मैं उनसे कभी नहीं मिल सकता, कभी नहीं?'' नील कुछ निराश होकर बोला।

''मिल क्यों नहीं सकते? जरूर मिल सकते हो, पर पहले मुझे उन लोगों से इजाजत लेनी होगी, क्योंकि वे पसंद नहीं करते कि धरती के प्राणी उनकी नई दुनिया तक पहुँचकर वहाँ भी प्रदूषण फैलाएँ या फिर तोड़-फोड़ मचाएँ, जैसा पहले कुछ लोगों ने किया था।''

फिर कुछ रुककर शिंगाई फू बोली, ''पर मुझे पूरा यकीन है नील कि मिंपी लोग तुमसे जरूर मिलेंगे। वे बहुत नेक और भले लोग हैं और अपने जैसे सीधे-सादे लोगों से मिलना उन्हें अच्छा लगता है। मैं वहाँ जाकर तुम्हारे बारे में बताऊँगी, तो उन्हें बहुत खुशी होगी। हाँ, लेकिन अभी हम यहीं घूमेंगे और मिलिनारा की सुंदरता का आनंद लेंगे। क्यों नील, ठीक है न!''

''ठीक।'' नील हँसा, ''तुम बहुत बुद्धिमान हो, शिंगाई फू शुम्मा। बात को इस तरह कहा कि मुझे बुरा भी न लगे।''

सुनकर शिंगाई फू भी मुसकरा दी।

□

बहुत देर तक नील शिंगाई फू शुम्मा चिड़िया के साथ इस अनोखी सतरंगी दुनिया में घूमता रहा, घूमता रहा। मजे की बात यह थी कि सारे दिन घूमने के बाद भी उसके पैरों में जरा भी थकान न थी। उसका मन होता था कि वह बस यहीं घूमता रहे, यहाँ से कहीं न जाए। पर फिर उसे अपने मम्मी-पापा की याद आई। अपना स्कूल और स्कूल के प्यारे दोस्त याद आए।

उसने शिंगाई फू शुम्मा से कहा, तो वह फिर उसे अपने पंखों पर बैठाकर धरती पर ले आई।

हाँ, लौटते समय उसने नील से एक बड़ी अचरज भरी बात कही, जिसे सुनकर उसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। शिंगाई फू ने जब फिर से दोहराया तो भी बड़ी मुश्किल से वह उसपर यकीन कर पाया। वरना तो वह सोच रहा था कि उसने कुछ गलत सुन लिया है। असल में शिंगाई फू शुम्मा ने बातों-बातों में झिझकते हुए बताया था कि वह असली चिड़िया नहीं, बल्कि एक यंत्र-चिड़िया है और उसे मिंपी लोगों ने एक अद्‌भुत अंतरिक्ष-यान के रूप में काम करने के लिए निर्मित किया है।

''प···पर मैं तो सोच रहा था कि तुम लाखों बरस पुरानी किसी दुर्लभ प्रजाति की चिड़िया हो, जो आज देखने को नहीं मिलती। तुम इतनी अच्छी बातें करती हो

कि तुम जिंदा प्राणी नहीं हो, यह तो मैं सोच भी नहीं सकता।'' नील ने अचरज से भरकर कहा।

''असल में, मिंपी लोगों ने अपनी अनोखी तकनीक का कमाल दिखाने के लिए मुझे गढ़ा है। मैं चिड़िया भी हूँ, रोबोट भी और अद्‌भुत अंतरिक्ष-यान भी। यही मेरा रहस्य है।''

कहकर शिंगाई फू शुम्मा जोरों से हँसती हुई 'बाय' कहकर उड़ गई।

लौटकर नील ने दोस्तों को उस सतरंगी दुनिया का किस्सा सुनाया, तो सबने दाँतों तले उँगली दबा ली।

रात को नील सोया तो उसे सपने में मिलिनारा के बुद्धिमान प्राणी मिंपी दिखाई दिए। वे बड़े सुंदर और स्वस्थ थे। सभी के चेहरे पर बड़ी प्रसन्न हँसी थी। नील ने शिकायत करते हुए कहा, ''मैंने आपकी सतरंगी दुनिया देख ली। पर आप लोग उसे छोड़कर चले क्यों गए?''

इसपर उनके मुखिया ने हँसते हुए कहा, ''सारे बच्चे तुम्हारी ही तरह होते नील, तो हमें अपनी सतरंगी दुनिया को छोड़ने की जरूरत क्यों पड़ती? हम लड़ाई नहीं, प्यार चाहते हैं। इसीलिए हमें बस सीधे-सादे और प्यारे लोग पसंद हैं—बिलकुल तुम्हारी तरह। खैर, अब तुमने तो हमारी सुंदर दुनिया देख ही ली! जब-जब मिलने का मन होगा, हम सपने में तुमसे मिलने आ जाया करेंगे। जल्दी ही तुम्हें भी अपने अपने नए देश सुइनारा में बुलाएँगे।''

सुनकर नील खुश हो गया। और सोते-सोते भी उसके मुख पर एक बड़ी ही भली, मीठी-मीठी सी मुसकान आ गई।

□

सुबह नील उठा तो उसे सिरहाने के पास एक सुंदर और रंग-बिरंगे लैटरपैड पर लिखी एक कविता की कुछ लाइनें नजर आईं। नील ने पढ़ा, सुइनारा के नन्हे बच्चों एडी और बिली ने बड़े प्यार से उसे अपने सुंदर देश में आने का आमंत्रण देते हुए लिखा था—

सुइनारा, सुइनारा, सुइनारा,
तुम्हें बुलाता नील, हमारा सुइनारा।
सुइनारा है अंबर का एक प्यारा तारा
तुम्हें बुलाता प्यार भरा यह सुइनारा।

नील ने चुपके से वह लैटरपैड अपने बस्ते में सँभालकर रख लिया। उसने सोचा था कि वह स्कूल में अपने सभी दोस्तों को यह दिखाएगा और रात के सपने

की पूरी कहानी सुनाएगा।

पर स्कूल में जाकर उसने बस्ते को अच्छी तरह देखा, सुइनारा का वह लैटरपैड जाने कहाँ गायब हो गया था।

नील ने सोचा, ''शायद बुद्धिमान मिंपी प्राणियों को यह पसंद नहीं है कि मैं उनके नए देश सुइनारा के बारे में सभी को बताऊँ। अब सपने में मिंपी लोग आएँगे, तो मैं जरूर उनसे सॉरी बोलूँगा।''

सोचते ही उसका मन हलका हो गया और वह मगन होकर सात रंग के अद्‌भुत लोक सुइनारा की सुंदर झाँकियों के बारे में सोचने लगा।

□

गोपी की फिरोजी टोपी

आजकल शहर के आदर्श मॉडल स्कूल में किसी की चर्चा थी तो बस गोपी की। हर कोई गोपी की बात कर रहा था और रातोरात पूरे स्कूल का वह हीरो बन गया था। और सच्ची बात तो यह कि बात गोपी की उतनी नहीं थी, जितनी गोपी की फिरोजी टोपी की। जैसे गोपी की फिरोजी टोपी न हुई, कोई जादू-मंतर जैसी चीज हो गई, जिसने देखते-ही-देखते हवाओं में एक अजब सी सनसनी फैला दी, 'टोपी···टोपी, गोपी की फिरोजी टोपी···गोपी की फिरोजी टोपी!'' सब एक-दूसरे से पूछ रहे थे, ''भई, तुमने गोपी की चमत्कारी टोपी देखी? सचमुच कमाल की चीज है, एकदम कमाल!''

नील कह रहा था, ''भई, मुझे तो शुरू से लगता था, यह लड़का कुछ अलग है। न औरों से ज्यादा मिलना-जुलना, न हँसी-मजाक। बस, हर वक्त कुछ-न-कुछ सोचता हुआ सा लगता था। एकदम चुप्पा। इसके बैग में कंप्यूटर की नॉलेजवाली बड़ी मोटी-मोटी किताबें होती थीं। मैं हैरान होकर कहता था, अरे गोपी, तू क्या करता है इनका? तो बोला कि फुर्सत के टाइम में पढ़ता हूँ। मैंने पूछा कि क्या समझ में आ जाती हैं? इसपर बोला कि हाँ, जरा भी मुश्किल नहीं हैं। तू पढ़कर देख। पर मैंने पढ़ी तो सिर घूम गया। हारकर मैंने कहा, न-न गोपी, ले तू ही पढ़ ऐसे-ऐसे भारी पोथे!''

नील बता रहा था, तो बाकी सब बच्चे बड़े अचरज से मुँह बाए सुन रहे थे। उनकी भी गोपी के बारे में करीब-करीब यही राय थी।

इतने में हिंदी की मैडम मिसेज वासवानी वहाँ से निकलीं। छात्रों को गोपू के बारे में बात करते देख, उनके मुँह से निकला, ''वाकई है तो यह कमाल का लड़का और उससे भी ज्यादा कमाल की इसकी फिरोजी टोपी!'' फिर वे जोरों से हँस दीं और हँसते-हँसते आगे निकल गईं।

यों तो गोपी इस बार ग्यारहवीं के सालाना इम्तिहान देने आया था, तो हर रोज उसके सिर पर यह टोपी होती ही थी। इसे सबने देखा था, पर कुछ ज्यादा चर्चा नहीं हुई थी। मजाक में एक-दो दोस्तों ने थोड़ा छेड़ते हुए कहा था, ''अरे गोपी, कहीं तुम गंजे तो नहीं हो गए, जिसे छिपाने के लिए रोज-रोज इसे पहनकर आ जाते हो?''

इसपर गोपी मुसकराकर रह गया था, कुछ बोला नहीं।

गोपी की इस टोपी में कुछ-न-कुछ खासियत तो जरूर थी। यही वजह है कि उसके क्लास टीचर जोशी सर का भी ध्यान इसपर गया था। जब गोपी लगातार कई दिन तक इम्तिहान में इसे पहनकर आया, तो उन्होंने हँसते हुए कहा, ''अरे वाह गोपी, तुम्हारी यह कैप तो एकदम जादूवाली लगती है। शायद इसी के बलबूते इस बार तो तुम झटपट पूरा पेपर हल कर देते हो, वरना पहले तो दूसरे-तीसरे सवाल के बाद ही तुम्हारा पेन अटक जाता था और तुम माथा खुजाते नजर आते थे। इस बार क्या किसी जादूगर से यह टोपी माँग लाए हो, जिसकी बदौलत तुम्हारा पेन रुकता ही नहीं है।''

□

जोशी सर की बात सुनकर पूरी क्लास खिलखिला उठी थी और गोपी भी कुछ शरमा गया था। पर तब तो सबने इसे मजाक ही समझा था। यह मजाक एक अचरज भरी वैज्ञानिक सच्चाई है, इसकी तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। खुद जोशी सर भी नहीं, जो इतने चुस्त-चौकस हैं कि छात्र का चेहरा देखकर साफ बता सकते हैं कि इसके भीतर क्या चल रहा है? पर गोपी की फिरोजी टोपी की लीला वे भी नहीं भाँप पाए।

और अब तो पूरे गोगापुर में हलचल थी। यहाँ तक कि गोपी की टोपी का पूरा किस्सा सुनते ही गोगापुर के एडवांस्ड साइंस सेंटर के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रसन्नमुखम भी एकदम अवाक् रह गए थे। बोले, ''विज्ञान में असंभव तो कुछ भी नहीं। पर मुझे स्वीकार करना चाहिए कि गोपी की यह फिरोजी टोपी एक वैज्ञानिक सच्चाई होने के साथ-साथ किसी मिरेकल से कम नहीं है। शून्य का आविष्कार भारत का ऐसा महान् आविष्कार है, जिसके बिना कंप्यूटर की खोज शायद संभव ही नहीं थी। और गोपी की जादुई टोपी कंप्यूटर विज्ञान में एक ऐसे अचरज की तरह तो है ही, जो बड़े-बड़ों को चकित करेगा। सच बताऊँ तो मैं खुद अभी तक इसपर यकीन नहीं कर पाया हूँ। हालाँकि जानता हूँ कि गोपी जो कह रहा है, वह सच है, एकदम सच। अलबत्ता कल जब वह सभाकक्ष में हम सबके सामने अपनी चमत्कारी

टोपी का डिमांस्ट्रेशन करेगा, तब पूरी बात पता चलेगी।''

यों गोपी की फिरोजी टोपी ने पूरे गोगापुर में हड़कंप मचा दिया था। न जाने कब से वह अपनी कल्पना को साकार करने में जुटा था। और उसकी यह अनोखी खोज कभी सामने न आती, अगर खुद गोपी ने स्कूल के स्टेज पर आकर यह अजब सी घोषणा न की होती, जिसने आदर्श मॉडल स्कूल के प्रिंसिपल डॉ. घोषाल तक को चकरा दिया था।

हालाँकि यह किस्सा या घटना-क्रम तो बस थोड़ी देर का है। और जिस दिन यह घटा, संयोग से वह दिन था—पहली अप्रैल का। वाकई उस दिन गोपी की फिरोजी टोपी ने अच्छे-अच्छों को बुद्धू यानी 'अप्रैल फूल' बना दिया था। यह अलग बात है कि उसका पता सबको बड़ी देर में लगा था। और जब पता चला तो गोपी एकाएक हीरो बन चुका था, पूरे स्कूल का हीरो, पूरे गोगापुर शहर का हीरो। हर होंठ पर बस गोपी और गोपी की फिरोजी टोपी ही नाच रही थी।

असल में, उस दिन आदर्श मॉडल स्कूल का सालाना नतीजा घोषित होना था। लिहाजा सारे बच्चे उत्सुकता से भरे हुए थे। ग्यारहवीं के नतीजे पर सबका ध्यान था, क्योंकि सबको पता था कि ग्यारहवीं कक्षा में स्कूल के असाधारण बच्चे थे, जिनसे बड़ी उम्मीदें थीं और अगले साल बारहवीं के बोर्ड की परीक्षा में जिन्हें स्कूल का नाम जगमगाना था। खासकर प्रशांत गगन, नीना भट्टाचार्य और देवेश आनंद तो बड़े ही प्रतिभाशाली बच्चे थे, जो पिछले साल हाईस्कूल में बोर्ड की मैरिट-लिस्ट में थे। इनमें प्रशांत सबसे होशियार विद्यार्थी था। इसके बाद नीना और देवेश थे। कभी नीना के नंबर पाँच-दस ज्यादा आ जाते, तो कभी देवेश के। खासा तगड़ा कंपिटीशन था। क्लास में और भी कई इंटेलीजेंट बच्चे थे, पर इनमें गोपी की तो कभी गिनती नहीं होती थी। वह न तो पढ़ाई में कभी नाम कमा पाया था और न खेलों में। बस, अपने आपमें मगन कुछ सोचता सा रहता। लिहाजा उसकी दोस्ती भी कम बच्चों से थी। हाँ, अकसर पास में बैठनेवाले नील या रोहित से कभी-कभार दो बातें हो जाती थीं।

पर इस बार प्रिंसिपल डॉ. अमिय घोषाल ने नतीजे सुनाना शुरू किया तो ग्यारहवीं क्लास का नंबर आते ही मानो अजब सा उलट-फेर हो गया। किसी को यकीन ही नहीं हो रहा था कि गोपी ने ग्यारहवीं क्लास में टॉप किया है। लगा कि वे कोई और लिस्ट तो नहीं पढ़ रहे या फिर बोलते समय उनसे कोई भारी गड़बड़ तो नहीं हो गई। वरना गोपी कैसे फर्स्ट आ सकता है? वही गोपी, जिसे पिछले कुछ समय से सारे बच्चे बस फिरोजी टोपी वाला गोपी कहकर छेड़ते और मंद-

मंद मुसकराते थे। इसके अलावा तो कोई और खासियत थी ही नहीं उसकी। छठी कक्षा से लेकर अभी तक उसके नंबर 50-55 परसेंट से आगे कभी बढ़े ही नहीं और फर्स्ट डिवीजन तो कभी सपने में भी नहीं आई। पर आज ग्यारहवीं में एकाएक वह चोटी पर पहुँच गया था। साथ ही उसने एक कीर्तिमान भी बनाया था। इस बार सालाना इम्तिहान में उसे 97 प्रतिशत अंक मिले थे और यह खुद में एक रिकॉर्ड था। किसी भी क्लास में, किसी भी बच्चे के इतने अंक नहीं आए थे। वह लड़का जो नीचे से पहला-दूसरा था, आज नंबर लाने में वह हीरो नंबर वन बन चुका था।

उधर प्रशांत गाल पर हाथ रखकर धीरे से नीना और देवेश को बता रहा था कि अभी कुछ समय पहले की ही तो बात है, साइंस की मैडम मिसेज इला वर्धन ने गोपी से मजाक में पूछा था, ''क्यों गोपी, क्यों तुम पास हो जाओगे?''

इसपर गोपी ने मुसकराते हुए कहा था, ''हाँ मैडम, जितने हमेशा आते हैं, उतने नंबर तो आ जाएँगे।''

लेकिन फिर आज यह जादू कैसे हो गया? न प्रशांत की समझ में आ रहा था, न नीना और देवेश की। हालत यह थी कि जब गोपी का नाम पुकारा गया तो ज्यादा तालियाँ तक नहीं बजीं। प्रिंसिपल डॉ. घोषाल को याद दिलाना पड़ा, तब बच्चों ने जोरदार तालियाँ बजाईं। पर तालियाँ बजाते हुए लोग जितने खुश थे, उससे ज्यादा हक्के-बक्के थे कि भला गोपी फर्स्ट कैसे? हमेशा फर्स्ट आनेवाला प्रशांत आज पीछे खिसक गया था। इतने सालों में पहली बार वह सेकंड आया था और नीना थर्ड। देवेश आनंद चौथे नंबर पर खिसक गया था।

अगर बीच में गोपी की फिरोजी टोपी आकर न टपक गई होती तो यह गड़बड़ न होती। पर यह चमत्कार हुआ कैसे? मन में सवाल-पर-सवाल उठ रहे थे। इसीलिए प्रिंसिपल घोषाल सर गोपी को इनाम दे रहे थे, तो सब बच्चों के चेहरे पर हैरानी की रेखा थी। यहाँ तक कि प्रिंसिपल साहब ने देखा, खुद गोपी ज्यादा खुश नहीं है। उन्होंने अचरज से पूछा, ''क्यों, तुम्हें खुशी नहीं हुई गोपी?''

इसपर गोपी बोला, ''नहीं-नहीं, खुश हूँ मैं सर।...अच्छा लग रहा है।''

''सिर्फ अच्छा? तुमने तो कइयों को पछाड़ दिया भाई। काफी उलट-फेर कर दिया।''

''जी।'' गोपी ने सिर झुकाकर कहा। बस जी, कुछ और नहीं और फिर वह चुपचाप कुछ सोचता हुआ सा स्टेज से नीचे उतर आया। लगा कि रहस्य और गहरा हो गया है।

बहुत से बच्चे अब खुस-फुस करते हुए कहने लगे थे, ''लगता है, इस बार

गोपी ने चुपके-चुपके मेहनत कर ली होगी। वैसे भी तो यह चुप्पा है हमेशा से। कभी ज्यादा बोलता नहीं।''

''हाँ-हाँ, हो सकता है। सबकुछ हो सकता है।''

उधर गोपी के क्लास-टीचर जोशी सर हँस-हँसकर साथवाले अध्यापकों को बता रहे थे, ''अजी, मैंने तो मजाक में इससे एक दिन कहा भी था कि लगता है गोपी, तुम्हारी इस फिरोजी टोपी में जादू है। तुम इस बार कोई जादू दिखानेवाले हो। और वाकई वह हो भी गया। देख लो, इसने अब भी वही फिरोजी टोपी पहनी हुई है।''

सुनकर सभी हँसने लगे।

इतने में प्रिंसिपल घोषाल सर ने आगे के नतीजों का ऐलान शुरू कर दिया। हर क्लास में फर्स्ट, सेकंड और थर्ड आनेवाले बच्चों को उन्होंने स्टेज पर बुलाकर अपने हाथों से इनाम दिए।

जब सभी बच्चों को रिपोर्ट-कार्ड मिल गए, तो प्रिंसिपल सर ने बड़े भावपूर्ण लहजे में कहा, ''मेरे प्यारे विद्यार्थियो, आज का दिन सचमुच खुशी का दिन है। जैसे आपके लिए, वैसे ही हमारे लिए। आप लोगों की खुशी एक नई सीढ़ी चढ़ने की है और हमारी खुशी आपको एक के बाद एक नई-नई सीढ़ियाँ चढ़ते हुए देखने की है। मुझे तो लगता है, पढ़ाते समय हम अध्यापकों को इस बात का जरूर ध्यान रखना चाहिए कि आपमें से हर बच्चा अनमोल है और दूसरों से अलग है।''

फिर अचानक उन्हें गोपी का ध्यान आया। बोले, ''अभी-अभी आपने गोपी को देखा। वह कहाँ से उठकर, कहाँ पहुँचा, यह भी आपने देखा होगा। इससे पहले कभी यह बच्चा इस कदर लाइम लाइट में नहीं आया। पर कब, कौन, क्या कमाल दिखा दे, कहा नहीं जा सकता। बल्कि मुझे तो पता चला है कि गोपी के जितने भी टीचर हैं, वे सब उसकी यह सफलता देखकर हैरान हैं। कोई चाहकर भी उसके लिखे सवालों में कोई भूल-गलती नहीं ढूँढ़ पाया। क्लास टीचर मि. जोशी ने तो गोपी से मजाक में कहा था कि शायद वह किसी जादूगर से टोपी ले आया है, जिसकी वजह से उसका पेन सरपट दौड़ रहा है। लगता है, उनकी बात सही थी। संयोग से गोपी ने अब भी अपनी वही पसंदीदा फिरोजी टोपी लगाई हुई है और सच कहूँ तो गोपी पर यह फबती भी है। मुझे याद आया, हमारे नगर के एडवांस्ड साइंस सेंटर के अध्यक्ष मशहूर वैज्ञानिक प्रोफेसर प्रसन्नमुखम भी कुछ-कुछ इसी तरह की टोपी लगाते हैं। हो सकता है, इस बच्चे ने उनसे ही प्रेरणा ली हो और उन्हीं की तरह आगे कुछ बनकर दिखाए।''

उसके बाद सभी को प्यार और शुभकामनाएँ देते हुए प्रिंसिपल साहब ने सभी को बूँदी के लड्डू बाँटे जाने की घोषणा की। उन्होंने हँसते हुए कहा, ''हमारे यहाँ यह खुशी मनाने का देसी ढंग है और मुझे पसंद है। फिर गोगापुर तो पुराना सांस्कृतिक शहर है, जहाँ के बूँदी के लड्डूओं का वाकई कोई जवाब नहीं। लिहाजा हम लोग साथ-साथ इन्हें खाएँ तो सबकी खुशियाँ साझी हो जाएँगी।''

तालियाँ···! बड़ी देर तक तालियाँ बजती रहीं। प्रिंसिपल घोषाल सर की बातों ने सबके दिल को छू लिया था। सबको लग रहा था कि आज का कार्यक्रम खत्म और अब लड्डू बाँटे जाने की तैयारियाँ होनी हैं। प्रिंसिपल सर उतरने के लिए मंच के एक साइड में बनी सीढ़ियों की ओर बढ़ रहे थे। इतने में सभी ने देखा कि गोपी तेजी से मंच की ओर जा रहा है।

□

अरे, यह क्या···? सब हैरान और हक्के-बक्के थे। गोपी अब मंच पर क्यों जा रहा है। और उसका चेहरा इतना काला क्यों पड़ा हुआ है? सभी का मन कह रहा था, कोई बात है, सचमुच कोई छिपी हुई बात, जो अब सामने आना चाहती है।

खुद प्रिंसिपल घोषाल हैरान। गोपी मंच पर आकर एक भी शब्द कहे बगैर कुछ झिझका हुआ सा चुपचाप खड़ा हो गया, तो वे प्यार से बोले, ''हाँ बोलो गोपी, क्या बात···? तुम कुछ कहना चाहते हो?''

''हाँ, सर।'' कहकर गोपी ने धीरे से गरदन हिलाई। वह गंभीर था, बहुत अधिक गंभीर।

देखकर प्रिंसिपल घोषाल कुछ अचकचा से गए। ''बोलो-बोलो, क्या कहना है गोपी?'' उन्होंने फिर से गोपी का हौसला बढ़ाते हुए कहा।

''सर इजाजत दें, तो मैं माइक पर कुछ···कनफेस···!''

''तुम कनफेस करना चाहते हो? मगर क्या? तुमने कुछ गड़बड़ की है क्या गोपी?'' प्रिंसिपल साहब का चेहरा जैसे बुझ सा गया।

''यस सर···।''

''ह्वाट···? क्या कहना चाहते हो तुम, बोलो?'' प्रिंसिपल घोषाल जैसे गहरी उत्तेजना और ऊहापोह में हों।

''सर, मुझे सिर्फ दो मिनट में अपनी बात कहने की इजाजत दीजिए। मैं सबकुछ बता दूँगा।'' गोपी ने झिझकते हुए कहा।

उसकी बात स्टेज के सामने अगली पंक्तियों में बैठे बच्चों के कानों में भी जरूर गई होगी। इसीलिए उनमें कुछ कानाफूसी सी शुरू हो गई। अभी-अभी उठकर

खड़े हुए बच्चों के पाँव धीरे-धीरे जहाँ थे, वहीं थम गए और निगाहें स्टेज पर।

इस बीच अपने जज्बात पर काबू पाकर प्रिंसिपल घोषाल ने छात्रों से कहा, ''मेरे प्रिय विद्यार्थियो, आप लोग अभी जाएँ नहीं। गोपी आपसे कुछ कहना चाहता है। शायद वह कुछ कनफेस करना चाहता है। आप लोग ध्यान से सुनें उसकी बात। देखें, कहीं उसके इस असाधारण रिजल्ट का कोई रहस्य तो इससे नहीं खुलनेवाला? कहीं गोपी ने कोई गड़बड़ तो नहीं की? अगर इसने नकल से इतने नंबर हासिल किए हैं, तो यह मेरे लिए बड़े दुःख और हैरानी की बात होगी। इसलिए कि हमारा स्टाफ नकल के मामले में बड़ा सख्त है और हमारे स्कूल की बरसों से यह गौरवशाली परंपरा चली आई है कि यहाँ आज तक कभी नकल नहीं हुई। खैर, पता नहीं, कौन सी हकीकत गोपी बतानेवाला है? आपके साथ-साथ मुझे भी उत्सुकता है। अलबत्ता गोपी आपसे कुछ कहेगा। आप उसकी बात ध्यान से सुनें।''

और प्रिंसिपल घोषाल की बात पूरी होते ही गोपी ने डरते-डरते माइक पर बोलना शुरू किया। शायद पहली बार वह इस तरह माइक पर बोल रहा था। सबकी निगाहें उसके चेहरे पर जमी थीं और उसने थोड़ा काँपते स्वर में अपनी बात कहनी शुरू की—

''आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय, अध्यापकगण और प्यारे दोस्तो,

मैं कैसे अपनी बात कहूँ, मुझे समझ में नहीं आ रहा। इसलिए कि मैं बड़ा झेंपू हूँ और मुझे बोलना नहीं आता। पर मैं आप सबके सामने कुछ कनफेस करना चाहता हूँ।''

कहकर गोपी एक पल के लिए रुका। उस समय पूरे हॉल में जैसे सन्नाटा खिंच आया हो। सबकी निगाहें गोपी पर टिकी थीं और सब जल्दी-से-जल्दी जान लेना चाहते थे कि गोपी के भीतर ऐसी क्या उथल-पुथल चल रही है, जो उसे स्टेज पर खींच लाई।

गोपी ने फिर धीरे से सुर पकड़ते हुए कहा—

''आप सब लोग जानते हैं कि हमारे स्कूल की ग्यारहवीं की क्लास बड़ी होशियार है। प्रिंसिपल सर अकसर बात-बात में इसे वेरी प्रेस्टीजस क्लास कहते हैं। एक-से-एक ब्रिलिएंट बच्चे हैं उसमें, प्रशांत, नीना, देवेश। और भी बहुत सारे हैं। लेकिन मैं तो इनके आगे किसी गिनती में ही नहीं था और न आज हूँ।

तो कायदे से तो जो इनाम मुझे मिला, उसपर मेरा नहीं, प्रशांत का ही हक था। मैंने बेवजह उसका हक मारा, मुझे इस बात का दुःख है और मैं आप सबसे

और प्रिंसिपल साहब से इसके लिए माफी माँगता हूँ। हाँ, इतना बता दूँ कि मैंने नकल नहीं की। यह बात सही है, एकदम सही। पर सवाल खुद मैंने भी हल नहीं किए, यह बात भी उतनी ही सही है। आपको ताज्जुब होगा, ये सवाल मैंने नहीं, मेरी इस फिरोजी टोपी ने हल किए हैं, जिसे आप भी देख रहे होंगे। मैंने तो बस, इन्हें अपने पेन से लिखा भर है और वाकई मुझे उनके जवाब नहीं मालूम। मेरी चमत्कारी टोपी मुझे सवालों के जवाब बताती गई और मैं तो बस लिखता गया···लिखता गया और फर्स्ट आ गया।

मगर आप लोग जानना चाहेंगे, टोपी मुझे कैसे बताती गई? क्या मेरी टोपी बोलती है? और बोलती है तो उसकी आवाज बाकी लोगों को क्यों नहीं सुनाई पड़ी? आप में से कुछ को लगेगा, मैं कोई गप या किस्सा-कहानी सुना रहा हूँ? पर मेरी पूरी बात सुनेंगे तो आपको सबकुछ पता चल जाएगा और यह भी कि यह कोई मामूली टोपी नहीं है। वाकई यह जादूवाली टोपी है, पर इसके पीछे जादू-मंतरवाला जादू नहीं, बल्कि विज्ञान का जादू है। इसलिए कि आपको भले ही टोपी नजर आ रही हो, पर असल में टोपी की शक्ल में यह एक कंप्यूटर है। पूरा कंप्यूटर, जिसमें सॉफ्टवेयर, मैमोरी, हार्ड डिस्क, इंटरनेट सबकुछ है। यहाँ तक कि की-बोर्ड और माउस भी, यह अलग बात है कि वह आपको नजर न आए। इसलिए कि इस की-बोर्ड पर उस तरह उँगलियाँ नहीं चलानी पड़तीं। सिर्फ मन में सोचो तो सारे काम होते जाते हैं। इसी तरह माउस की भी जरूरत नहीं है। सवाल हल करते-करते बीच-बीच में मैं टोपी पर उँगलियाँ घुमाता जाता था। बस, यही मेरा माउस है, जिससे कंप्यूटर मेरा निर्देश मानता था।

मैं असल में काफी समय से चक्कर में था। सोच रहा था कि हमेशा प्रशांत ही क्यों फर्स्ट आता है? क्या मैं नहीं आ सकता? पर मैं तो सचमुच पढ़ाई में उतना होशियार नहीं था। तब मुझे लगा, एक बार फर्स्ट आकर दिखाना है, चाहे जो हो जाए। और बस, मैंने कंप्यूटर से जुड़ी किताबें पढ़नी शुरू कीं, इंटरनेट की मदद ली और आखिर यह कंप्यूटराइज्ड टोपी बना ली। मैं मन-ही-मन जिस चैप्टर का नाम लेता, वही खुल जाता और उसकी मैमोरी मेरी दिमागी मैमोरी से जुड़ जाती। बस, फिर सवालों के जवाब लिखना मेरे लिए कोई मुश्किल नहीं था। हाँ, इसके लिए इस फिरोजी टोपी को कभी-कभी मुझे उँगलियों से छूना भर पड़ता था। और यह काम मैं पेपर देते हुए इस कदर चुपके-चुपके कर लेता था कि किसी का इसपर ध्यान ही नहीं गया।

यों मैंने सोचा था कि सबको हैरान कर दूँगा और मैं वाकई सफल भी हो

गया। पर अभी-अभी मैंने प्रिंसिपल सर का भाषण सुना। वह इतना दिल को छू लेनेवाला और भावपूर्ण था कि मैं अवाक् रह गया। उनके मुँह से अपनी इतनी प्रशंसा सुनकर मुझे भीतर-ही-भीतर रोना आ रहा था। मुझे लगा, गोपी तेरा इस इनाम पर कोई हक नहीं। यह तेरा नहीं, प्रशांत का है, जिसे तेरी वजह से सेकंड पोजीशन मिली। बस, उसी समय मैंने फैसला किया कि मैं यह इनाम लौटा दूँगा।

मैं आप सबसे माफी माँगता हूँ और प्रिंसिपल साहब से भी कि उन्होंने मुझे जो इनाम दिया और जो बातें मेरे लिए कहीं, मैं इसके योग्य नहीं। प्रिंसिपल सर से विनती है कि कृपया मुझे अपने पैर छूने की इजाजत दें और यह आशीर्वाद दें कि मैं अपनी जिंदगी में कभी सच में इनाम के लायक बनूँ।...''

कहते-कहते गोपी ने आगे बढ़कर प्रिंसिपल सर के पैर छू लिये। फिर इनाम में मिला एक खूबसूरत नीला पैकेट, जिसे उसने अभी खोला भी नहीं था, प्रिंसिपल सर को लौटाते हुए कहा, ''सर, इसपर मेरा नहीं, प्रशांत का अधिकार है। मैं सचमुच इसके लायक नहीं।''

प्रिंसिपल साहब ने गोपी के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''तुम क्या हो गोपी, यह शायद खुद तुम्हें पता नहीं। पर मैं जान गया हूँ।''

फिर उन्होंने माइक पर आकर कहा, ''प्रिय छात्रो, मैंने अभी-अभी आपसे जो कहा था, गोपी ने उसे सच साबित कर दिया। मैंने आप सबसे कहा था कि यहाँ बैठे बच्चों में हर बच्चा लाजवाब है और गोपी वाकई ऐसा ही लाजवाब बच्चा है। गोपी के कनफेशन के बाद अब ग्यारहवीं की रैंक दोबारा निकालनी पड़ेंगी। प्रशांत फर्स्ट, नीना सेकंड और देवेश अब थर्ड माना जाए। पर हाँ, गोपी को भी इनाम मिलेगा। पूरे स्कूल के एक्स्ट्रा-ओर्डिनरी यानी असाधारण बच्चे के रूप में उसे ग्यारह सौ रुपए का इनाम मैं अपनी ओर से दे रहा हूँ।

मुझे आश्चर्य है, गोपी के क्लास-टीचर मि. जोशी ने जो कहा था, गोपी ने कितने नायाब ढंग से उसे सच साबित किया। मजे की बात यह है कि उसने विज्ञान को भी किसी परीकथा की तरह मनमोहक बना दिया, जिस पर विश्वास करने का मन नहीं होता, पर विश्वास करना पड़ता है। गोपी की फिरोजी टोपी ने जो कमाल दिखाया, वह सचमुच लाजवाब है। यह एक छोटे बच्चे की बड़ी खोज है। हम इसे जानना और समझना चाहेंगे कि इतनी छोटी सी उम्र में उसने ऐसा कंप्यूटर कैसे बना लिया? जल्दी ही मैं गोगापुर के एडवांस्ड रिसर्च सेंटर के प्रोफेसर प्रसन्नमुखम से मिलूँगा और इस बारे में बताऊँगा। उम्मीद है, वे गोपी की इस खोज के बारे में हमें कहीं ज्यादा वैज्ञानिक ढंग से बता पाएँ।''

□

अगले दिन गोगापुर के एडवांस्ड रिसर्च सेंटर के सभागार में विशाल भीड़ थी। मानो पूरा गोगापुर वहाँ उमड़ पड़ा हो और जब गोपी ने अपने बनाए हुए टोपी-कंप्यूटर की सारी विशेषताएँ एक-एक कर डिमांस्ट्रेशन के सहारे समझानी शुरू कीं तो वहाँ इतनी शांति थी कि लोगों की साँसों की आवाज भी सुनाई देती। गोपी वैसे शर्मीला था, पर अपनी इस चमत्कारी टोपी के बारे में बता रहा था, तो लगता था कि इक्कीसवीं सदी का एक नन्हा वैज्ञानिक बड़ी समझदारी से अपनी नई रिसर्च के बारे में बता रहा है। इसकी कल्पना के साथ-साथ इसमें प्रयुक्त हुई टेक्नोलॉजी और कलपुरजों के बारे में भी उसने बताया। और यह भी कि उसके घर के पास पक्षिराजन अंकल रहते हैं, जिन्होंने बंगलुरु से कंप्यूटर साइंस में एम.टेक. की डिग्री हासिल की है। गोपी को न सिर्फ उनसे किताबें मिलीं, बल्कि उनसे रोजाना डिस्कशन से भी बड़ा फायदा हुआ।

आखिर में अपनी बात पूरी करते हुए गोपी ने कहा, ''इस टोपी को पहनकर जो भी चाहे, महाज्ञानी हो सकता है। पर यह भी सही है कि इससे उन्हीं सवालों के जवाब मिलेंगे, जो इस टोपी-कंप्यूटर की मैमोरी में फीड किए गए हों।''

गोपी की बात खत्म होते ही प्रोफेसर प्रसन्नमुखम और उनके संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों ने गोपी की पीठ थपथपाते हुए कहा, ''आश्चर्य है कि हमारे शहर के इस नन्हे जीनियस का यह आविष्कार एकदम परफेक्ट है!''

फिर प्रोफेसर प्रसन्नमुखम ने घोषणा की, ''हमारे यहाँ रिसर्च ज्वॉइन करनेवालों के लिए एम.एस-सी. की डिग्री लाजिमी है। पर इस नन्हे वैज्ञानिक के लिए ऐसी कोई शर्त या बार नहीं है। मैं इसे ऑफर करता हूँ कि चाहे तो कल से ही जूनियर रिसर्च फेलो के रूप में ज्वॉइन करके हमारे संस्थान का गौरव बढ़ाए।''

इसपर तालियों की बौछार के बीच गोपी ने 'हाँ' कहा, तो लगा कि गोगापुर में हर तरफ खुशियों की ताजा बयार चल पड़ी है।

सभा भवन में उपस्थित लोगों में इस कदर उत्साह भर गया था कि अखबार के रिपोर्टर हों या टीवी के एंकर, हर कोई उस टोपी को एक बार तो जरूर छूकर देखना चाहता था, जिसमें पारंपरिक माउस और स्क्रीन नहीं है और सारे माइक्रो पुरजे ऐसे कि वे टोपी के कपड़े में छिप जाते हैं...और कोई भी जिसे पहनकर विद्वान् हो सकता है।

चलते-चलते प्रोफेसर प्रसन्नमुखम ने कहा, ''हम चाहेंगे कि गोपी की फिरोजी टोपी को जल्दी-से-जल्दी पेटेंट करा लिया जाए, क्योंकि आज तक इतनी कम उम्र

में किसी ने ऐसा असाधारण आविष्कार नहीं किया। यह ऐसी ज्ञानी टोपी है, जिसे पहनने के बाद कोई भी अज्ञानी नहीं रह जाएगा। हम चाहेंगे कि गोपी नई-नई खोजें करके अपनी इस टोपी में आगे और भी सुधार करे, ताकि यह हर भाषा में अनुवाद कर सके। तब दुनिया की कोई भी भाषा जाननेवाला आदमी इस टोपी का फायदा उठा सकता है।''

और सभा का अंत हुआ गोपी की मम्मी के संबोधन के साथ। उन्होंने कहा, ''मैं तो इससे अकसर कहती थी कि बेटा, तू इस बार पढ़ नहीं रहा। पता नहीं, क्या कलपुरजे जोड़ता रहता है। इससे तू पास थोड़े ही होगा? इसपर इसका जवाब होता था, चिंता न करो माँ, मैं फेल नहीं हो सकता। मुझे पता नहीं था कि यह चुपके-चुपके किस कारनामे में लगा है। सब इसे बड़ी खोज मान रहे हैं तो मुझे भी अच्छा लग रहा है।''

अगले दिन शहर में जितने भी अखबार थे, सबके पहले पन्ने पर गोपी की फिरोजी टोपी के बड़े-बड़े क्लोज-अप मौजूद थे। गोपी अपनी खूबसूरत फिरोजी टोपी पहनकर मुसकरा रहा था।

टीवी में गोपी के इस अनोखे आविष्कार की चर्चा थी। देश-विदेश के वैज्ञानिकों ने उसकी तारीफ करते हुए कहा था कि इस तरह की संभावनाओं पर हम लोग विचार तो कर रहे थे, पर कोई बच्चा इस सपने को हकीकत में बदल देगा, हमें इसका अंदाजा न था। बहुत से मशहूर वैज्ञानिकों ने फिरोजी टोपीवाले गोपी से उसकी इस निराली खोज के बारे में बात करने की इच्छा प्रकट की थी।

और गोपी··· ? वह आजकल सपना देख रहा है कि मैं इस टोपी को घर-घर पहुँचा दूँ, ताकि सारी दुनिया से निरक्षरता का अँधेरा खत्म हो जाए और ज्ञान की नवदूत बनकर यह टोपी हर चेहरे पर मुसकरा रही हो। लगता है, उसका यह सपना केवल सपना नहीं रहेगा।

□

अमरता की खोज

प्रोफेसर वसंततिलके घबराए हुए दफ्तर से निकले और नीचे आकर गाड़ी स्टार्ट की। वे घर कैसे पहुँचे, उन्हें पता ही नहीं चला। पर घर आते ही जो पहला वाक्य उनके मुँह से निकला वह था, 'उफ्, मैं लुट गया नीला। खत्म, सब खत्म!'

''क्यों, क्या हुआ? क्या···!'' घबराहट के मारे उनकी पत्नी नीला का चेहरा सफेद पड़ गया था। उधर प्रोफेसर वसंततिलके की हालत ऐसी कि जमीन पर अब गिरे, अब···।

उनके बेटे अंशुल ने देखा तो उससे रहा नहीं गया। दौड़कर पापा के पास पहुँचा। उन्हें सहारा देकर कुरसी पर बैठाया। फिर मम्मी से पूछा, ''मम्मी-मम्मी, पापा क्या कह रहे हैं? उन्हें क्या हुआ?''

इतने में प्रोफेसर साहब सँभल चुके थे और शायद अपनी कमजोरी पर थोड़ा पछता भी रहे थे।

उनसे वाकई भूल हुई थी। अभी तक अपनी जिस खोज को उन्होंने रहस्यपूर्ण और गोपनीय बनाकर रखा था, अपनी क्षणिक उत्तेजना के कारण अब उन्हें वह सबको बतानी ही पड़ेगी। कम-से-कम घरवालों को तो जरूर ही। और उसके बाद? आखिर कब तक यह रहस्य, रहस्य रहेगा। और समय से पहले उसके खुल जाने का मतलब था, उनकी खोज का अधूरा रह जाना।

पर अब वे क्या करें? अपने बेटे अंशुल और पत्नी नीला को क्या कहकर समझाएँ? आखिर उन्होंने ही तो उन्हें इस पसोपेश में डाला है।

□

कुछ देर बाद प्रोफेसर साहब कुछ सँभलकर बेटे अंशुल से बोले, ''बेटा, मैं खोज कर रहा था, बहुत बड़ी खोज! मेरे सारे जीवन का निचोड़ था उसमें, मेरे जीवन भर की कमाई और वह चोरी हो गई।''

अब नीला भी कुछ-कुछ समझ गई थी।

प्रोफेसर साहब ने उन्हें यह सब साफ-साफ तो कभी नहीं बताया, पर बीच-बीच में इशारों में वे जरूर कहते रहे कि वे एक बहुत बड़ी और महान् खोज में जुटे हैं। अगर वे इसमें कामयाब हो जाते हैं, तो हो सकता है इनसान और इनसानियत का भविष्य बदल जाए और धरती पर हर ओर बेशुमार खुशी, उल्लास और हरियाली··· !

''तो क्या वह चोरी··· ?'' पूछते हुए नीला के होंठ काँप रहे थे।

प्रोफेसर साहब ने गरदन 'हाँ' में हिला दी। फिर न उनसे कोई एक शब्द बोला गया और न नीला से पूछा गया।

''मैं सोच रहा था···बल्कि कल ही मैंने सोचा था कि उसका 'बैकअप' ले लूँ। यानी सी.डी. या डी.वी.डी. पर उसकी कॉपी··· !'' प्रोफेसर साहब कह रहे थे, ''पर···इसी तरह सबकुछ खत्म, सबकुछ खत्म।''

अंशुल चौंका, ''तो क्या पापा आपने किसी से जिक्र किया था इसका?''

''जिक्र किसका?''

''यही कि आप इसे सी.डी. पर लेना चाहते हैं और···''

''जिक्र? हाँ··· ! पर वे···वे तो मेरे अपने दोस्त··· !''

''वे···वे कौन पापा?''

''वे तो हमारी यूनिवर्सिटी के केमिस्ट्री डिपार्टमेंट के हैड गोखले साहब हैं। अरे, वही गोखले साहब, जो हमारे घर भी आए थे कई बार। तेरे बर्थ डे पर प्राइज में हवाई जहाज लाए थे, घूँ-घूँ करके घूमनेवाला। भूल गया?''

''गोखले साहब!'' नीला चौंकी।

''गोखले साहब··· ?'' अंशुल तेज-तेज सोचने लगा।

जैसे गोखले साहब की पूरी छवि फिर से एक साथ, एक क्षण में ही अपनी यादों में ले आना चाहती हो।

''अच्छा, पापा, वही न खूब मोटेवाले आपके दोस्त, जो पहले घर पर बहुत आते थे। इधर चार-पाँच सालों से आना कुछ कम कर दिया है।''

''हाँ-हाँ!'' उत्साह से प्रोफेसर वसंततिलके बोले, ''वे समझो, मेरे एकमात्र दोस्त हैं, जो मुझे समझते हैं। बाकियों को तो फुरसत ही नहीं, जियो या मरो। मगर एक वो हैं, जो जब-तब पूछते ही रहते हैं कि प्रोफेसर, आजकल किस काम में जुटे हो? मैंने बताया कि काम बस पूरा होनेवाला है। पिछले दस-पंद्रह साल इसी में लगा दिए। अब लगता है, निष्कर्ष पर पहुँचने ही वाला हूँ। फिर भी दो-एक महीने लग ही जाएँगे। आजकल मन आशंकित सा रहता है। सोचता हूँ कि अभी तक सी.डी.

पर कॉपी नहीं की। पर अब जल्दी ही सी.डी. पर लेकर रख लूँ, वरना कुछ हो सकता है, कुछ भी। जिंदगी भर की कमाई चोरी चले जाने का मतलब है, आदमी के होश गायब हो जाना···उसका पागल हो जाना।''

सुनकर अंशुल थोड़ा चौंका। उसकी आँखों में एक चमक उभरी और चली गई। पर फिर आवाज को संयत रखकर बोला, ''पापा, केमिस्ट्री डिपार्टमेंट आप ही के कोरीडोर में एकदम सामनेवाला है न!''

''हाँ-हाँ, पर तुम क्यों पूछ रहे हो?'' प्रोफेसर वसंततिलके ने कुछ अचरज से भरकर कहा।

''कुछ नहीं पापा, वैसे ही, बस वैसे ही।'' अंशुल ने कहा, जैसे उसके कहने के पीछे कोई खास मतलब न हो और बात यों ही मुँह से सरक गई हो।

नीला बोली, ''आपने डिपार्टमेंट में बताया···पुलिस को रिपोर्ट की?''

सुनकर वसंततिलके और भी नर्वस हो गए। बोले, ''ओह, बताना चाहिए था। पर नीला, मेरी हालत बहुत खराब थी। मेरे सिर की यह हालत थी कि फटने-फटने को हो रहा था। लग रहा था कि घर जाकर लेटूँगा, नहीं तो शायद कुछ भी काम ठीक से नहीं कर पाऊँगा। अब शायद कल जाकर बात करूँगा। मि. पॉल, मि. राजशेखर, मिसेज रामचंदानी सबसे···''

प्रोफेसर वसंततिलके की उत्तेजना कभी कुछ कम होती तो अगले क्षण फिर एक भूचाल और बवंडर सा उनके भीतर उठ खड़ा होता और वे होंठों-ही-होंठों में चुपचाप बुदबुदाते नजर आते।

नीला दौड़कर गई और पति के लिए नमक और चीनी मिलाकर नीबू पानी ले आई। उसे पता था कि प्रोफेसर साहब कितने ही थके हुए हों, पस्त और परेशान हों, उन्हें ठीक करने के लिए नीबू से बढ़कर रामबाण औषधि कोई और नहीं है। ऐसी हालत में नीबू पानी लेकर वे लेट जाते हैं और फिर थोड़ी देर बाद एकदम स्वस्थ होकर चुस्त-चौकस से अपने काम में लग जाते हैं।

और वाकई नीबू पानी का चमत्कारी असर हुआ। प्रोफेसर वसंततिलके को लगा कि जैसे दिमाग के जाले कुछ-कुछ साफ हो रहे हैं। अब उस बीती हुई घटना के बारे में वे खुले दिमाग से एक बार फिर सबकुछ सोचने लगे हैं। एकदम नए सिरे से सवाल—किसका हो सकता है यह काम? चोरी कितना नीच काम है। वे मानो बार-बार अपनी याद्दाश्त के द्वार को खटखटाने लगे—आखिर क्यों वे इतने असावधान हो गए थे कि पल भर में अपना सबकुछ गँवा बैठे थे और खुद को ही नहीं, नीला और अंशुल को भी इतनी तकलीफ···! उनके दिल को धक्का सा लगा।

□

अब नीला को बता देना ही उचित होगा कि वह क्या काम था कि जो देखते-ही-देखते हाथों से चला गया। अब भला क्या है छिपाए रखने के लिए?

''नीला···!'' प्रोफेसर वसंततिलके ने पत्नी को पास आकर बैठने का इशारा किया और फिर धीरे-धीरे होंठ हिलाकर बोले, ''तुम्हें पता है···तुम्हें पता है नीला, मैं किस चीज की खोज में था? मैं···मैं तुम्हें बताऊँ नीला कि मैं अमरता की खोज कर रहा था। यकीन करो—अमरता!'' प्रोफेसर साहब ने एक-एक शब्द पर जोर देते हुए कहा।

''अमरता···! आप?'' नीला सुनकर हक्की-बक्की रह गईं।

''हाँ, अमरता की खोज! उसका पहला चरण यह था, जो मैंने लगभग हासिल कर लिया था कि आदमी कभी बूढ़ा नहीं होगा। उसके चेहरे पर बुढ़ापे के लक्षण नजर नहीं आएँगे, थकान नहीं, झुर्रियाँ नहीं, स्मृति-लोप नहीं···! जब तक जिएगा पूरी ताकत के साथ जिएगा। मैंने अमरता का यह रसायन लगभग खोज लिया था नीला। इसके बाद इस प्रयोग को आगे बढ़ाया जाना था, पर···?''

''अच्छा, ऐसा!'' नीला के चेहरे पर विस्मय की गहरी रेखाएँ थीं।

और फिर उन्होंने प्रोफेसर साहब को मन में थोड़ा धीरज रखने के लिए कहा। बोली, ''आपका तो ईश्वर में इतना भरोसा है, फिर एकाएक वह भरोसा आप खो कैसे बैठे हैं? आपकी अगर जीवन भर की मेहनत है तो उसका सुफल तो आपको मिलेगा-ही-मिलेगा। आज मिले या कल···!''

और फिर नीला उनके लिए लौकी का रायता बनाने में जुट गई, जिसे प्रोफेसर साहब दोपहर के खाने में सबसे ज्यादा रुचि लेकर खाते हैं।

खाने के समय नीला फिर प्रोफेसर साहब के मन का भार कम करने की कोशिशों में जुट गईं। बोली, ''इस यूनिवर्सिटी में आप आए थे, तब क्या था आपके पास? सबकुछ यहीं रहकर पाया न! और अगर आपका पाया हुआ कोई चोरी करके ले गया तो उसके काम तो वह फिर भी नहीं आएगा। और आप चाहेंगे तो साल-दो साल में फिर वही रसायन तैयार करके दिखा देंगे और उसका सही-सही फॉर्मूला खोज लेंगे।''

''हूँ।'' प्रोफेसर साहब बोले, ''कोई बात नहीं, कोई बात नहीं।'' जैसे वे अपने ही दु:खी और जले हुए दिल पर मरहम लगा रहे हों और खुद-ही-खुद को समझा रहे हों।

अचानक वसंततिलके का ध्यान बेटे की ओर गया। बोले, ''अंशुल नहीं दिखाई

पड़ रहा नीला। कहाँ चला गया?''

''गया होगा किसी दोस्त के घर। आ जाएगा। आप अब सबकुछ भूलकर थोड़ा आराम कर लीजिए।'' कहकर नीला ने उनके पैरों के पास चादर लाकर रख दी। कहा, ''लेट लीजिए, मैं आपको घंटे दो-घंटे बाद उठा दूँगी।''

नीला ने प्रोफेसर साहब को अंशुल के बारे में अनुमान से ही बताया था। वरना वे स्वयं भी नहीं जानती थीं कि अंशुल इस समय किसी दोस्त के घर नहीं, बल्कि यूनिवर्सिटी में गया है और वह इस समय यूनिवर्सिटी के जूलॉजी डिपार्टमेंट में पापा के कमरे के चारों ओर सरसरी निगाह दौड़ाते हुए देख रहा था कि पापा का कमरा कहाँ से खोला जा सकता है। पापा के कमरे से केमिस्ट्री डिपार्टमेंट की दूरी कितनी है। और वहाँ से कैसे कोई आदमी यहाँ पहुँच सकता है! इस बीच उसने केमिस्ट्री डिपार्टमेंट के भी दो-एक चक्कर लगाए थे। और एक बार तो ऐसे ही अचानक गोखले साहब से भी उसकी मुलाकात हो गई थी। प्रोफेसर गोखले उसे देखकर चौंके थे और बोल पड़े थे, ''अरे, अंशुल, तू? तू कैसे दिखाई पड़ रहा है यहाँ! और तेरे पापा कहाँ चले गए अचानक? सब ठीक तो है न!''

''हाँ अंकल, सब ठीक है, सब ठीक।'' अंशुल ने कहा, ''बस, एक जरा सी गड़बड़ यह हुई कि किसी ने उनकी थीसिस पार कर दी। पापा इसी से परेशान हो गए, जबकि उसकी कॉपी मैंने पहले ही सी.डी. में डालकर रख ली थी। उनके पास सबकुछ है, कुछ भी खोया नहीं, फिर भी उन्हें धक्का लगा कि इस यूनिवर्सिटी में ऐसे लोग हैं, जो खुद तो कुछ करते-धरते नहीं, पर दूसरे का माल हड़पने के लिए इस कदर नीचे गिर सकते हैं···!''

''ओह सॉरी, सॉरी!'' गोखले साहब बोले, ''यह तो बहुत बुरा हुआ।''

''अंकल, आप क्यों सॉरी कह रहे हैं? आपने थोड़े ही ऐसा किया होगा।'' कहकर अंशुल ने अपनी तेज निगाहें गोखले साहब के चेहरे पर गड़ा दीं। पल भर में उनके पूरे शरीर से पसीना छूटने लगा और यह अंशुल से छिपा नहीं रहा।

''अच्छा अंकल, नमस्ते! कभी घर आइएगा।'' कहकर अंशुल आगे बढ़ गया। फिर उसने पीछे मुड़कर गोखले साहब को देखा। वे सड़क पर जा रहे थे, पर उनके पैर इस तरह डगमग थे, जैसे उन्हें किसी ने तीर से बेध दिया हो।

तो निशाना ठीक लगा? अंशुल ने जैसे मन-ही-मन अपने आपको शाबाशी दी। पर यह तो पहला तीर था। अभी दूसरा और निर्णायक तीर चलाने की तो बारी ही नहीं आई।

अंशुल ने फिर एक बार अंदर जाकर कॉरीडोर का चक्कर लगाया। पापा के

कमरे में साइडवाले दरवाजे के ऊपर बने वेंटीलेटर की खस्ता हालत उसने देखी। जरूर यहाँ से भीतर हाथ डालकर दरवाजे की कुंडी खोली गई होगी। 'मगर···मगर यही प्रयोग क्या फिर गोखले साहब के कमरे में नहीं हो सकता?' अंशुल ने सोचा तो उसे कुछ झुरझुरी सी आ गई।

और अब अंशुल को रात होने का इंतजार था। रात होने तक उसने बाहर लॉन में टहलते हुए समय बिताया और जैसे ही अँधेरा हुआ, वह डिपार्टमेंट की ओर चल पड़ा। चौकीदार हमेशा की तरह इस समय बाहर कुरसी पर ऊँघ रहा था। वह दबे पाँव भीतर गया और गोखले साहब के कमरे की ओर बढ़ा। तरीका उसे समझ में आ गया था। लिहाजा गोखले साहब का कमरा खोलने में उसे जरा भी देर नहीं लगी। उसने सावधानी से भीतर जाकर दरवाजा बंद किया और अब वह उनके कंप्यूटर के सामने बैठा था। तो इसी कंप्यूटर में डाला गया होगा, वह चोरी किया गया माल?

उसने आसपास रखी चीजों पर एक निगाह डाली। जरूर किसी सी.डी. में डालकर ही वह मैटर इसमें डाला गया है। काश, वह सी.डी. ही मिल जाती! पर सी.डी. शायद कहीं और हो या फिर लॉक्ड हो। मगर कंप्यूटर तो सामने था और यह खुल सकता था। मगर एक मुश्किल थी—पासवर्ड!

लेकिन अंशुल ने जिसने कंप्यूटर इंजीनियरिंग का कोर्स किया हुआ था, अच्छी तरह जानता था कि पासवर्ड आसानी से खोजा नहीं जा सकता, पर पासवर्ड तोड़ा तो जा सकता है। और बगैर पासवर्ड के अब कंप्यूटर खुल चुका था। उसने जल्दी से माई कंप्यूटर खोलकर आज की डेट में डाले गए मैटर पर गौर किया। देखा, एक नया फोल्डर वहाँ था—इम्मोर्टेलिटी। अरे यही तो था वह··· ! उसने फाइल को खोला तो कंप्यूटर के परदे पर आ गया—अमरता का रसायन। अभी तो उसके पापा का नाम भी वहाँ से नहीं मिटाया गया था। फाइल के पहले ही सफे पर अमरता का रसायन के नीचे प्रोफेसर वसंततिलके का नाम था। प्रोफेसर गोखले का नहीं।

शायद प्रोफेसर गोखले इतना डर गए थे कि जल्दी से मैटर कंप्यूटर में डालने के बाद डिपार्टमेंट से भाग गए कि कहीं उनपर थीसिस की चोरी का आरोप न मढ़ दिया जाए।

बस, अब काम आसान था। अंशुल ने अपने पास रखी खाली सी.डी. निकाली और पूरे-के-पूरे फोल्डर को कॉपी करके सी.डी. पर ले लिया। कुल पंद्रह मिनट!···कुल पंद्रह मिनट में पापा की थीसिस ब मय फॉर्मूलों और चित्रों के उसकी सी.डी. में बंद थी। उसने सावधानी के लिए एक और सी.डी. निकालकर उसकी एक और कॉपी दूसरी सी.डी. पर ली। फिर सबसे जरूरी काम··· ! उसने गोखले साहब के कंप्यूटर

से 'इम्मोर्टेलिटी' नाम का पूरा-का-पूरा फोल्डर डिलीट कर दिया।

फिर उसी तरह उसने साइड का दरवाजा बंद किया, वेंटीलेटर पहले की तरह उढ़काया और बाहर आ गया। प्रोफेसर गोखले के कमरे के मेन डोर पर अब भी उसी तरह बड़ा सा ताला लटक रहा था, मगर उनकी चोरी की सजा उन्हें दी जा चुकी थी।

□

अंशुल रात के ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे जब डगमग-डगमग करता घर आया, तो उत्तेजना के मारे उसकी हालत ऐसी थी कि देखकर प्रोफेसर वसंततिलके अपना दुःख भूल गए। एकदम से खड़े होकर बोले, ''क्या हुआ अंशुल, तुझे क्या हुआ? ठीक तो है न?''

''ठीक हूँ पापा, बिलकुल ठीक।'' अंशुल मुसकराया।

''कहाँ चले गए थे बेटा? मैं खाने के लिए कब से इंतजार कर रही हूँ!'' तब तक नीला भी आ गई थीं और प्यार से पूछ रही थीं।

''यों ही मम्मी, जरा घूमने चला गया था दोस्त के घर।''

प्रोफेसर साहब ने थोड़े मंद और निराश स्वर में कहा, ''अब पेपर आनेवाले हैं अंशुल, थोड़ा पढ़ना भी चाहिए। दोस्तों के यहाँ आना-जाना कुछ कम नहीं कर सकते क्या?''

''हाँ पापा, अब जल्दी ही मैं पढ़ाई में लग जाऊँगा, प्रॉमिस। आप अब आराम करिए पापा।'' कहकर अंशुल अब अपने कमरे में गया और अपने कंप्यूटर में पापा की थीसिस डालकर उसने सी.डी. का पूरा मैटर एक फोल्डर में सेव कर लिया। फिर गिनकर देखा, पूरे एक सौ सत्ताईस पेज। उसने थीसिस की एक कॉपी प्रिंटर पर निकाल ली।

फिर यही फोल्डर कॉपी करके उसने पापा के नामवाले फोल्डर में डाल दिया। वहाँ भी जब पूरी-की-पूरी फाइल ठीक-ठीक खुल गई तो पापा के पास जाकर बोला, ''पापा-पापा, आप परेशान क्यों हो रहे थे? आपकी थीसिस कहीं गई थोड़े ही है। यह देखिए, यह रही।''

प्रोफेसर वसंततिलके को उस समय गहरी नींद आ रही थी। लेकिन थीसिस का नाम सुनते ही इस तरह उठे और उछलकर खड़े हो गए, जैसे अभी वे पंद्रह साल के किशोर हों। साथ-ही-साथ अंशुल की मम्मी नीला की भी आँखें खुल गईं। प्रोफेसर साहब बोले, ''अंशुल, क्या कह रहे हो तुम?''

''पापा, आप चलकर अपना कंप्यूटर तो देखिए।'' अंशुल मुसकराया। ''आपने

अपनी थीसिस इम्मोर्टेलिटी वाले फोल्डर में रखी थी न! चलकर देखिए, आपके कंप्यूटर में इसी नाम से सेव है।''

''हाँ-हाँ, पर तुम्हें कैसे पता?'' प्रोफेसर साहब अचकचाए।

''आपने ही कभी बातों-बातों में बताया होगा।''

''मगर मैंने वह फोल्डर तो ऑफिसवाले कंप्यूटर में बनाया था। वह यहाँ घर कैसे आ गया?'' प्रो. वसंततिलके फिर उलझ से गए थे।

''हो सकता है पापा, आपने कभी घर पर भी सेव कर दिया हो।''

''नहीं बेटा, इतनी बड़ी बात मैं भूल कैसे सकता हूँ!''

''तो हो सकता है, चोर यह सोचकर कि घर पर आपको उस थीसिस पर कोई जरूरी काम करना है, आपके घरवाले कंप्यूटर में डाल गया हो।'' अंशुल मुसकराया।

''बेटे, तुम मजाक कर रहे हो और मैं इस कदर सीरियस हूँ—इस कदर।'' दुःख के मारे प्रोफेसर वसंततिलके का चेहरा काला पड़ गया।

''नहीं पापा, मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। आप मेरे साथ चलिए तो।''

□

तब तक नीलाजी भी वहाँ आ गईं। बोलीं, ''जो कुछ वह कह रहा है, आप देख तो लीजिए।''

तब मुश्किल से प्रोफेसर साहब कंप्यूटर की वह फाइल देखने को राजी हुए।

पर वहाँ जो कुछ उन्होंने देखा, उससे प्रोफेसर साहब की अजीब सी हालत हो गई। उत्तेजना के मारे ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे। और फिर खुशी, इतनी खुशी उन्होंने महसूस की जैसे अभी-अभी सबके सामने नाचने लगें।

''यह तो वही है, वही···हू-बू-हू वही। मेरी थीसिस। तूने कहाँ से खोजी रे अंशुल?''

''अरे पापा, सर्च में जाकर खोज ली। देखा तो यहाँ मौजूद निकली।''

''पर तुझे कैसे पता कि मैंने इम्मोर्टेलिटी नाम से सेव की है? जल्दी-जल्दी बता, तू कुछ छिपा रहा है।''

और पापा-मम्मी को ज्यादा हैरान देखा तो अंशुल ने वह पूरा किस्सा बयान कर दिया, ''पापा, जब आप कह रहे थे कि केमिस्ट्री के प्रोफेसर गोखले साहब बार-बार आपसे आपके थीसिस के बारे में पूछ रहे थे कि अमरता का रसायन कब पूरा होगा, तो मुझे लगा, डॉ. गोखले की दिलचस्पी के पीछे कुछ और भी मामला हो सकता है। इधर वे खुद तो कुछ काम करते नहीं और रात-दिन पॉलिटिक्स में लगे रहते हैं, तो जरूर उन्होंने अपना नाम चमकाने के लिए आपका थीसिस पार करने

की योजना बनाई होगी। यह तो वे जानते ही थे कि जिस काम में आप दस-बारह साल से लगे हैं, वह कोई मामूली काम नहीं हो सकता। और जब आपने उन्हें यह बता दिया कि आपने अभी तक सी.डी. पर उसका बैकअप नहीं लिया तो उन्हें और भी शह मिल गई। उन्होंने सोचा होगा कि क्या सबूत कि यह खोज प्रोफेसर वसंततिलके ने ही की है ? जिसके नाम से आर्टिकल छपेगा, वही उसका आविष्कार करनेवाला कहलाएगा। लिहाजा उन्होंने आपकी थीसिस चुराई। आपके कंप्यूटर से डिलीट की और अपने कंप्यूटर में डाल ली। सोचकर कि इसे आगे चलकर किसी जाने-माने इंटरनेशनल या जनरल में छपा दिया जाए।''

''पर पापा, आप ही बताते थे न कि ज्ञान की चोरी नहीं हो सकती। भले ही कोई कितनी ही तिकड़म लगाए। प्रोफेसर गोखले में तो इतनी भी कूवत नहीं कि आपकी खोजी गई बातों की वह व्याख्या भी कर पाते। अपने नाम से वे थीसिस छपाते तो और भी फँसते। पर चोर को जैसी सजा मिलनी चाहिए थी, वैसी आज मिल गई। कल वे अपना कंप्यूटर खोलेंगे तो उनको सब पता चल जाएगा कि···''

''ओह!'' इतने समय से जड़ बैठे प्रोफेसर वसंततिलके ने लंबी साँस ली। बोले, ''गोखले ऐसा निकलेगा, मुझे आशा न थी। पर बेटे अंशुल, तुमने अच्छा किया, चोर को आईना दिखा दिया।''

फिर एकाएक प्रोफेसर साहब को अपने अंदर शक्ति का समंदर जागता हुआ नजर आ गया। बोले, ''नीला, मैं थक गया था। लग रहा था जीवन बेकार जाएगा। पर मेरे बेटे अंशुल ने फिर मुझे आशा दे दी है। अमरता की खोज अब होगी, बिलकुल होगी। पर उसका श्रेय मुझसे ज्यादा अंशुल को जाएगा। थीसिस चोरी न होती तो शायद मैं इसका ठीक-ठीक महत्त्व इतना न समझ पाता, पर मैं अब इसे रात-दिन लगकर पूरा करूँगा और छपाऊँगा।''

''पापा, आप इतने ब्रिलिएंट हैं, तो आपका बेटा एक छोटी-मोटी जासूसी तो कर ही सकता है। मैंने ऐसा क्या खास कर दिया!'' अंशुल ने कहा, तो प्रोफेसर साहब ने प्यार से उसका माथा चूम लिया। श्रीमती नीला वसंततिलके दूर खड़ी मुसकरा रही थीं।

□

मंगल-ग्रह की लाल चिड़िया

सुहासपुर के लोग नीली आँखोंवाली उस अजीबोगरीब लाल चिड़िया से सबसे ज्यादा परेशान थे।

यह एक छोटी, बहुत छोटी सी लाल चिड़िया थी, जिसकी गरदन पर सफेद धारियाँ थीं और पंखों पर सफेद चक्र बने थे। चिड़िया के पैर भूरे और चोंच सुनहरी थी।···ऐसी चिड़िया, जो पहले कभी किसी ने देखी न थी।

शुरू में वह सुहासपुर के खूब बड़े से महात्मा गांधी पार्क में दिखाई दी। सर्दियों की सुबह!···पार्क में एक ओर कुछ छोटे बच्चे धूप में आँखमिचौनी खेल रहे थे। दूसरे कोने में कुछ बच्चे तितलियों का पीछा कर रहे थे। पार्क की उत्तर दिशा में एक बड़ा मैदान था, जहाँ मोहल्ले के कुछ बड़े बच्चों का क्रिकेट-मैच जमा था। और उस मैच में बिट्टू ऐसे बढ़िया शॉट्स लगा रहा था कि सभी को सचिन के चौकों-छक्कों की याद आ रही थी। इससे थोड़ी ही देर पहले नील ने अपनी शानदार बॉलिंग से सिर्फ इकतीस रन देकर दूसरी टीम के चार विकेट उड़ा दिए थे।···उसकी टीम के लोग बहुत खुश और उत्साहित थे और तय नहीं कर पा रहे थे कि उसे 'इरफान पठान' की उपाधि दी जाए या फिर 'अनिल कुंबले' की!

सुहासपुर के महात्मा गांधी पार्क में ऐसा मस्ती भरा माहौल था, जब वह अजीबोगरीब लाल चिड़िया दिखाई दी थी और उसे देखने के बाद न जाने छोटे-बड़े सभी बच्चों पर कैसे जादू हुआ कि सभी अपना-अपना खेल भूलकर उस सुंदर, लुभावनी लाल चिड़िया के पीछे दौड़ पड़े।

पर चिड़िया जरा भी नहीं डरी। बच्चे पास आए तो वह नीचे घास के मैदान से उड़ी और फुदककर चंपे की ऊपरवाली डाल पर जा बैठी और मजे से अपना गाना गाने लगी, ''तिरु-तिरु-तिरु···तिरु-तिरु तिरुक्क···!''

अजीब सा गाना था, जैसा बच्चों ने पहले कभी सुना न था।

अजीब सी चिड़िया थी, जैसी बच्चों ने पहले कभी देखी न थी। और-तो-और, उसके बारे में पहले किसी से कभी कुछ सुना भी न था।

''यह शायद मैना है, मैना··· ! मैंने सुना है कि पहले एक सुंदर सी चिड़िया होती थीं मैना, जो आदमियों की आवाज में भी बोलती थी। आजकल थोड़ी कम हो गई है।'' मीना ने अपना ज्ञान बघारा।

''नहीं-नहीं, मैना ऐसी थोड़े ही होती है, बुद्धू! किसने तुझसे कहा कि मैना लाल रंग की होती है?'' बिट्टू ने उसका मजाक उड़ाया।

''पर पक्षी रंग भी तो बदल लेते हैं। मैंने किसी किताब में पढ़ा था!'' अमित ने भी अपना पक्ष रखा।

''हाँ जी, हाँ! तब तो कल कोयल काली नहीं, सफेद होने लगेगी। और बगुला काला, हा-हा हा!'' नीतू ने मजाक उड़ाया।

''मगर यार, पकड़ो इसे···जैसे भी हो!''

''बातें कम करो, पकड़ो!''

''यह तो ऐसी है कि देखते रहो तो जी न भरे।'' नील ने कहा, ''पकड़ो मत, इसके साथ खेलो। देखो, यह हमें खेलने के लिए बुला रही है।''

''नहीं-नहीं, मैं तो इसे पकड़ूँगा।'' चिंटू ने कहा।

''तो फिर पकड़, पकड़ता क्यों नहीं?''

''पकड़ तो लूँ, पर बेचारी मर जाएगी।···अच्छा चलो, कोई पिंजरा ले आएँ।'' चिंटू ने कहा और पेड़ पर चढ़ने लगा।

पर वह अनोखी लाल चिड़िया उड़ी नहीं। उसी तरह निर्भय होकर उसे देखती रही, जैसे कहना चाहती हो, ''हिम्मत है तो पकड़ो···पकड़कर दिखाओ!''

चिड़िया की आँखों की चंचलता गायब हो चुकी थी और इस समय उसकी आँखों में सख्त चेतावनी थी।

चिंटू पेड़ पर चढ़ा तो वह लाल चिड़िया उसी तरह सख्ती से ललकारते हुए उसे देखती रही। चिड़िया को यों अपनी ओर एकटक देखते पाया तो चिंटू की हिम्मत जवाब दे गई। वह झट पेड़ से नीचे उतर आया। बोला, ''यार, पेड़ की डाल कच्ची है। लगता है टूट जाएगी।''

इसपर सब बच्चे एक साथ हँसे और लगा कि चिड़िया भी साथ-साथ हँसी, ''तिरु-तिरु-तिरु···तिरु-तिरु-तिरुक्क··· !''

बेचारा चिंटू शर्मिंदा हो उठा।

फिर चिड़िया खुद-ब-खुद पेड़ से नीचे उतर आई और घास के मैदान में

इधर-उधर फुदकने लगी। अब फिर बच्चे एक साथ दौड़े और उस अनोखी चिड़िया को घेरकर खड़े हो गए। वे उस चिड़िया को पकड़ना चाहते थे, पर चिड़िया अब भी पकड़ाई में नहीं आ रही थी। बच्चे अपनी छुआ-छाई भूल चुके थे और अब एक नई छुआ-छाई शुरू हो चुकी थी।

''कुछ भी हो, चिड़िया है तेज! मैं तो सोचता था कि पकड़ाई में आ जाएगी पर···!'' चिंटू कह रहा था।

बच्चों को ज्यादा बेसब्र देखा तो चिड़िया फिर पेड़ की ऊपरवाली डाल पर बैठ गई और मुसकराने लगी।

''लगता है, हम परेशान हो रहे हैं और इसे हँसी आ रही है।'' बीरू बोला, ''मैं इसे पत्थर मारकर भगाता हूँ।''

''नहीं-नहीं, बीरू, नहीं!'' और बच्चों ने समझाया, पर बीरू नहीं माना।

जमीन पर पड़ी एक कंकड़ी को उठाने के लिए वह झुका। फिर उठकर उस कंकड़ी को जोर से चिड़िया की ओर उछालना चाहा···कि अचानक चिड़िया गुस्से में बोली, ''तिरुक्क-तिरुक्क-तिरुक्क···! और उड़ गई।''

और इधर बीरू की हालत अजीब थी। कंकड़ी उसके हाथ से ऐसे चिपक गई थी, जैसे कि बारीक तारों से उसे हथेली से बाँध दिया गया हो।

एक बच्चे को याद आया, उड़कर जाने से पहले चिड़िया गुस्से में तीन बार बोली थी, ''तिरुक्क-तिरुक्क-तिरुक्क···!'' तो क्या यही वजह तो नहीं कि···?

: 2 :

बीरू को साथ लेकर सारे बच्चे उसके घर आए। बीरू के मम्मी-पापा ने उसकी हालत देखी तो बुरी तरह परेशान हो गए। उसकी मम्मी तो रोने ही लगी, ''अरे, यह क्या बला चिपक गई मेरे बेटे के साथ!''

झटपट बीरू को नर्सिंग होम ले जाया गया। डॉक्टरों ने बीरू का यह अजब हाल देखा तो चकरा गए। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि कंकड़ हथेली में चिपक कैसे सकता है?···उन्हें सुनहरी धातु के तीन बारीक-बारीक तार भी दिखाई पड़ रहे थे, जिनसे वह कंकड़ी मानो हथेली से बाँध दी गई। पर हैरानी की बात यह है कि न तो तार काटे जा सके थे और न कंकड़ी किसी तरह हथेली से अलग हो पा रही थी।

''अगर किसी तरह इस कंकड़ी को ही तोड़ दिया जाए, तो···!'' एक सीनियर डॉक्टर ने सुझाव दिया। पर आश्चर्य, उस कंकड़ी पर जरा भी कोई चोट मारी जाती तो बीरू बिलबिला उठता।···जैसे वह कंकड़ी कंकड़ी न रही, उसके शरीर का

जीवित हिस्सा हो गई हो।

डॉक्टर बार-बार बीरू से पूछ रहे थे कि हुआ क्या था? और बीरू ने जो कुछ बताया, उसपर किसी को यकीन नहीं आ रहा था। पर अकेला बीरू ही क्यों, उस समय पार्क में मौजूद दर्जनों बच्चे भी तो यही कह रहे थे।

आखिर ''कुछ दिन बाद आकर फिर दिखाना!'' वाली चालू हिदायत देकर डॉक्टरों ने बीरू को घर भेज दिया और यों पिंड छुड़ा लिया। उधर बीरू अकेले में कान पकड़कर माफी माँग रहा था। बड़ी गलती हुई, हाय, मैंने उस सुंदर चिड़िया को मारने के लिए कंकड़ी उठाई ही क्यों थी?

ऐसे ही दो-तीन दिन गुजरे। बीरू झेंप के मारे स्कूल भी नहीं जा रहा था। सोच रहा था, स्कूल गया और बच्चों ने इस कंकड़ी के बारे में पूछना शुरू कर दिया, तो क्या जवाब दूँगा।

आखिर एक दिन डरते-डरते बीरू फिर उसी पार्क में पहुँच गया। आज पार्क खाली था, क्योंकि ज्यादातर बच्चे स्कूल गए थे। बीरू उदास सा पार्क में टहल रहा था कि अचानक फिर उसे वही चिड़िया दिखाई दी।···बीरू डर के मारे सिहर गया। सोच रहा था, आज कोई और मुसीबत न खड़ी हो जाए।

पर आश्चर्य, लाल चिड़िया उसे एकटक देख रही थी और आज उसकी आँखों में नाराजगी नहीं, प्यार था। बीरू जिस बैंच पर बैठा था, वह उसके सामने लाल गुलाब के पौधे पर आकर बैठ गई। और मजे में झूमते हुए गाने लगी, ''तिरु-तिरु-तिरुक्क···तिरु-तिरु तिरुक्क···तिरु-तिरु···!''

चिड़िया का गाने का ढंग इतना मजेदार था कि अचानक बीरू की हँसी छूट गई, जैसे वह अपना सारा दुःख भूल गया हो···

पर जैसे ही उसकी हँसी थमी, उसे हैरानी हुई, यह क्या! वह कंकड़ी तो कब की छूट गई।···फिर चिड़िया और बीरू पार्क में देर तक खेलते रहे। चिड़िया गाती रही, फुदकती रही और बीरू भी उसके साथ झूमता-गाता रहा। यहाँ तक कि आज तो उसने चिड़िया को प्यार से गोद में बिठाकर उसके नरम-नरम पंखों पर हाथ भी फेरा। उसे बड़ी गुदगुदी महसूस हुई।

बीरू पार्क से घर लौटा तो वह इतना खुश था कि मजे में झूम-झूमकर गाना गाने लगा, ''तिरु-तिरु-तिरु···!'' पहले तो बीरू की मम्मी कुछ समझी नहीं, पर फिर जब बीरू के दाहिने हाथ पर उनका ध्यान गया तो वे मारे खुशी के चीख उठीं, ''अरे बीरू, तेरी वह कंकड़ी तो हथेली से छूट गई···कैसे?'' बीरू ने पूरी बात बताई तो उन्होंने प्यार से उसे पुकारा। कहा, ''बेटे, वह कोई चमत्कारी चिड़िया

लगती है। आज से तू कसम खा ले, कभी किसी चिड़िया को पत्थर नहीं मारेगा।''

शाम को बीरू के पापा घर आए तो वे भी इस अनाखे चमत्कार के बारे में सुनकर चकित रह गए। बोले, ''अभी मैं नर्सिंग होम के डॉक्टरों के पास जाता हूँ।···वे कह रहे थे, चिड़िया की बात पूरी गप्प है। अब बताओ भला, वह कंकड़ी कैसे छूट गई···बिना ऑपरेशन के!''

यह तो बीरू की मम्मी ने रोका, वरना वे उसी समय बीरू को साथ लेकर नर्सिंग होम जा रहे थे। पर···आश्चर्य! रात होते-होते बात इतनी तेजी से पूरे सुहासपुर में फैल गई कि नर्सिंग होम के तीन सीनियर डॉक्टर जिनमें चीफ सर्जन मि. सेठानी भी थे, खुद-ब-खुद घर आ गए। उन्होंने बीरू की हथेली देखी। वहाँ किसी किस्म का कोई निशान न था।···तो यह क्या हुआ? कैसे···! उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

: 3 :

होते-होते पूरे सुहासपुर में उस अनोखी लाल चिड़िया की कहानी फैल गई। जिससे भी पूछो, वह अब बता देता कि प्यारे भाई, वह एक छोटी सी सुंदर सी लाल चिड़िया है, जिसकी गरदन पर सफेद धारियाँ हैं और दोनों पंखों पर दो सफेद चक्र बने हैं।

''कहीं यह चिड़िया किसी ने खास मकसद से भेजी न हो!'' एक कहता।

''हाँ, मुझे भी लगता है। कहीं यह दूत तो नहीं है किसी दूसरे ग्रह की?···हम धरतीवालों के लिए कोई खास संदेशा लेकर आई हो।''

''मुझे तो लगता है, यह किसी तांत्रिक या जादूगर का कमाल है।···''

''आजकल बड़े देशों में जासूसी के बड़े अजब-अजब तरीके अपना लिये गए हैं। हो सकता है, अमरीका से···'' यों बातों से बातें निकल रही थीं और सुहासपुर के अखबार उस चिड़िया के बारे में अजीबोगरीब किस्से-कहानियों और वर्णन से भरे थे। एक-दो ने तो बच्चों से उसके बारे में सुनकर कल्पित स्केच भी बनवा लिये थे और हर बार खबर के साथ उन्हें प्रमुखता से छापते थे। इन खबरों में बार-बार एक बात आती थी कि सुहासपुर के बच्चे इस चिड़िया के दीवाने हैं और चिड़िया भी इन बच्चों को खूब प्यार करती है।

ज्यादातर अखबारों ने लिखा था, ''यह सचमुच दोस्त चिड़िया है। पर इसे पकड़ने की कोशिश न करें, नहीं तो यह खतरनाक भी साबित हो सकती है!···''

'प्रभात खबर' ने एक दिलचस्प घटना के जरिए अपनी पूरी रिपोर्ट लिखी। उसमें लिखा गया—

''यह एक अजब वाकया है। इसे सच मानने को जी तो नहीं करता, पर यह सच ही है। हमारे संवाददाता ने खुद पार्क में जाकर देखा।···बच्चे खेल रहे थे और बच्चों के साथ यह खूबसूरत जादूगरनी सी लाल चिड़िया भी। बच्चे इसके पंखों पर, जहाँ सफेद चक्र बने हैं, बार-बार उँगलियों से गुदगुदी करते और चिड़िया की आँखों से एक प्यारी सी हँसी छलक उठती।··· वह मजे से गाना गा रही थी। तभी एक बच्चे ने सोचा, अब तो यह चिड़िया इतने पास है, अगर मैं पकड़ लूँ तो···? लेकिन आश्चर्य, बच्चे ने पकड़ने की कोशिश की और उसे हाथों से दबोचना चाहा तो अचानक उसके पंखों के नरम रोएँ काँटों में बदल गए। जहाँ उसके पंखों के सफेद चक्र हैं, वहाँ से इतने गरम रेडिएशंस निकले कि अचानक बच्चे को लगा, जैसे उसका हाथ झुलस गया हो। चिड़िया की आँखें उस समय हमेशा की तरह नीली नहीं, बल्कि लाल अंगारों जैसी लग रही थीं।···देखकर बच्चा डर के मारे भाग गया। चिड़िया थोड़ी देर असहज रही। पर जल्दी ही वह फिर पहले जैसी हो गई और बाकी बच्चों के साथ बड़े प्यार से खेलती रही, मानो अनकहे वह यह कह रही हो कि मैं तो शांति और प्यार की दूत हूँ और प्यार का संदेश देने इस धरती पर आई हूँ। पर जो मुझे पकड़ने या मुट्ठी में कैद करने की कोशिश करेगा, उसके लिए मैं चिड़िया नहीं, काल हूँ, काल!''

धीरे-धीरे उस लाल चिड़िया के बारे में इतनी बातें कही जाने लगीं कि अगर कोई लिखता तो पूरा एक उपन्यास बन जाता। यह एक साथ प्यारी और सख्त चिड़िया थी, जैसी पहले धरती पर कभी न देखी गई थी। वैसे तो ज्यादातर बच्चे इस चिड़िया के नरम पंखों की तारीफ करते थे, पर जिस किसी दुष्ट बच्चे को इसके पंखों में छिपे लोहे जैसे काँटों ने छलनी किया, वह भी शायद इसे जीवन भर भूल न पाएगा। यों भी इस चिड़िया की सबसे बड़ी खासियत तो यह थी कि वह बच्चों के मन के भाव बहुत जल्दी पढ़ लेती थी। किसी बच्चे की ओर हँसकर देखती तो किसी को लगता जैसे डाँट रही हो।

लोगों की उस चिड़िया के बारे में अलग-अलग तरह की राय थी। कुछ लोगों का मानना था, यह किसी और ग्रह से आई दूत चिड़िया है। यह अपनी जुबान में हमसे कुछ कहना चाहती है, पर हमीं शायद समझ नहीं पा रहे।

किसी-किसी ने कहा, 'तिरु-तिरु तिरुक्क' का मतलब है, ''नमस्ते···खुश रहो।''

लोगों ने अपने बड़े बुजुर्गों से पूछा, ''क्या आपने अपने जीवन में पहले कभी ऐसी चिड़िया देखी है? पर बड़े बुजुर्गों तक ने न में सिर हिला दिया।

कुछ लोगों ने शिकारियों से पूछा, ''क्या आप लोगों ने जंगल में या दूर पहाड़ों की घाटियों में कभी ऐसी कोई चिड़िया देखी है?'' पर शिकारियों ने भी अचरज के साथ कहा, ''नहीं।''

किसी-किसी ने सालिम अली की विश्वविख्यात किताबें खोलकर इस तरह की चिड़िया को ढूँढ़ने की कोशिश की, पर उन्हें भी सफलता नहीं मिली।

चिड़िया के दोनों पंखों पर सफेद रंग के गोल चक्र थे।···इसका क्या मतलब हो सकता है? इसपर लंबी बहस चली। अंत में इसकी यही व्याख्या लोगों ने स्वीकार की कि यह चिड़िया 'विश्व-दूत' है। देशों की सीमाएँ इसके लिए नहीं हैं। यह सारी दुनिया में शांति और प्यार का संदेश देने निकली है।···गोल चक्र इसी का प्रतीक है!

मगर इसे सुहासपुर का यह महात्मा गांधी पार्क ही इतना क्यों भा गया कि अकसर यह यहीं उड़ानें भरती और फुदकती दिखाई पड़ती है?···

''और फिर एक सवाल यह भी है'', महात्मा गांधी पार्क में खड़े एक बुजुर्ग अपने आसपास खड़े लोगों और बच्चों से कह रहे थे, ''कि भले ही यह विश्व-दूत हो, मगर यह आई कहाँ से?''

''हाँ-हाँ, यह आई कहाँ से?'' लोगों ने चौंककर एक-दूसरे से पूछना शुरू किया।

तब बिट्टू ने अपना दिमाग दौड़ाया। बोला, ''मैं बताता हूँ।···यह चिड़िया मंगल-ग्रह से आई है!''

इसपर लोग हँसे। पूछा, ''बिट्टू, तुझे कैसे पता?''

बिट्टू थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला, ''पता नहीं, पर मेरा दिल कह रहा है कि यह मंगल-ग्रह से आई है!''

किसी और ने कहा, ''बिट्टू ठीक ही तो कह रहा है। देखते नहीं हो, यह चिड़िया लाल रंग की है। मंगल-ग्रह भी तो लाल है।'' तब बुजुर्ग से दिखनेवाले एक सज्जन ने बिट्टू से पूछा, ''बिट्टू, क्या इसी वजह से तुम कह रहे थे कि यह मंगल-ग्रह से आई है?''

बिट्टू बोला, ''पता नहीं। बस अभी-अभी मेरे मन में आया कि कह दे बिट्टू, यह मंगल-ग्रह से आई है। और मैंने कह दिया।''

जब वह कह रहा था तो एकाएक सबका ध्यान फिर उस लाल चिड़िया की ओर गया। इस वक्त वह सामनेवाले आम के पेड़ पर बैठी मजे में गा रही थी, ''तिरु-तिरु-तिरुक्क··· तिरु-तिरु-तिरुक्क!''

''जरूर इस चिड़िया ने ही कहा होगा तुझसे कि कह दे बिट्टू, कह दे!'' नील ने बिट्टू के कान में फुसफुसाकर कहा।

''हाँ-हाँ, इसी चिड़िया ने कहा था, बड़ी मीठी बोली में।'' बिट्टू ने कहा, तो सब हँस पड़े।

किसी-किसी ने इस चिड़िया का सुहासपुर पर मँडरानेवाली 'अशुभ छाया' कहा, किसी ने दुश्मन की जासूस भी।

''अरे, देखते क्या हो, हिम्मत करो, पकड़ो और मार दो।'' एक पहलवान जैसे आदमी ने मुट्ठी तानकर कहा, ''एक जरा सी चिड़िया ने लोगों को पागल बना रखा है।''

इसपर लोगों ने हिकारत से उस आदमी की ओर देखा। वह कोई और नहीं, बल्कि नत्था पहलवान ही था, जो खासा घमंडी था। पर पहलवान ऐसे कैसे मान जाता! उसके साथ दस-बारह चेले-चपाटे भी थे। उसने सबको ललकारा। सबने एक साथ दंड-बैठक लगाई और उछलते-कूदते हुए आगे बढ़े, जैसे दुश्मन का किला फतह करने जा रहे हों।

पर चिड़िया उसी तरह निर्भय आँखों से उन्हें देखती रही, अडोल बैठी रही। पहलवान और उसके चेलों ने उछल-उछलकर पेड़ की शाखाएँ पकड़ीं और ऊपर चढ़ने लगे। चिड़िया ने कुछ नहीं किया। बस, एक बार आँखें घुमाकर उनकी तरफ देख भर लिया···और लो, पार्क में एक अनोखा अजूबा नजर आने लगा। जो जिस तरह पेड़ की शाखाएँ पकड़कर ऊपर चढ़ रहा था, वह वैसा-का-वैसा टँगा रह गया। चिड़िया की आँखों से निकले तेज रेडिएशंस ने उन्हें इस तरह पेड़ से जकड़ दिया, जैसे बारीक सुनहरे तारों से उन्हें पेड़ के साथ सी दिया गया हो! और ये बारीक तार किसी ऐसी धातु के थे, जिसका लोगों को कुछ पता नहीं था।

: 4 :

पूरे दिन यह अजीबोगरीब नजारा पार्क में लोगों को नजर आता रहा। आसपास लोगों की भारी भीड़ हो गई और उनमें साइंस के प्रोफेसर, डॉक्टर, इंजीनियर वगैरह भी थे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि यह चक्कर क्या है? इस घटना को वे क्या नाम दें!

चिड़िया अब भी उस पेड़ की सबसे ऊपरवाली डाल पर बैठी थी। पर अब वह कुछ बोल नहीं रही थी और खूब गुस्से में लगती थी।

कुछ लोग खासकर बच्चे चिड़िया से मिन्नतें कर रहे थे कि वह नत्था पहलवान और उसके चेलों को माफ कर दे। लग रहा था कि चिड़िया ने उनकी बातें सुनकर

गुस्सा थूक दिया है और अब थोड़ी शांत है···पर चौधरी करतार सिंह ने फिर मामला उलट दिया। वे अपनी बंदूक लेकर आ गए। बोले, ''हैं रे भई, तुम लोगों ने मेरा सिर खा लिया कि चिड़िया···चिड़िया··· चिड़िया! जैसे चिड़िया न हो गई, डायन हो गई। मैं इसका खेल अभी खत्म किए देता हूँ।'' कहकर चौधरी करतार सिंह ने अपनी बंदूक से निशाना साधा और बंदूक का घोड़ा दबाने ही वाले थे कि अचानक ऐसा चक्कर आया कि जमीन पर आ गिरे···और अब बंदूक उनके हाथों में ऐसे चिपक गई थी कि लाख कोशिश की छुड़ाने की मगर वह छूटने का नाम ही न लेती। उनके परिवार के लोग बुरी तरह रो रहे थे और करतार सिंह की हालत ऐसी थी कि दिल करता था, धरती फटे और वे उसमें समा जाएँ।

उस दिन चिड़िया उड़ी नहीं, अपनी जगह से हिली भी नहीं। वहीं डटी रही और मारे गुस्से के, तीखे स्वर में गाती रही, ''तिरु-तिरु-तिरु···तिरु-तिरु-तिरुक्क··· !''

कुछ औरतों ने कहा, ''यह गुस्से में शाप दे रही है।···''

चिड़िया को प्रसन्न करने के लिए कुछ औरतें थालियों में मंगल-दीप सजाकर ले आईं। आगे-आगे बच्चे थे। उन्होंने मधुर गाने गाकर चिड़िया को प्रसन्न किया, तो चिड़िया फिर पहले की तरह चहचहाई, ''तिरु-तिरु तिरु··· ! और देखते-ही-देखते पार्क में नजारा बदल गया। नत्था और उसके साथ के पहलवान सिर झुकाए पार्क से वापस जा रहे थे। करतार सिंह के हाथों से बंदूक छूट गई थी, पर अभी घाव थे। चुपचाप थके कदमों से वे भी वापस चल पड़े। हाँ, बच्चे खुश थे और चिड़िया के साथ झूम-झूमकर गा रहे थे, ''तिरु-तिरु-तिरु···तिरु-तिरु-तिरुक्क··· !

अब तो सुहासपुर का शायद ही कोई कोना हो, जहाँ उस जादूगर चिड़िया की चर्चा न हो। लोग परेशान नजरों से एक-दूसरे की ओर देखकर पूछते थे, ''आखिर क्या चाहती है वह? क्यों आई है? अपनी बात साफ-साफ क्यों नहीं कहती?···कहीं यह कोई प्रेतात्मा तो नहीं, जो चिड़िया की शक्ल में ढल गई हो···या फिर कलियुग में ईश्वर ने अपना दूत··· ?''

तरह-तरह की बातें! बातों में और बातें। इस तरह कुछ दिन और गुजरे और ये सचमुच पहेलियों जैसे दिन थे।

फिर एक दिन उस पहेली के हल की एक छोटी सी कुंजी भी मिल गई। यह लाल रंग का छोटा सा खत था, जिसमें मोती जैसे सफेद अक्षरों में एक संदेश लिखा हुआ था। यह खत नील को मिला था। जब वह सुबह उठा तो उसके सिरहाने एक लाल रंग का सुंदर सा लिफाफा पड़ा था। उसने झटपट खोला तो अंदर से खत

निकला, जिस पर लिखा था—

'प्रिय नील,

मैं मंगल-ग्रह का तुम्हारे जैसा ही एक छोटा सा बच्चा आस्तिक हूँ। मुझे तुम्हारे बारे में उस लाल चिड़िया ने बहुत अच्छी तरह बता दिया, जिसे तुम जानते ही होंगे। वह चिड़िया जब-जब आती है, तुम्हारी शराफत और भोलेपन की तारीफ करती है। इसीलिए लगा, तुम्हें यह पत्र लिखा जाए। शायद उस चिड़िया को लेकर तुम्हारे यहाँ काफी उथल-पुथल है। इसलिए कि तुम उसका संदेश नहीं समझ पा रहे हो। यह खत लिखना इसीलिए जरूरी लगा। वह चिड़िया···वह सुंदर लाल चिड़िया, जैसा कि तुम्हारे यहाँ बिट्टू ने एक दिन कहा था, मंगल-ग्रह की ही चिड़िया है। इसे पकड़ने की कोई कोशिश न करे, क्योंकि यह आणविक-शक्तियों से पूर्ण चिड़िया है। यह चाहे तो एक क्षण में हजारों लोगों को अपनी अणु-शक्ति से नष्ट कर दे, हालाँकि इसे सिखाया गया है कि अपने सफेद गोलकों और आँखों में छिपे अणु-अस्त्रों का इस्तेमाल इसे सिर्फ संकट के समय अपने आपको बचाने के लिए ही करना है।

यह हमारी शांति-दूत चिड़िया है, जो मेरा और मेरे जैसे लाखों मंगलवासियों का शांति का संदेश धरती के लोगों के लिए लेकर आई है। इस खत के साथ एक सी.डी. भी है, जिसमें मंगल-ग्रह की भव्य इमारतों और प्रकृति की सुंदर दृश्यावलियाँ हैं। इससे हम लोगों के घर, रहन-सहन, व्यक्तित्व और वेशभूषा भी तुम्हें पता चलेगी।···खासकर यहाँ के सुंदर बच्चों के मुखमंडल, जो धरती के बच्चों से दोस्ती के लिए बेकरार हैं। हो सके तो तुम भी एक छोटा सा पत्र लिखो, जो यह चिड़िया हम तक पहुँचा देगी।···अगर तुम भी एक ऐसी ही सी.डी. भेज सको धरती के बारे में, तो क्या कहने?

शुभकामनाओं सहित

तुम्हारा नया दोस्त आस्तिक'

: 5 :

नील ने बार-बार उस छोटे से खत को पढ़ा, जिसमें सचमुच सीधी-सच्ची निश्छल भावनाएँ थीं। खत बहुत अच्छी लिखाई में था और उसपर मंगल-ग्रह के किस्म-किस्म के फूलों के चित्र बने हुए थे।

नील ने उसी समय एक सुंदर से सफेद कागज पर उस खत का जवाब लिखा—

'प्यारे आस्तिक, तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि इस सुंदर लाल चिड़िया को धरती पर अब सभी प्यार करने लगे हैं। हममें से बहुतों की पहले ही राय थी कि यह चिड़िया जरूर मंगल-ग्रह से आई होगी। अब तुम्हारे खत से तो बात बिलकुल साफ हो गई।''हम धरती के बच्चे तुमसे मंगल-ग्रह के दूसरे लोगों से मिलने के लिए इतने ही व्याकुल हैं। तुम्हारी भेजी हुई सी.डी. देखूँगा, फिर विस्तार से पत्र लिखूँगा। धरती के सुंदर दृश्यों की एक सी.डी. भी जल्दी ही भेजूँगा।

सस्नेह—तुम्हारा मित्र नील'

नील ने अपना खत तहकर एक लिफाफे में रख दिया और सोचने लगा, 'काश, वह चिड़िया अभी यहाँ आ जाती!' और यह सोचते ही झट से कमरे के अंदर उसे वही लाल चिड़िया दिखाई दी। उसने अपनी चोंच में खत को दबाया और आसमान में उड़ गई।

नील के पापा ने उसी शाम चिड़िया का वह पत्र सुहासपुर के अखबार 'प्रभात समाचार' में छपवा दिया। साथ ही मंगल-ग्रह से आई सी.डी. के बारे में भी लिखा। शाम तक हालत यह थी कि नील के घर के सामने हजारों लोग जमा थे, जो मंगल-ग्रह से आई सी.डी. देखना चाहते थे। एक बड़े स्क्रीन पर प्रोजेक्शन की तैयारियाँ हुईं और सबने पहली बार मंगल-ग्रह के लोगों को चलते-फिरते बोलते और हँसते देखा। उनके खूबसूरत मकान, दफ्तर, महल, इमारतें, पेड़ और रंग-बिरंगे फूल देखे। देख-देखकर लोग अघा नहीं रहे थे।

अगले दिन के अखबारों में इसे 'वैज्ञानिक दुनिया का एक बड़ा चमत्कार' कहा गया कि 'जिस मंगल-ग्रह को सिर्फ सूखे पत्थरों का ग्रह कहा जाता है, वहाँ इतना जीवन, इतनी हरियाली और इतनी धूमधाम है—और यही नहीं, वहाँ का विज्ञान धरतीवासियों से कहीं आगे पहुँचा हुआ है!'

फिर तो हालत यह हुई कि रोज धरती से कोई-न-कोई संदेश मंगल-ग्रह तक जाता और मंगल-ग्रह से धरती तक आता। जो मंगल-ग्रह पर जीवन की कल्पना को गप मानते थे, अब उन्हें भी यकीन हो गया था कि वे इस रहस्यमय ग्रह को ठीक से नहीं समझ पाए थे। उस ग्रह के चारों ओर पत्थर जरूर हैं, लेकिन बीच में जीवन की धारा भी बह रही है और लोग हजारों सालों से यहाँ रहते आ रहे हैं, बल्कि निरंतर तरक्की भी कर रहे हैं।

सुहासपुर के युवा वैज्ञानिक योगेश कुमार ने यही बात एक बार अपने खत में लिख भेजी थी। उसने लिखा, ''अभी तक के हमारे शोधों से तो यह निष्कर्ष

निकलता था कि मंगल-ग्रह पर कतई जीवन नहीं है, पर अब···यह चमत्कार! यकीनन चमत्कार!!''

इसपर मंगल-ग्रह की एक महिला वैज्ञानिक सुशांतिका का जवाब बड़ा ही कमाल का था। उसे सुहासपुर के सभी अखबारों ने पहले पन्ने पर सुर्खियों में छापा। मिस सुशांतिका ने लिखा—

'श्रीमान् योगेश कुमारजी,

आपका प्यारा सा जिज्ञासापूर्ण पत्र मिला, जिसका जवाब देने के लिए मंगल-ग्रह के इस संचार-संस्थान में मुझसे कहा गया है। चाहूँ तो बहुत लंबा पत्र लिखकर मंगल-ग्रह के जीवन और विकास के लिए लंबी जद्दोजहद की कहानी लिख सकती हूँ। पर वह फिर कभी। अभी तो सिर्फ इतना ही कहना चाहती हूँ कि हम मंगल-ग्रह के निवासी वैज्ञानिक खोजों और तकनीकी ज्ञान के मामले में आपसे कहीं ज्यादा विकसित हैं। सच तो यह है कि इसी के बल पर हमने खुद को छिपाना सीख लिया है।

···हम लोग प्यार और शांति के पुजारी हैं और कई बार यह सोचकर काँप उठते हैं कि आह! धरती के लोग अब भी इतने बर्बर हैं और हथियारों की होड़ से नहीं उबर पा रहे हैं। फिर भी मंगल-ग्रह के कुछ लोगों का कहना था कि हम शांति की पहल करें तो धरती पर भी एक नया शांति का दौर आ सकता है। वह चिड़िया हमारी ओर से भेजी गई शांतिदूत ही थी।···पहल हमने की और आप लोगों ने तो उसे ही पकड़ने की कोशिश की। यह तो भला हो हमारे वैज्ञानिकों का, जिन्होंने उस चिड़िया को दिव्य अणु-शक्तियों से संपन्न करके भेजा है, वरना तो आप न जाने उसका क्या हाल करते? अब तो आप अच्छी तरह समझ ही गए होंगे कि धरतीवासियों से खुद को छिपाकर रखना क्यों हमारी मजबूरी थी! आशा है, आप मेरी साफगोई का बुरा न मानेंगे।

शुभकामनाओं सहित—सुशांतिका'

: 6 :

और फिर मंगल-ग्रह के लोगों का धरती पर और धरती के लोगों का मंगल-ग्रह पर आना-जाना शुरू हुआ। सबसे पहले धरती से नील गया, जो आस्तिक और मंगल-ग्रह के दूसरे बच्चों से मिलकर आया। लौटा तो वहाँ के बारे में महीनों तक इतनी बातें बताता रहा कि लोग सुनते और चकित होते। सुशांतिका दीदी ने किस तरह उसे मंगल-ग्रह की हैरान कर देनेवाली वैज्ञानिक खोजों के बारे में बताया, उसने इसपर एक लंबा लेख लिखकर भी अखबार में छपवाया।

मंगल-ग्रह से पहली बार आस्तिक और सुशांतिका आए। वे नील से मिले और सुहासपुर में जगह-जगह घूमे। जिधर भी वे जाते, उन्हें देखने और बातें करने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ता। वापस लौटने से पहले सुशांतिका डॉ. योगेश कुमार से भी मिलीं। बोलीं, ''युवा वैज्ञानिक क्षमा करें, आपने मेरी बात का बुरा तो नहीं माना?''

योगेश कुमार ने इसपर हँसते हुए कहा, ''हर दोस्ती और सच्चे प्यार की शुरुआत साफगोई से ही होती है।...क्यों, मैं ठीक कर रहा हूँ न!''

इसपर योगेश कुमार और सुशांतिका साथ-साथ खिलखिलाए।

जब मंगल-ग्रह के निवासियों का दल धरती से विदा हो रहा था तो नारे लग रहे थे, ''धरती और मंगल-ग्रह की दोस्ती अमर रहे!...'' हवा में सुहासपुर और मंगल-ग्रह के झंडे साथ-साथ लहरा रहे थे। और मंगल-ग्रह की लाल जादूगरनी चिड़िया हवा में मँडराती हुई, अपना मीठा गाना गा रही थी, ''तिरु-तिरु-तिरु...तिरु-तिरु-तिरु...तिरु-तिरु-तिरुक्क!''

□

पप्पू की रिमझिम छतरी

बारिशें शुरू हो गई थीं, मगर पप्पू की रिमझिम छतरी अभी तैयार ही नहीं हुई थी।

कब बनेगी, कुछ भी पक्का नहीं था। उसपर भी पप्पू की जिद थी कि चाहे कुछ हो जाए, मगर मैं तो अपनी खुद की छतरी बनाऊँगा और जब उसे लेकर बाहर निकलूँगा तो दुनिया देखती रह जाएगी।

एक-एक कर पूरे तीन महीने हो गए और अब तो बारिशों का मौसम भी आ गया। तो भला कब तैयार होगी—उसकी तीन लोक से न्यारी छतरी? और उसमें ऐसी क्या खास बात होगी, जिसके लिए वह इतना परेशान है। क्या अनमोल लाल जड़े होंगे उसकी छतरी में?

मम्मी-पापा, भैया-दीदी सबने बहुत समझाया, ''अरे पप्पू, तुम कहो तो बाजार से हम तुम्हारे लिए बढ़ियावाली छतरी ला देते हैं। जो भी चाहो, खुद चलकर पसंद कर लो। यह तुम किस चक्कर में पड़ गए? भला छतरी भी कोई अपने हाथ से बनाता है? हमने तो आज तक नहीं सुना।''

मीनू दीदी ने कहा, ''देख पप्पू, तुझे पता नहीं है, पर आजकल तो ऐसी छतरियाँ भी आने लगी हैं कि बिलकुल इंद्रधनुष समझो। मैं तुझे ला दूँगी तो तू लाखों में अलग नजर आएगा। दूर से देखते रह जाएँगे तेरे दोस्त। सब कहेंगे कि पप्पू, कहाँ से ली छतरी, हमें भी दिलवाओ।''

पर पप्पू को भला कौन समझाए? उसकी तो वही जिद कि ''नहीं, मैं तो अपनी ही रिमझिम छतरी लेकर निकलूँगा बाहर, रिमझिम छतरी!''

''पर है कहाँ वह, कहाँ मिलेगी वह? कब तक तैयार होगी? तू तो कुछ बता ही नहीं रहा।'' दीदी चिढ़कर कहती।

सुनकर पप्पू हँस देता। हँसते-हँसते कहता, ''जब होगी तो होगी। आखिर कभी-न-कभी तो होगी! इसमें भला परेशान होने की कौन सी बात है?''

''और बारिश में भीगकर बीमार पड़ गए तो? फिर कौन बनाएगा तेरी रिमझिम छतरी?'' मीनू दीदी ने कहा।

''तो क्या हुआ? पड़ने दो बीमार। फिर तो और भी जल्दी बनेगी मेरी छतरी, क्योंकि चारपाई पर लेटे-लेटे सोचता रहूँगा! फिर ठीक होते ही झटपट बनाना शुरू कर दूँगा अपनी प्यारी छतरी। और एक दिन तो सच्ची में ही झंडा गाड़ दूँगा।'' पप्पू इतराते हुए बोला।

और फिर धीरे-धीरे हालत यह हुई कि पप्पू इस छतरी के चक्कर में अपनी पढ़ाई-लिखाई तो भूला ही, खाने-पीने का भी उसे कुछ होश न रहा। मम्मी जब भी खाने के लिए बुलातीं, उसका एक ही जवाब होता कि ''अरे, मैं आ रहा हूँ न मम्मी!'' और फिर स्टोर में लोहा-लंगड़ और बिजली के तारों के साथ उसकी वही खट-खट, खिट-पिट चालू। बात करता तो ऐसे, जैसे हवा में उड़ रहा है।

उसकी हालत देखकर मम्मी एकदम परेशान हो गईं। सोचने लगीं, ''कहीं लड़के को कुछ हो तो नहीं गया?''

उन्होंने अपने पति मि. भटनागर से कहा, ''अब आप ही सँभालिए, मैं तो परेशान हो गई।''

कुछ ही दिनों में हालत यह हुई कि घर में सब-के-सब हैरान-परेशान। भला इस पप्पू को क्या हो गया है? अच्छा-भला ठीक-ठाक था। पढ़ाई-लिखाई में भी बढ़िया चल रहा था। सब टीचर भी खुश थे, पर तभी जाने कैसा भूत सिर पर चढ़ा कि पिछले दो-तीन महीने से सारी पढ़ाई चौपट। कैसे पास होगा, ऐसे···?

पर पप्पू पर कोई असर ही नहीं। वह तो अब भी अपनी रिमझिम छतरी की कल्पना में ही खोया हुआ था। उसके भीतर हर वक्त बस एक ही उथल-पुथल चलती रहती कि वह होगी तो ऐसा होगा···ऐसा-वैसा होगा। और छतरी क्या, पूरा जादू-मंतर होगा। जब वह लेकर जाएगा बाहर, तो क्या-क्या कमाल होंगे? सोचते-सोचते उसके चेहरे पर बड़ी ही भीनी मुसकान आ जाती।

□

आखिर पूरे छह महीने बाद पप्पू की रिमझिम छतरी तैयार हुई। तब तक खूब झमाझम बारिशें शुरू हो गई थीं। पर पप्पू भला उसे ऐसे ही बाहर कैसे ले जाना शुरू करे? कहीं उसका यह नायाब एक्सपेरीमेंट फेल हो गया और मामला गड़बड़ा गया तो?

लिहाजा अपनी रिमझिम छतरी को बनाने के बाद कोई हफ्ते भर तक उसने खूब अच्छी तरह सारे परीक्षण किए। हालाँकि इस चक्कर में उसे कम मुसीबत नहीं झेलनी पड़ी। और सबसे ज्यादा तो निक्की ने ही रुलाया।

हुआ यह कि एक दिन जरा जोश में आकर उसने अपनी छोटी बहन निक्की से कहा, ''ओ निक्की, जरा तू इस छतरी पर एक गिलास भरकर पानी तो डाल।''

''पानी! छतरी पर पानी डालूँ, पप्पू भैया?'' निक्की ने अजीब तरह से आँखें फैलाकर पूछा, ''पर छतरी है कहाँ''' ? आपके सिर पर तो नीला-नीला रोशनी का घेरा घूम रहा है। क्या यही है छतरी?''

''अरे, तू डाल ना! मैं जरा छतरी को टेस्ट कर रहा हूँ।'' पप्पू ने उसे समझाया।

''क्या ये टेस्ट करना है कि कहीं पानी टपकता तो नहीं?'' निक्की ने अपनी बुद्धिमत्ता बघारी।

अब पप्पू के लिए खुद पर जज्ब करना मुश्किल हो गया।

''अरे, तू बहुत बातें करती है। अब चुप करेगी भी कि नहीं?'' उसने डपटा।

इसपर निक्की ने पानी तो डाला, पर भीतर रोती हुई चली गई। खामखाह मम्मी से अच्छी-खासी डाँट पड़ गई पप्पू को और मूड एकदम ऑफ हो गया।

तब पप्पू ने बड़े प्यार से निक्की को समझाया कि वह असल में एक नई-निराली जादूवाली छतरी बना रहा है।

''अरे वाह, जादूवाली छतरी! फिर तो जरूर पानी डालूँगी। और भी बताओ, क्या-क्या करना है पप्पू भैया!'' निक्की ने कहा और फिर उसने पप्पू की पूरी मदद की।

उसी से पता चला कि पप्पू का एक्सपेरीमेंट एकदम सौ परसेंट सही है। निक्की ने एक नहीं, कोई दस-बीस बार पानी से भरा मग उलट दिया, पर छतरी पर पड़ने से पहले ही पानी उड़न-छू। छतरी उससे जरा भी भीगी न थी।

और फिर एक दिन तो पप्पू फर-फर चलते बाथरूम के फव्वारे के नीचे ही अपनी छतरी लेकर खड़ा हो गया।

और जादू'''वाकई जादू हो गया। फव्वारे का पानी नीचे आते ही छतरी के चारों ओर नाचने लगा, मगर मजाल है कि छतरी की ओर पानी की एक बूँद भी आ जाए या छतरी थोड़ी भीग जाए। यों साबित हो गया कि पप्पू की रिमझिम छतरी वाकई जादूवाली छतरी है।

फिर एक दिन जब आकाश में खूब घने, काले बादल छाए हुए थे, पप्पू

अपनी रिमझिम छतरी लेकर निकला बाहर। 'पता नहीं, सबकुछ ठीक-ठाक होगा या नहीं?' सोच-सोचकर उसके भीतर रोमांच सा हो रहा था। कलेजा धक-धक कर रहा था।

□

पर पप्पू की वह अनोखी छतरी थी कहाँ? वह तो किसी को दिखाई ही नहीं पड़ रही थी और न पप्पू ने उसे हाथ से पकड़ा हुआ था। तो क्या वह हवा में घुल गई? मम्मी को जब उसने बताया कि वह अपनी छतरी लेकर स्कूल जा रहा है तो वे बड़ी हैरान थीं कि पप्पू कौन सी नीली छतरी की बात कर रहा है? सिर्फ एक नीला प्रकाश था, जो पप्पू के सिर पर घूम रहा था। मगर छतरी तो कहीं नहीं थी।

और जब पप्पू बाहर सड़क पर आया तो लोग आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे, अरे, पप्पू के सिर पर यह नीला-नीला सा कैसा प्रकाश-चक्र घूम रहा है। यह तो कमाल की बात है, बड़े ही कमाल की बात! और पप्पू इस सबसे बेफिक्र, मुसकराता हुआ बढ़ रहा था।

तभी जोर की गड़गड़ाहट के साथ खूब झमाझम बारिश होने लगी। आसपास भगदड़ सी मच गई। लोग पानी से बचाव के लिए दौड़-दौड़कर किसी सुरक्षित जगह पर जा रहे थे। कोई किसी पेड़ के नीचे जा खड़ा हुआ तो कोई किसी इमारत के छज्जे के नीचे खड़ा हो गया। कुछ लोग भीगते हुए ही जल्दी-जल्दी रास्ता पार कर रहे थे।

पर पप्पू तो मजे में खरामाँ-खरामाँ आगे बढ़ता जा रहा था, जैसे उसे इस झमाझम बारिश से कुछ मतलब ही न हो। और मजे की बात यह कि बूँदें उसपर गिरने की बजाय उसके सिर पर चक्कर काटते नीले प्रकाश में गायब होती जा रही थीं।

पप्पू जरा भी भीगा नहीं था।

यह देखा तो आसपास के लोग भौचक्के। सब देखनेवालों ने दाँतों तले उँगली दवा ली, ''अरे भैया, यह क्या चक्कर है?''

पर पप्पू निश्चिंत था। आवाजें उस तक भी आ रही थीं, पर वह मन-ही-मन मुसकराता हुआ आगे बढ़ रहा था।

एक-दो लोगों ने सोचा कि जरा रोककर पप्पू से पूछा जाए कि कहीं उसके सिर पर कोई भूत-प्रेत का साया तो नहीं?

एक लालाजी पप्पू के पड़ोस में ही रहते थे। अपना बड़ा सा छाता लेकर उसकी बगल से गुजर रहे थे। पप्पू को देखा तो कहने ही वाले थे कि ''पप्पू ओ

पप्पू, आ जा मेरी छतरी में!'' पर यह क्या··· ? वे तो भौचक्के ही रह गए। यह हो क्या रहा है ? बेचारे लालाजी ऐसे चकराए कि डर के मारे उनकी टोपी उछलकर नीचे जमीन पर जा गिरी। उधर पप्पू था कि मस्ती में गाना गाते हुए आगे बढ़ता जा रहा था।

कुछ आगे रज्जू अंकल मिले। पप्पू से कुछ बात करना चाहते थे, पर उसके सिर की ओर निगाह गई तो बुरी तरह चौंके। बोले, ''अरे, पप्पू, कुछ जादू-वादू सीख लिया क्या ? ऐसा नजारा तो मैंने अपनी पूरी जिंदगी में नहीं देखा।''

अब तक पप्पू स्कूल पहुँच गया था और उसे देखने के लिए बच्चों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी। उसके दोस्तों को उसकी इस रिमझिम छतरी के बारे में कुछ पता था। पर जो विचित्र नजारा उनके सामने था, उसकी तो वे कल्पना तक नहीं कर सकते थे।

इतने में उसकी क्लास टीचर शांता मैम वहाँ से गुजरीं। वे भी पप्पू को देखकर चकराईं। फिर मुसकराते हुए बोलीं, ''पप्पू, चलो क्लास में!''

पर उसके दोस्त नीलू ने रोक लिया। दूर से चिल्लाकर बोला, ''पप्पू ओ पप्पू, तेरे सिर पर भूत!''

''होने दो।'' पप्पू हँसता हुआ आगे चल दिया।

पर तब तक और भी बहुत सारे लड़कों ने उसे घेर लिया। सब एक ही बात कह रहे थे, ''अरे, बता तो पप्पू, यह क्या चक्कर है ? कैसा यह गोल-गोल नीला प्रकाश घूम रहा है तेरे सिर पर। भला यह चक्कर क्या है ?''

''छतरी···रिमझिम छतरी!'' कहकर पप्पू हँसा।

''छतरी! ओए, हमें बुद्धू बनाता है, ऐसी होती है छतरी ?'' नीलू, अंकित, मिंटू और रोहन एक साथ चीखे, ''नहीं-नहीं पप्पू, तुझे बताना पड़ेगा।''

तब तक साइंस के टीचर वधवाजी वहाँ से निकले। उनकी आँखें एकबारगी पप्पू पर जमीं तो जमीं रह गईं। फिर एकाएक उनके मुँह से निकला, ''क्या वाकई पप्पू, तुम्हें कामयाबी मिल गई ? यानी वही तुम्हारी रिमझिम छतरी।''

''हाँ, सर!'' पप्पू ने बताया।

सुनकर वधवा सर एकदम सीरियस हो गए। बोले, ''अरे, तब तो बताओ, कैसे ? क्या कुछ किया तुमने ? इट्स अ बिग सक्सेज, नो डाउट! सचमुच कमाल ही कर दिया।''

''बताऊँगा सर, पूरी क्लास के सामने बताऊँगा। पर आज नहीं। मैं उसके लिए तैयारी कर रहा हूँ। पहले मैं पेटेंट करवा लूँ, फिर उसके बारे में सबको बताऊँगा।''

और फिर पेटेंट का चक्कर पूरा होते ही पप्पू ने सबसे पहले स्कूल में ही अपनी इस नायाब छतरी का प्रदर्शन किया। साइंस के वधवा सर ने बड़े उत्साह से इसके लिए तैयारियाँ की थीं।

□

स्कूल के हॉल में सारे बच्चे इकट्ठे थे। प्रिंसिपल डॉ. राजन राजवंशी ने चीफ गेस्ट के रूप में मॉडर्न साइंस एकेडेमी के निदेशक डॉ. अमिय घोष को खासतौर से आमंत्रित किया था। वे पप्पू की इस नायाब छतरी की बात सुनकर हैरान थे। पूरा हॉल पप्पू की यह छतरी देखने और उसके इस अनोखे आविष्कार के बारे में जानने के लिए उत्सुक था।

प्रिंसिपल साहब के बुलाने पर पप्पू मंच पर पहुँचा, तब भी उसके सिर पर वही नीले प्रकाश का चक्र घूम रहा था। सबकी आँखें उसी पर टिकी थीं। पप्पू ने मुसकराते हुए कहा, ''अफसोस, आपको मेरी छतरी दिखाई नहीं दे रही होगी। इसलिए कि यह ऐसी छतरी है, जो किसी को दिखाई नहीं देती। पर मैं आपको बता दूँ कि यह दिखाई देनेवाली छतरियों से ज्यादा बढ़िया काम करती है। फिर इसके खोने का भी कोई डर नहीं है और इसे हाथ से पकड़ने की भी जरूरत नहीं। पर काम ऐसा करेगी कि जैसे जादूवाली छतरी हो। कितनी ही तेज बारिश हो, मजाल है कि एक बूँद पानी भी इसके नजदीक आ जाए। पानी इसके पास आने से पहले ही हवा में भाप बनकर उड़ जाएगा और छतरी गीली तक नहीं होगी। इसके लिए इसमें से खास तरह के रेडिएशंस निकलते हैं और देखा जाए तो असल में वही हमारी छतरी का काम भी करते हैं। साथ ही लेजर रेज के जादू का मैंने इस्तेमाल किया है। इस छतरी को आँधी-तूफान में कहीं भी ले जाएँ, इसका जादू कम नहीं होगा। जो इसका काम है, वह करेगी। हाँ, किसी को नजर नहीं आएगी और इसे हाथ में पकड़ने का झंझट तो बिलकुल है ही नहीं। अपने प्रयोग के अगले चरण में मैं कोशिश करूँगा कि ऐसी छतरियाँ सस्ती बनें, ताकि हर कोई इनका इस्तेमाल कर सके।''

फिर वधवा सर ने मंच पर आकर कहा, ''मुझे पता है, अब आप लोग जल्दी-से-जल्दी पप्पू की छतरी का अजब करिश्मा देखना चाहते हैं। तो अपनी आँखों से यह कमाल देखने के लिए तैयार हो जाइए।''

वधवा सर के इशारे पर मंच पर एक-एक कर सात बच्चे आए। सबके हाथ में पानी की छोटी-छोटी बालटियाँ थीं। सब पप्पू के चारों ओर गोला बनाकर खड़े हो गए। सबने एक साथ पप्पू की छतरी पर पानी की बालटियाँ उलटनी शुरू कीं।

पर यह क्या? देखते-ही-देखते वह पानी पप्पू की छतरी के चारों ओर नाचने लगा और फिर एकाएक गायब!

इसपर पूरे हॉल में इतनी तालियाँ बजीं कि वे देर तक रुकने का नाम ही नहीं लेती थीं।

इसके बाद प्रिंसिपल डॉ. राजन राजवंशीजी ने पप्पू की खूब तारीफ करते हुए कहा, ''हमारे स्कूल का यह नन्हा जगमग सितारा, उम्मीद है, जीवन में ऐसे एक-से-एक बड़े आविष्कार करके लोगों का जीवन खुशहाल बनाएगा। हमारा प्यार और आशीर्वाद हमेशा इस नन्हे फरिश्ते के साथ है, जिसमें काम करने की बड़ी ललक है।'' मॉडर्न साइंस एकेडेमी के निदेशक डॉ. अमिय घोष ने खुश होकर पप्पू को अपनी एकेडेमी की जूनियर फेलोशिप देने की घोषणा की।

अगले दिन सारे अखबारों में भारत के नन्हे वैज्ञानिक पप्पू के इस अनोखे आविष्कार की ही चर्चा थी। सबका यही कहना था कि पप्पू ने साबित कर दिया, अगर कोई बड़े सपने देखता है तो उसे पूरा भी कर सकता है। और हमारे देश के नन्हे वैज्ञानिक भी किसी से कम नहीं हैं।

पप्पू की रिमझिम छतरी के इर्द-गिर्द बारिश की नाचती हुई बूँदें भी शायद यही कह रही थीं।

□

गिली गुलगुल

नील ने अभी-अभी अपना होमवर्क पूरा किया था। सोच रहा था, लो! आज का पूरा दिन तो होमवर्क करने में ही बीत गया। कहने को इतवार छुट्टी का दिन है, पर होमवर्क से फुरसत मिले तब न!

फिर उसने सोचा, 'भला यह भी कोई जिंदगी है कि सुबह से शाम तक किताबें ही पढ़ते रहो। किताबें, किताबें, सिर्फ किताबें। आखिर आदमी को बाहर निकलकर भी दुनिया देखनी चाहिए।'

कहकर उसने आँखें बंद कीं और चुपचाप आराम-कुरसी पर पीछे सिर टिकाकर बैठ गया।

''तो फिर आओ न! आओ नील मेरे साथ।''

सुनते ही नील ने चौंककर आँखें खोल दीं। हैरानी से इधर-उधर देखने लगा, लेकिन कोई नजर नहीं आया।

'तो फिर आवाज आई कहाँ से? कहाँ से!' नील ने ध्यान से इधर-उधर देखते हुए सोचा।

इतने में उसे जमीन पर गोल-गोल गेंद जैसी कोई चीज दिखाई दी। एकदम सफेद। उसपर एक बड़ा सा मुँह भी बना हुआ था। वहीं से आवाज आ रही थी।

''मैं हूँ मैं...! मैं तुम्हें बुला रहा हूँ। मेरा नाम है गिली गुलगुल!'' नील को सुनाई दिया।

सुनकर नील एक पल के लिए चकराया। गिली गुलगुल...? मगर वह उसके कमरे पर कैसे आ गया। और वह भी उस समय, जब उसे उसकी बहुत जरूरत थी। उसने एली मून की 'वंडर्स ऑफ साइंस' किताब में इस अजीब से शख्स गिली गुलगुल के बारे में पढ़ा था, जो दूसरों से इतना अलग और अजीब था कि पढ़कर वह भौचक रह गया था। पर...पर वही गिली गुलगुल उसके पढ़ने के कमरे में...? सच?

यह तो किसी बड़े अचरज से कम नहीं थी।

सोचते ही नील के भीतर धुकधुकी होने लगी।

''तुम? तुम हो गिली गुलगुल?'' नील को जैसे विश्वास नहीं हो रहा था। लिहाजा उसने बड़े रोमांचित होकर पूछ लिया, ''तो क्या तुम्हीं उन प्राणियों में से हो, जिनका हाथ-पैर, मुँह कुछ नहीं होता और जो हजारों सालों से धरती पर यों ही गोल-गोल गेंद की तरह लुढ़कते रहते हैं। और जिनके बारे में मशहूर विज्ञान लेखिका एली मून ने बड़े मजेदार ढंग से लिखा है?''

''हाँ-हाँ नील, मैं वही हूँ, एकदम वही! पर तुम इतना चकरा क्यों रहे हो? बगैर हाथ-पैर-मुँह के भी तो मेरा काम आसानी से चल जाता है। बहुत आसानी से। इसलिए कि मेरे पास विज्ञान की दी हुई असाधारण शक्तियाँ हैं। देख रहे हो न, मैं बोल रहा हूँ। क्या मेरी आवाज तुम्हें सुनाई नहीं पड़ती? पर यह मेरी नहीं, मेरे दिमाग में फिट बड़े ही बारीक कंप्यूटर की आवाज है। उसी की मदद से मुझे तुम्हारी बातें समझ में आती हैं और मैं तुम्हें देख भी पा रहा हूँ।'' कहकर गिली गुलगुल हँसा। खूब जोर से।

नील ने नोट किया कि गिली गुलगुल की आवाज कुछ-कुछ नकसुरी है, लेकिन बड़ी ही सुरीली और संगीतमय। इसलिए जब वह बोलता है तो लगता है, जैसे कोई मीठा गीत गुनगुना रहा हो।

''और हाँ!'' गिली गुलगुल ने कहा, ''बिना पैरों के भी मैं इतनी तेजी से लुढ़कता हूँ कि मिनटों में धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँच जाता हूँ। कहो तो रातभर में ही तुम्हें पूरी दुनिया की सैर करा दूँ। चलोगे मेरे साथ?''

''अरे वाह! चलो फिर तो!'' नील भी तरंग में आ गया।

इसपर गिली गुलगुल ने कहा, ''सुनो नील, मेरे ऊपर एक ढक्कन है। तुम उसे हटाओगे तो मैं खूब बड़ा हो जाऊँगा। फिर उस सूराख से तुम अंदर आ जाना। बस, उसके बाद मेरी यात्रा शुरू हो जाएगी।''

□

नील को याद आया, एली मून ने भी तो ठीक यही बात लिखी थी। ओह, एली मून को साइंस की इन अजब-अनोखी चीजों के बारे में इतनी बातें कैसे पता चल जाती हैं? नील ने हैरानी से सोचा।

वह ढक्कन हटाकर झट गिली गुलगुल के पेट में चला गया और फिर गिली गुलगुल एकाएक दौड़ पड़ा। इतनी तेज, इतनी तेज कि पहले तो नील डरा, लेकिन फिर उसे मजा आने लगा।

और वाकई गिली गुलगुल ने नील को सारी दुनिया की सैर करा दी। उसने नील को अफ्रीका और अमरीका दिखाया तो जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन और रूस भी। चीन और जापान भी। और भी न जाने कहाँ-कहाँ वह नील को घुमाता रहा। जब भी कोई देखने लायक चीज होती, गिली गुलगुल फौरन रुक जाता और नील से कहता, ''आओ नील, बाहर आकर दुनिया देखो।''

और नील बड़े मजे से आसपास की चीजें देखता। नई-नई इमारतें, नई-नई घाटियाँ। कहीं बर्फ से लदे पहाड़, कहीं फूलों की घाटियाँ। कहीं समंदर और झीलें। दुनिया के एक-से-एक बड़े आश्चर्य! देखने के बाद नील झट गिली गुलगुल के पेट में जा बैठता और आगे की यात्रा पर निकल पड़ता।

गिली गुलगुल ने नील को ऐसे विचित्र देश दिखाए, जिनमें खूब ऊँचे-लंबे लोग थे तो ऐसे देश भी, जिनमें सभी छोटे कद के नाटे लोग थे। ऐसे देश दिखाए, जिनमें सभी गोरे लोग थे तथा ऐसे देश भी दिखाए, जिनमें लोग एकदम काले थे।

सबसे अनोखा था उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों का नजारा, जहाँ बारहों महीने बर्फ-ही-बर्फ नजर आती थी। मानो हड्डियों को पिघलाती बर्फ का समंदर हो और उससे भी मुश्किल था, ऐसे देशों की ओर आना, जहाँ गरमी के मारे हर कोई हलकान था।

''मगर दुनिया का असली आनंद तो इसी में है। देखो न नील, दुनिया कितनी रंग-बिरंगी है और कितनी खूबसूरत भी। अगर सभी लोग एक जैसे होते तो क्या यह संसार इतना सुंदर और आकर्षक लगता?'' गिली गुलगुल कह रहा था। ''और फिर इससे भी बड़ी बात यह है कि विज्ञान ने दूरियों को पाट दिया है। अब पूरी दुनिया बस एक बड़े से गाँव जैसी हो गई है, जिसमें हर कोई, हर किसी के बारे में जानता है। मोबाइल और इंटरनेट ने कितना कमाल कर दिया है हमारी दुनिया में। और फिर फेसबुक है, ट्विटर...और भी न जाने कौन-कौन सी चीजें, जो सारी दुनिया के लोगों का आपस में मेल-मिलाप और दोस्ती करा रही हैं। लोग अब एक-दूसरे के बारे में काफी कुछ जानने लगे हैं। क्यों, मैं ठीक कह रहा हूँ न?''

''वाकई...वाकई!'' नील उत्तेजना से भरकर बोला, ''तुम ठीक कह रहे हो गिली गुलगुल। आज मुझे तुम्हारे साथ घूमते हुए पहली बार लगा कि दुनिया कितनी रंग-बिरंगी है। उसमें कितने रंग, कितने रूप और कैसी-कैसी सुंदरताएँ हैं!''

यही नहीं, जो चीजें नील ने अपने इतिहास और साइंस की किताबों में पढ़ी थीं, उन्हें अपने सामने देखकर उसे बहुत मजा आया।

□

सुबह नील गिली गुलगुल के पेट में बैठा। हिलता-डुलता घर पहुँचा तो देखा, मम्मी-पापा परेशान! आस-पड़ोस के लोग भी वहाँ आकर सोच रहे हैं कि आखिर नील चला कहाँ गया। लेकिन नील ने जब रात भर की पूरी दुनिया की सैर का किस्सा सुनाया तो सभी के चेहरे खिल उठे। नील ने अपने मम्मी-पापा और दोस्तों को गिली गुलगुल से मिलवाया।

कुछ देर बाद गिली गुलगुल सबसे विदा लेकर चला गया। जाते-जाते उसने नील से कहा, ''नील, इस बार जब तुम्हारी गरमी की छुट्टियाँ होंगी तो हम और भी लंबी सैर पर निकलेंगे। तैयार रहना।''

खुश होकर नील ने प्यार से हाथ हिलाकर गिली गुलगुल को विदा किया।

□

दुनिया का सबसे अनोखा सुपर हाइटेक चोर

उस दिन दिल्ली और आसपास के सभी अखबारों में यह सनसनीखेज खबर छपी थी कि दुनिया का सबसे अनोखा चोर पकड़ा गया। पहले ही पेज पर ज्यादातर अखबारों ने बड़ी प्रमुखता से यह खबर छापी थी। सुर्खियों में! साथ ही दुनिया के उस सबसे अनोखे चोर की बड़ी सी तसवीर भी छापी गई थी। मुसकराते हुए।

जी हाँ, तसवीर में वह चोर बड़ी शालीनता से मुसकरा रहा था। बल्कि चोर जैसा तो कतई नहीं लग रहा था। कोई 25-30 वर्ष का एक बड़ा ही सुंदर गबरू जवान, जो खासा सभ्य, गंभीर और पढ़ा-लिखा लगता था।

चोर··· ? यह इंटेलीजेंट सा दिखनेवाला आकर्षक लड़का चोर! ऐसे तो नहीं होते चोर! और पूरी खबर पढ़कर तो लोग और भी हैरान रह गए। वे इससे पहले सोच भी नहीं सकते थे कि ऐसा भी कोई चोर हो सकता है या कि चोरी का ऐसा कोई नायाब तरीका भी हो सकता है!

और फिर जो बात चोर की तसवीर देखकर लोगों के मन में आई थी, खबर पढ़कर उसकी तसदीक हो गई। चोर सचमुच कोई मामूली चोर नहीं था। बल्कि खूब पढ़ा-लिखा कंप्यूटर विशेषज्ञ था। उसके बारे में कहा गया था कि चेन्नई के सुपर हॉराइजन सॉफ्टवेयर इंस्टीट्यूट से उसने कंप्यूटर की उच्चतम शिक्षा हासिल की और उस दौरान पढ़ाई में हमेशा अव्वल रहा। यहाँ तक कि पढ़ाई के दौरान ही उसने कुछ आश्चर्यजनक आविष्कार भी किए, जिन्हें देखकर उसके दोस्त ही नहीं, बल्कि उसे पढ़ानेवाले प्रोफेसर भी चकित थे। पढ़ाई के साथ-साथ स्कॉलरशिप तो उसे मिला ही। वह असाधारण जीनियस था, जिसके बारे में सभी पूरे यकीन से

कहते थे कि वह आनेवाले कल का एक बड़ा वैज्ञानिक बनेगा।

लेकिन वह बड़ा वैज्ञानिक या आविष्कर्ता तो नहीं बना, बन गया चोर! क्यों भला? 'द ईस्टर्न डेली' अखबार के प्रमुख संवाददाता देबू सरकार ने लिखा, ''इसके पीछे कुछ फन यानी मजा लेनेवाला भाव था, कुछ उसके अपने हालात का दबाव। और कुछ संगति यानी दोस्तों की मेहरबानी। हाँ, इतना जरूर हुआ कि वह असाधारण वैज्ञानिक होने के अपने मकसद और रास्ते से भटका तो बना एक असाधारण चोर ही। किसी मामूली या ऐरे-गैरे चोर से आप उसकी तुलना नहीं कर सकते।''

देबू सरकार ने आगे लिखा—

''मजे की बात यह है कि ऐसे अफलातून किस्म के हाईटेक चोर को पकड़ा गोपालपुर के नौवीं कक्षा में पढ़नेवाले एक छोटे से बच्चे निक्का ने। छोटे से जासूस निक्का की जासूसी उस सुपरटेक चोर पर भारी पड़ी। और उसने उसे पकड़ा भी कुछ ऐसे अंदाज में कि वह बेचारा हाईटेक चोर तिलमिलाकर रह गया। इसलिए कि यह मियाँ के सिर पर मियाँ की जूती वाला मामला था, जिसे निक्का जासूस ने अंजाम दिया और महाचोर का मामला खल्लास हो गया।''

बाकी अखबारों में भी इस खबर को खूब हाइलाइट किया गया था। पुलिस कमिश्नर मि. आनंद ने तो निक्का की खूब जमकर तारीफ की ही, गोपालपुर के घर-घर और हर मोहल्ले में भी उसके गुणों का बखान हो रहा था कि बच्चा हो तो निक्का जैसा। अरे, कमाल की अक्ल है इसकी। पकड़ा तो ऐसे पकड़ा कि चोर बेचारा चंगुल से निकल ही न पाया। और सच तो यही है कि नौवीं कक्षा में पढ़ते हुए ही निक्का ने एक ऐसा कारनामा कर दिखाया था कि निक्का गोपालपुर का हीरो नहीं, सुपर हीरो हो गया था। वह जिधर जाता, लोग उसे देखने और उससे बातें करने को उमड़ पड़ते। बच्चे हों या बड़े, सभी उत्सुकता से भरकर फिर-फिर वही कहानी जानने को उत्सुक रहते थे। एक ही सवाल बार-बार लोग पूछते, ''अच्छा निक्का, तुम्हें अंदाज कैसे लगा कि चोर कोई ऐसा-वैसा नहीं है और तुमने अपना फंदा कैसे डाला उसे पकड़ने को? और आखिर में, भैया, पकड़ कैसे लिया? तुम घबराए नहीं, तुम्हें डर नहीं लगा?''

सवाल-ही-सवाल, बल्कि सवालों की बौछारें। और निक्का, जो इस छोटी सी उम्र में ही कंप्यूटर उस्ताद बन गया था, वह बिलकुल अपनी सीधी, सरल जबान में फिर से पूरी कथा सुनाना शुरू कर देता, ''भई, रोज-रोज अखबार में मैं ये हाईटेक चोरी की घटनाएँ पढ़ता था तो मुझसे रहा नहीं गया। एक दिन की बात,

मैं अपने कंप्यूटर पर काम कर रहा था तो अचानक दिमाग में आया एक आइडिया। फिर दिमाग जाल-पर-जाल···जाल-पर-जाल बुनने लगा! बेचारे हाईटेक चोर ने भी बहुत जाल बुने थे। पर मेरी जासूसी के आगे बेचारा पानी माँग गया और खुद अपने ही जाल में फँस गया।''

कहते-कहते निक्का के चेहरे पर एक बड़ी ही शांत, शालीन मुसकराहट नजर आने लगी।

: 2 :

असल में पूरी कथा तो और भी अजब-गजब है, जिसने छोटे से निक्का को पहले कंप्यूटर-उस्ताद और फिर पक्का जासूस बना दिया। इसमें निक्का के पापा का भी बड़ा योगदान है। उन्होंने जब से कंप्यूटर खरीदा है, दफ्तर से आते ही चाय पीकर घंटा-डेढ़ घंटा अपने कंप्यूटर पर काम करना उन्हें अच्छा लगता। फिर रात में सोने से पहले कंप्यूटर पर देर तक उनकी उँगलियाँ नाचतीं। निक्का अपना होमवर्क कर रहा होता, मगर पापा को इतनी तल्लीनता से कंप्यूटर पर काम करते देखकर सोचता, 'अरे वाह, यह कंप्यूटर तो कंप्यूटर न हुआ, पापा का एक खिलौना हो गया। जैसे मैं अपने खेल-खिलौनों से खेलता हूँ और उनके बगैर मुझे चैन नहीं पड़ता। ऐसे ही लगता है, पापा दफ्तर से आते ही कंप्यूटर-कंप्यूटर खेलते हैं। आखिर यह कंप्यूटर है क्या बला? क्या मैं भी पापा की तरह इसपर अपनी उँगलियाँ नहीं चला सकता?'

पापा ने निक्का की दिलचस्पी देखी तो हँसकर बोले, ''चलो अच्छा, तुम खेलना ही चाहो तो कंप्यूटर पर कुछ खेल खेल लो।'' और पापा ने किस्म-किस्म के गेम्स अपने कंप्यूटर में डलवाए। निक्का को सचमुच लगा कि एक अनोखा खिलौना उसे मिल गया है, जो बोलता है, चलता है, दौड़ता-भागता है और घड़ी-घड़ी अपना रूप बदलता है। इन खेलों में निक्का का इतना मन लगा कि उसके पापा को कभी-कभी टोकना पड़ता कि ''निक्का बेटा, पढ़ाई पहले, खेल बाद में!'' लेकिन कंप्यूटर से उसकी दोस्ती कम होने की बजाय और बढ़ने लगी। और फिर पड़ोस में रहनेवाले कंप्यूटर साइंटिस्ट सुशांत वर्मा से दोस्ती होते ही उसने कंप्यूटर की सारी तकनीकें और राज जान लिये। और अब वह कंप्यूटर के आगे बैठता तो उसे लगता, वह कोई गेम नहीं खेल रहा, वाकई हवा में उड़ रहा है। होते-होते हुआ यह कि पापा को कंप्यूटर पर कोई मुश्किल आती तो निक्का कहता, ''मैं ठीक कर दूँ पापा?'' और लो, निक्का का हाथ लगते ही झट पापा का कंप्यूटर फिर चालू। पापा हँसकर कहते, निक्का तो वाकई कंप्यूटर उस्ताद हो गया!

पिछले चार-पाँच सालों से तो हालत यह थी कि निक्का को सपने भी कंप्यूटर के ही आते। लिहाजा कंप्यूटर की कोई भी मुश्किल उसके लिए खेल थी। इस मामले में वह अपने पूरे मोहल्ले का बेताज बादशाह या हीरो बन गया था। पर गोपालपुर का यह निक्का कंप्यूटर उस्ताद होगा और एक दिन देश के एक जाने-माने चोरों के उस्ताद को यों एकाएक धर दबोचेगा, यह तो किसी ने नहीं सोचा था, बल्कि इसकी कल्पना तक करना मुश्किल था।

''अब तुम्हारा काम खत्म हो गया है कालिया!''' उस हाईटेक चोर को अपने जाल में जकड़ने के बाद निक्का ने हँसते हुए कहा तो बाजी पलट चुकी थी। और 'कालिया' ने खूब तिलमिलाहट के बाद कैसे किया समर्पण, यह खुद में एक रोमांचक किस्सा है!'' 'द ईस्टर्न डेली' के संवाददाता ने हास्यपूर्ण टोन में लिखा था। लोग पढ़ रहे थे और हँस रहे थे। साथ ही हर होंठ पर निक्का जासूस की तारीफ के शब्द थे।

: 3 :

''अच्छा निक्का, पर यह विचार तुम्हारे मन में एकाएक आया कैसे?'' 'द ईस्टर्न डेली' के प्रमुख संवाददाता देबू सरकार ने निक्का के कंधे पर हाथ रखकर बड़े प्यार से पूछा। वह अगले दिन इस खबर को और ज्यादा हाइलाइट करने के मूड में था। उसके लिए निक्का जासूस के इंटरव्यू से बढ़कर मसाला भला कहाँ मिल सकता था? इसलिए निक्का से मिलते ही उसने सवाल-पर-सवाल दागने शुरू कर दिए। उनमें एक सवाल यह भी था कि ''क्या तुम्हें पक्का यकीन था कि इतने बड़े, इतने नामी-गरामी चोर को तुम पकड़ लोगे? देखो निक्का, साफ-साफ बताना।''

इसपर निक्का एक क्षण के लिए तो चुप रह गया। फिर धीरे-धीरे सुर में आते हुए उसने पूरा किस्सा सुनाया—

'''देखिए अंकल, यह तो आपको भी पता है कि शहर में पिछले दिनों चोरियाँ काफी हो रही थीं। गोपालपुर में सभी लोग इन चोरियों से परेशान थे और आजिज आकर सोचते थे कि आखिर यह कौन बंदा है, जिसने हमारे शहर के शांतिपूर्ण माहौल को यों बिगाड़ दिया है? मानो पूरे शहर पर दुर्भाग्य की छाया सी मँडरा रही हो! रोज अखबारों में उन चोरियों की खबरें छपती थीं। अब अखबार तो मैं रोज पढ़ता हूँ। आपका 'द ईस्टर्न डेली' तो रोज हमारे घर आता ही है। पापा का फेवरेट अखबार है, जिसे पढ़े बगैर उन्हें चैन नहीं पड़ता। तो पापा को देखते-देखते मुझे भी इसकी आदत पड़ गई। और मैं समझता हूँ कि आपका पेपर इस मामले में

अव्वल पेपर है, जिसने इन हाईटेक चोरियों के बारे में सबसे ज्यादा समाचार छापे और सबसे ज्यादा प्रमुखता के साथ छापे। बल्कि वे सुराग तक भी दिए, जिनसे चोर तक पहुँचा जा सकता था या ऐसे क्लू दिए, जिससे उस हाईटेक चोर की मन:स्थिति या साइक्लॉजी को समझा जा सकता था।···

चूँकि अखबार तो मैं रोज पढ़ता हूँ, इसलिए इन खबरों पर मेरी नजर पड़ती ही थी। अपने गोपालपुर शहर के लोगों की उत्तेजना भरी बातें भी मेरे कानों में पड़ती थीं। फिर एक बात पर मेरा ध्यान गया, जिसकी ओर आपके अखबार 'द डेली ईस्टर्न' ने भी दो-एक दफा इशारा किया था कि ये चोरियाँ ज्यादातर शहर के सबसे धनी लोगों के यहाँ हुईं और हैरानी की बात यह है कि चाहे बड़े-से-बड़े व्यापारी हों, डाकखाने या बैंक के उच्च अधिकारी या फिर बड़े-से-बड़े मालदार सेठ-व्यापारी, किस-किसको चोर ने नहीं लूटा। लेकिन इन चोरियों के मामले में सबसे अजीब बात यह थी कि यह ऐसा अजब-गजब चोर था, जो बगैर किसी रक्तपात के अपना काम करता था। आज तक इसकी चोरियों में और गोपालपुर में कोई बीस-पच्चीस चोरियाँ तो इसने की हीं, कहीं मैंने यह नहीं पढ़ा कि चोरी करने के लिए इसने कोई चाकू निकाला या पिस्टल या तमंचा इस्तेमाल किया। कुछ भी नहीं! खाली हाथ आता था और बड़े प्यार से लूटकर ले जाता था। और भी मजे की बात यह कि वह कभी भी ताला नहीं तोड़ता था। बगैर ताला तोड़े ही, जो वह चाहता था, उसके हाथ में खुद-ब-खुद आ जाता था। यहाँ तक कि किसी-किसी ने तो अपना सारा कीमती धन अंदर से निकालकर खुद चोर के हाथ में पकड़ा दिया। है न मजे की बात, पर यह सही है। किसी चतुर-सयाने शख्स ने सात तालों के अंदर भी अपने माल को रखा है तो भी चोर के हाथ में खुद-ब-खुद चाबियों का गुच्छा आ जाता था। जिस चीज की किसी को भनक नहीं होती थी, उसकी भनक भी उस चोरराज को लग जाती थी और वह बड़े मजे से उसे हथिया लेता था।

इससे भी मजे की बात यह थी अंकल कि चोर, जिसका सामान चुराने आता था, वह भी उससे लड़ता-झगड़ता नहीं था, कतई चिल्लाता या शोर नहीं मचाता था, बल्कि खुद-ब-खुद उसे ताले की चाबी या फिर अंदर से निकालकर अपना सारा बेशकीमती माल दे देता था। यहाँ तक कि उसे यह बता भी देता था कि उसने बाकी कीमती सामान कहाँ छिपाकर रखा है! है न अंकल मजेदार बात! और बस, यहीं से मुझे क्लू मिला कि यह चोर तो कुछ अजब चोर है। इससे कुछ अलग ढंग से निबटना होगा।···

उस दिन 'द ईस्टर्न डेली' के प्रमुख संवाददाता देबू सरकार को निक्का से बात करके 'दुनिया के उस अनोखे चोर' के बारे में इतनी बातें पता चलीं और इतना 'मसाला' मिला कि एकबारगी तो वह रोमांचित हो उठा। फिर जिन लोगों के घर चोरियाँ हुईं, उनसे भी वह आज सुबह मिलकर आया था। उन्होंने भी अपने-अपने ढंग से यही बात कही। हर जगह एक-से-एक अजीबोगरीब किस्से सुनाई पड़े। गोपालपुर के सबसे मालदार आदमी सेठ बुलाकीराम ने तो साफ-साफ कहा था, ''अरे भई अखबारवाले पत्तरकार! क्या कहूँ? मैं तो खुद-ब-खुद बेवकूफ बन गया और अपने पैर कुल्हाड़ी मार ली। चोर जैसे टहलता-टहलता आया और कहा, 'सेठजी, मुझे दस लाख रुपए चाहिए। जरा जल्दी से बताइए, घर में कहाँ छिपाकर रखे हैं।' मैंने उसे सबकुछ बताया और यह भी बता दिया कि चाबियाँ कहाँ पड़ी हैं। और लो साहब, चोर पैसे निकालकर चलता बना। अब क्या होत पछताए, जब चिड़िया चुग गईं खेत!''

सेठ बुलाकीराम की कहानी सुनकर देबू सरकार बेहद अचरज में आ गया था। सनाका खाकर पूछा, ''नहीं-नहीं सेठजी, ऐसा नहीं हो सकता। कुछ-न-कुछ और ही चक्कर होगा! वरना आप जैसा होशियार आदमी··· ?''

''अरे होशियारी क्या करेगी भाई? होशियारी गई भाड़ में! वह चोर है ही ऐसा मनमोहना कि उसके आगे होशियारी कहीं चलती नहीं।'' सेठ बुलाकीराम माथे पर हाथ पीटकर बता रहे थे। फिर उन्होंने सुनाया था पूरा किस्सा—

''अच्छा, मैं बताता हूँ आपको कि कुल मिलाकर किस्सा क्या हुआ। देखिए, आधी रात का वक्त था, किसी ने दरवाजे की घंटी बजाई। मैंने दरवाजा खोला तो चोर टहलता-टहलता घर के अंदर आ गया। वह इतना शरीफ लग रहा था कि मैंने सोचा, कोई हमारा गहरी जान-पहचान का या कोई दूर का रिश्तेदार तो नहीं है! सच्ची बात तो यह है कि हमारी साली का बेटा दुल्लीराम भी देखने में कुछ-कुछ ऐसा ही है। तो सोचा, वही दुल्लीराम तो नहीं आया? मगर तब क्या जानता था कि यह चोर है, दुश्मन है, जो मेरा घर लूटने आया है। टहलते-टहलते वह कमरे में घुसा और पूछा, ''सेठजी, जल्दी से बताइए, आपने पैसे कहाँ छिपाकर रखे हैं। मुझे दस लाख रुपए चाहिए अभी।''

इसपर मैंने हाथ जोड़कर कहा, ''भैया, पैसे तो अंदर बैडरूमवाली तिजोरी में हैं।''

उसने मुसकराते हुए पूछा, ''अच्छा तो सेठ बुलाकीरामजी, उस तिजोरी की चाबी कहाँ है?''

मैंने उसे बताया, ''भैया, चाबी तो मेरे तकिए के नीचे है।'' सुनकर उसने कहा, ''अच्छा, सेठजी, अब आप मेरे साथ चलो।''

मैं उसके साथ बैडरूम तक आया। उसने तकिए के नीचे से चाबी निकाली और तिजोरी से पैसे लेकर चाबी ठीक उसी जगह रखकर चला गया। समझ गए न आप? यकीन मानो, यही हुआ था, एकदम यही। बस समझो कि उस चोर के आगे, मेरी मति मारी गई थी। एकदम सच्ची बात बता रहा हूँ आपको। आप अपने अखबार में लिख देना!''

कहकर सेठ बुलाकीराम एक क्षण के लिए रुके। फिर मानो गद्‌गद होकर चोर की तारीफ करते हुए बोले, ''कुछ भी कहो भैया, चोर इतना शरीफ था कि उसने दस लाख कहे तो फिर दस लाख ही लिये और चाबी मुझे सौंपकर चला गया। पूरी शराफत से।''

'द ईस्टर्न डेली' के संवाददाता ने अपनी डायरी में सारी बात नोट की थीं। बारीक-से-बारीक डिटेल्स तक। फिर वह शहर के गल्ले के बड़े व्यापारी भोलाभाई और गोपालपुर के कुछ व्यापारियों के घर हुई चोरियों की जानकारी लेने चल पड़ा था। मामला हर क्षण रोमांचक होता जा रहा था। इनमें सेठ भोलाभाई का किस्सा भी अजब था। उन्होंने अपने घर हुई चोरी सुपर हाईटेक चोर का पूरा ब्योरा देते हुए कहा था—

''अजी भाईजान, क्या बताऊँ मैं तो मूरख बन गया! सब अपनी गलती है जी! उसने मेरी आँखों के सामने मेरी पत्नी के हीरे के सारे गहने माँगे और उनके बारे में बताया खुद मैंने ही। उसके पूछने पर एक बार तो मैंने चाहा कि उसको न बताऊँ! पर भैया, न जाने क्या जादू हुआ कि मैं तो उसे बताए बगैर रह ही नहीं पाया। फिर उसने बड़े मजे से मेरे सामने ही मेरी पत्नी के हीरे के सारे गहने समेटे। उन्हें मैरून रंग की मखमल की डिब्बी में बड़े इत्मीनान से सँभालकर रखा···सच्ची कह रहा हूँ जी! और फिर डिब्बी अपनी जेब में रखते हुए बोला, अच्छा सेठ भोलाभाईजी, अब हम चलते हैं, नमस्कार!''

''मुझे पता था यह नमस्कार करनेवाला बंदा मेरे क्या कुछ बेशकीमती गहने उड़ाकर लिये जा रहा है, पर भई, मैंने उसे नहीं रोका! मैं उसे पकड़ सकता था, पर नहीं, मैंने उसे जाने दिया। मुझे लगा, यह इतना शरीफ, सभ्य और भला-भला इनसान है। इसे बेकार रोककर या चिल्लाकर मैं अपनी असभ्यता का परिचय क्यों दूँ? सो भैया ले जा रहा है तो ले जा! और हाथ जोड़ दिए!···मगर भैया, ऐसे कैसे कहूँ कि दुःख नहीं हुआ। जब किसी की बीवी के कीमती हीरे के गहने जाते हैं तो

कलेजे पर छुरियाँ तो चलती ही हैं, फिर भले ही वह बंदा मेरे जैसा शहर का जाना-माना सेठ भोलाभाई ही क्यों न हो।''

एक और व्यापारी बच्चू भाई लक्कड़वाला ने टोपी उतारकर सिर पर अच्छी तरह हवा की, जैसे खुद को शांत करने की कोशिश कर रहे हों। फिर दोबारा टोपी लगाते हुए बड़े टूटे दिल से बोले थे—

''अजी जनाब, क्या बताऊँ, हुआ तो मेरे साथ भी कुछ-कुछ ऐसा ही था। उसके सामने तो मैं खूब भला-भला सभ्य बना रहा और अपना सबकुछ लुट जाने दिया। मगर उसके जाने के बाद मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने सोचा कि साले शरीफ चोर की ऐसी-तैसी। इसे छोड़ना नहीं, पकड़वाना ही है! पर क्या करूँ? जब वह गया तो कमरे में उसका कोई सबूत तक नहीं था। यहाँ तक कि उँगलियों के निशान भी नहीं। राम जाने किस तरह के जूते या दस्ताने पहनकर वह सफाई से अपना काम करता है और काम करके उतनी ही सफाई से चला जाता है। क्या पता चोर है कि कोई जादूगर?''

बैंक में काम करनेवाली एक पढ़ी-लिखी युवती शांताबाई ने जिसके सारे-के-सारे गहने चले गए थे, कुछ उदास होकर कहा था, ''क्या कहूँ जर्नलिस्टजी, बस इतना कह सकती हूँ कि वह बंदा बुरा तो नहीं लगता, पर काम बुरा करता है। मेरा तो उसके बारे में यही कहना है कि वह पढ़ा-लिखा, संभ्रांत युवक है, जो हमेशा मुसकराता रहता है। यहाँ तक कि चोरी करते समय भी वह मुसकरा रहा होता है···।''

'द ईस्टर्न डेली' के संवाददाता देबू सरकार को उस युवती की बातों से पता चला कि चोरी का माल साथ लेकर जाते समय उस महाचोर ने बाकायदा हाथ जोड़कर बड़े सभ्य ढंग से उससे विदा ली और कहा कि ''अच्छा मैडम, धन्यवाद। अब मैं चलता हूँ!''

यों आज सुबह से ही एक के बाद एक ऐसे किस्से सामने आ रहे थे, जिनसे 'द ईस्टर्न डेली' के संवाददाता की हालत खराब थी। कहानी में सस्पेंस हर घड़ी बढ़ता जा रहा था। अब तक उसने चोरी की घटनाओं को बस चोरी की घटनाएँ मानकर ही लिख दिया था और खबरें छाप दी थीं। पर अब लग रहा था, मामला तो कुछ और है।

कहानी बेहद रोमांचक हो गई थी और देबू सरकार अपने मन की उत्सुकता को रोक नहीं पा रहा था। कल के अखबार में इस घटना को पूरे पेज की स्टोरी बनाने का उसका प्लान था। लिहाजा उस सुपर चोर की अजबोगरीब चोरियों के जो

अजीबोगरीब किस्से उसने सुने थे, उनके बारे में उसने निक्का को बताया। फिर पूछा, ''क्यों निक्का, ऐसे विकट चोर से तुम्हें डर नहीं लगा?''

पर निक्का उन किस्सों के बारे में पहले से ही जानता था। हँसकर बोला, ''आप भूल रहे हैं अंकल, निक्का भी कम उस्ताद नहीं है। अभी मैंने अपनी जासूसी का पूरा किस्सा आपको सुनाया कहाँ है। लीजिए सुनिए··· !''

कहकर निक्का ने फिर से अपना किस्सा छेड़ दिया। बोला—

···बिलकुल आपने ठीक ही सुना है अंकल, मुझे भी इनमें से बहुत सी बातें पता चलीं। कुछ का तो मम्मी-पापा ने ही बताया था। तो एक के बाद एक जब ऐसी कई घटनाओं के बारे में मैंने पढ़ा या सुना, तो मुझे लगा कि बात कुछ गहरी है। चोर-चोर तो है, मगर दूसरे हजारों चोरों से अलग है। चोर-चोर तो है, मगर बड़ा शरीफ है। बड़ा सभ्य और कायदेवाला है! ऐसा शालीन चोर कि जिसे चोर कहने से पहले दस दफा सोचना पड़ता है। मगर वह असाधारण या हाईटेक चोर शालीन चाहे कितना ही हो, मगर उसकी मार इतनी गहरी है और निशाना इतना अचूक कि जहाँ उसने हाथ लगाया, वहाँ उसे कामयाबी मिली और वह माल लेकर गया। जो सोचा, जो चाहा, वह लेकर गया। मजे की बात यह कि ऐसी एक भी घटना मैंने नहीं पढ़ी कि उस चोर को कहीं असफलता मिली हो या कि जो काम वह सोचकर आया हो, वह किसी वजह से न हो पाया हो और उसे खाली हाथ लौटना पड़ा हो।···

पहले तो मुझे लगा कि यह हिप्नोटिज्म का चक्कर है, पर फिर लगा कि नहीं, मामला हिप्नोटिज्म का नहीं है। हिप्नोटिज्म यानी सम्मोहन करनेवाले जिस तरह आँख-में-आँख डालकर अपना प्रभाव डालते हैं, वैसा यह बंदा कतई नहीं करता। बल्कि उसके पास कोई ऐसा छोटा सा, लेकिन अनोखा यंत्र है, जो अपने प्रभाव में अचूक है और जिसके जरिए जो वह चाहता है, तुरत-फुरत हासिल कर लेता है। अब सवाल यह है कि वह अनोखा यंत्र क्या है और कैसे उसके जरिए वह ऐसे बड़े-बड़े कारनामे कर पा रहा है? तो मैंने इसके बारे में लोगों से पूछताछ करनी शुरू की कि वह चोर इस अनोखे यंत्र का करता क्या है। यानी कैसे उसका इस्तेमाल करता है? तब मुझे एक महत्त्वपूर्ण सुराग हाथ लगा। एक बैंक मैनेजर मि. घोषाल ने जिसके बैंक से वह 50 लाख की चोरी करके ले गया था, मुझे बताया कि उस शरीफ चोर के हाथ में घड़ी की जगह छोटा सा कंप्यूटर बँधा था, जिसे वह दूसरे हाथ की उँगलियों से घुमाता था और ठीक से सेट करता था! बस, फिर कोई मुश्किल नहीं थी और जो वह चाहता था, जैसा वह चाहता था, वह

खुद-ब-खुद होता चला जाता था।

तब अंकल, मुझे पहली दफा लगा कि हो सकता है कि वह कंप्यूटर कोई ऐसा सुपर कंप्यूटर हो, जो मन की तरंगों तक पहुँच जाता हो और सामनेवाले आदमी के मन को अपनी इच्छा से चलाता हो! अगले ही क्षण जैसे मुझे इल्जाम सा हुआ, ''ओह, तो कहीं ये माइंड कंट्रोलर तो नहीं? कंप्यूटर की एक अत्यंत विकसित प्रणाली, जिसके बारे में कोई साल-दो साल पहले एक विदेशी विज्ञान पत्रिका में पढ़ा था। हाँ-हाँ, जरूर यह वही है! यह बेशक माइंड कंट्रोलर ही है, जो घड़ी की तरह उसकी कलाई पर बँधा रहता है।''

एकाएक मेरे मन में यह विचार कौंधा और उसी समय से अंकल, मेरे भीतर एक ऐसी उथल-पुथल शुरू हो गई, जैसे सिर से पैर तक मैं किसी भँवर में हूँ और मुझे इससे बाहर निकलना है। उस शरीफ हाईटेक चोर का पता लगाना है और उसे पकड़ना है। जैसे भी हो, पकड़ना है! मैंने अपने मन में उसी वक्त यह ठान लिया था। मैंने उसी वक्त यह प्रतिज्ञा की थी कि या तो उस शरीफ-बदमाश चोर को पकड़ना है और अगर पकड़ नहीं पाया, तो हर घड़ी बस उसे पकड़ने की कोशिश करता रहूँगा। फिर चाहे जो हो जाए। देखूँगा कि होता क्या है, देखूँगा···देखूँगा! और यह सोचते ही लगा, जैसे सफलता मेरी मुट्ठी में है और वह सुपर चोर मेरे जाल में!

कहते-कहते देबू रुका, जैसे अपनी उत्तेजना पर काबू पाने की कोशिश कर रहा हो। फिर आगे उसने कहा—

···यों अभी तक तो अंकल, ऐसे किसी भी कंप्यूटर के बारे में मैंने कुछ ज्यादा नहीं पढ़ा-सुना था। बस, एक विज्ञान पत्रिका में, जो एक आर्टिकल पढ़ा था, वही दिमाग पर बार-बार लहर-पर-लहर मचाए हुए था। पर उस आर्टिकल में भी जो खास बात कही गई थी, वह यह कि कुछ वैज्ञानिक मन के इच्छा-संसार तक पहुँचनेवाले कंप्यूटर की खोज कर रहे हैं, जो एकदम मनुष्य के मस्तिष्क की तरह काम करे! उन्होंने ऐसा कोई कंप्यूटर खोज लिया है, इसका जिक्र उस आर्टिकल में नहीं था!

अलबत्ता उस सुपर चोर के बारे में जितनी भी खबरें इधर-उधर से पढ़ने-जानने को मिलीं, उसके बाद खुद-ब-खुद वही एक आर्टिकल मेरे मन में तैरने लगा। उस पत्रिका में ऐसे कंप्यूटर के बारे में जो बातें कही गई थीं और जो क्लू दिए गए थे, वे सारे-के-सारे मस्तिष्क में ताजे हो गए। मुझे लगा, दुनिया इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है। वह आर्टिकल मैंने डेढ़-दो वर्ष पहले पढ़ा था, तो क्या

इन दो-डेढ़ वर्षों में उस माइंड कंट्रोलर कंप्यूटर की कल्पना साकार न हो गई होगी? जरूर उस शख्स ने जिसे हम 'शरीफ चोर' कह रहे हैं, मस्तिष्क को कंट्रोल करनेवाला वह सुपर कंप्यूटर बना लिया है! मगर क्या उस सुपर कंप्यूटर को मैं पकड़ नहीं सकता···? उस सुपर कंप्यूटर से बढ़कर क्या कोई और चीज नहीं हो सकती? और एक दूसरा विचार मन में यह आया कि वह सुपर कंप्यूटर, जो चोर के हाथ में है, अगर किसी तरह मेरे हाथ में आ जाए तो उस चोर को पकड़ना क्या बहुत मुश्किल काम रह जाएगा? जिस तरह वह चोर औरों के मस्तिष्क को पढ़ता और अपनी गिरफ्त में लेता है, उसी तरह क्या मैं उस चोर और उसके मस्तिष्क को कीलित नहीं कर सकता?

असल में, अंकल, थोड़ा सा मैं आपको इस मस्तिष्क कंट्रोलर कंप्यूटर और इसके काम करने की तकनीक के बारे में बताता हूँ। आप जरा गौर से सुनें। होता यह है कि हमारे-आपके सबके मस्तिष्क में हमेशा हर घड़ी विचारों की लहरें चलती रहती हैं। कहते हैं कि मस्तिष्क में चलनेवाली विचारों की ये लहरें इतनी तेज होती हैं कि इसे बड़े से बड़ा होशियार दिमाग भी समझ नहीं सकता। मगर किसी बहुत शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर के साथ अगर उसका तालमेल हो जाए, तो फिर कंप्यूटर द्वारा मानव-मन को कंट्रोल करना असंभव न रहेगा। सच तो यह है कि मशीन और आदमी की लड़ाई है और कंप्यूटर भले ही आदमी द्वारा बनाई गई मशीन हो, पर उसमें कुछ ऐसी विलक्षणताएँ हैं कि वह आदमी के मस्तिष्क पर भी राज कर सकती है और उसे काबू कर सकती है या अपने प्रभाव की जद में ले सकती है।

और यों मानव-मस्तिष्क से निकलनेवाली तरंगों और कंप्यूटर से निकलनेवाले कुछ खास रेडिएशंस का अगर सही तालमेल हो जाए तो कंप्यूटर द्वारा आदमी के मस्तिष्क को कंट्रोल करने की कल्पना केवल कल्पना न रहेगी। वह असलियत में बदली जा सकती है। और उस हाईटेक चोर ने असल में यही किया। बिलकुल यही!

एक तरह से उस कंप्यूटर स्क्रीन के 'कर्सर' को हम 'माइंड डायरेक्टर' कह सकते हैं। यानी सूई को एक खास जगह सेट करने पर फिर मानव-मन पूरी तरह कंप्यूटर विशेषज्ञ के हाथ में आ जाता है। वह मन को जहाँ चाहे, वहाँ ले जा सकता है। यानी अगर आप चाहते हैं कि आदमी अपने छिपाकर रखे हुए धन के बारे में सोचे तो वह उस क्षण एकदम वही सोचने लगता है। और फिर यदि उससे पूछा जाए कि वह धन उसने कहाँ-कहाँ छिपाकर रखा है—किस तिजोरी या अलमारी में और उसकी चाबियाँ कहाँ रखी गई हैं, तो वह वही सोचने लगता है।

इसके बाद चोर महाशय को सिर्फ इतना कहना होता, ''मुझे पता है महाशय कि

आपका धन फलाँ-फलाँ कमरे में इस तिजोरी में है, जिसकी चाबी आपने यहाँ रखी हुई है। अब आप बताइए कि उसकी चाबी आप खुद लाकर देंगे या मैं ले लूँ?''

एक-दो बार ऐसा भी हुआ कि जिसके यहाँ वह चोर चोरी करने गया, उस सेठ या व्यापारी ने खुद-ब-खुद सही चाबी ढूँढ़कर चोर के हाथ में दे दी और कहा कि भैया, खुद खोलकर सामान ले लो। यह एक ऐसा अजूबा था, जिसके बारे में सोचना भी कठिन है। लेकिन यह सच था एकदम सच, क्योंकि ऐसा एक-दो नहीं, कई लोगों ने बताया···कि चोर ने चाबी ली, सामान निकाला और फिर चाबी सौंपकर वापस चला गया। लेकिन इतनी सावधानी उसने जरूर बरती कि चाबी पर कहीं कोई निशान नहीं पड़ा। शायद वह हाथों पर दस्ताने पहनकर ही घर से आता था।

यानी वह चोर बहुत होशियार है। चालाक आप कह सकते हैं! पर मुझे तो लगता है कि वह चोर नए जमाने का चोर है—हमारे इलेक्ट्रॉनिक जमाने का एक नया इलेक्ट्रॉनिक चोर।···आप समझ गए न अंकल?

: 4 :

कहते-कहते निक्का के आगे पूरी घटना जैसे फिर से ताजा हो गई। 'द ईस्टर्न डेली' का संवाददाता देबू सरकार उसके एक-एक शब्द को नोट करता जा रहा था। और निक्का हर छोटी-से-छोटी बात याद करके पूरी तफसील से बता रहा था—

···मैंने अपने पड़ोस के कंप्यूटर साइंटिस्ट सुशांत अंकल को पूरी बात बताकर उनकी मदद माँगी। वे खुशी-खुशी तैयार हो गए। उनसे मैंने कहा कि ''अंकल, जिन-जिन जगहों पर वह चोर गया था, वहाँ चलकर खोजते हैं। शायद कोई निशान या फिर उस चोर के बारे में बारीक सुराग ही मिल जाए, या फिर वह चोर देखने-भालने में कैसा था, लोगों से उसके बारे में सुन-सुनकर क्या उसका कल्पित फोटो नहीं बनाया जा सकता? कंप्यूटर के जरिए उसका ऐसा फोटो बनाना मुश्किल नहीं होना चाहिए!''

सुशांत अंकल और मैंने मिलकर लोगों से सुने-सुनाए उसके फीचर्स के बारे में जानकारी इकट्ठी करके उसका एक कंप्यूटर फोटो तैयार किया। फिर वह फोटो अंकल ने अपने उन सभी दोस्तों को दिखाया, जो कंप्यूटर का एडवांस कोर्स कर चुके थे और देश के जाने-माने कंप्यूटर विशेषज्ञों में से एक थे। ऐसे बड़े-बड़े संस्थानों में भी हाईटेक चोर के इस कंप्यूटर फोटो को दिखाया गया, जहाँ कंप्यूटर की नई-से-नई टेक्नोलॉजी सिखाई जाती थी और जहाँ से कंप्यूटर के जाने-माने

विशेषज्ञ निकलते थे। हम अँधेरे में तीर फेंक रहे थे, लेकिन फिर भी एक बड़ी उम्मीद थी। तीर पैना है, अचूक है, सिर्फ सही कोण साधने की जरूरत है। अगर वह सही जगह लगा तो चोर बच नहीं पाएगा।

देखते-ही-देखते इ-मेल के जरिए सारे भारत के प्रशिक्षण-संस्थानों और कंप्यूटर विशेषज्ञों के पास देश के अनोखे हाईटेक चोर का यह कंप्यूटर फोटो पहुँच गया। सुशांत अंकल ने साथ में सभी को एक चिट्ठी भी लिखी थी, ''कृपया आप हमारी मदद कीजिए। कंप्यूटर की दुनिया में, जिससे मनुष्यता की भलाई के हजारों काम हो सकते हैं, यह होशियार चोर एक कंप्यूटर वायरस की तरह है। अगर हम चाहते हैं कि कंप्यूटर की दुनिया आगे बढ़े और आबाद हो तो इस 'खतरनाक वायरस' का पता लगाना होगा और इसे उखाड़ फेंकना जरूरी, बहुत जरूरी है।''

सुशांत अंकल के एक दोस्त नीलकांत मेहरा ने वह फोटो देखा तो मारे अचरज के वह उछल पड़े। थोड़ी देर तो उनकी जुबान से कोई शब्द तक नहीं निकला। फिर अपनी उत्तेजना पर काबू पाते हुए बोले, ''क्या यह सही है, नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। वह तो ऐसा नहीं कर सकता! वह तो जीनियस था, महा जीनियस···सुबोध! नहीं-नहीं, सुबोध ऐसा क्यों करेगा? क्यों?''

सुशांत अंकल के फिर पूछने पर नीलकांत मेहरा ने बताया और उसी तरह अचरज से भरकर बताया कि अरे भाई, मेरे दोस्तों में···बल्कि जिन्होंने मेरे साथ कंप्यूटर का यह प्रशिक्षण लिया था, उनमें एक ऐसा ही था···और उसके चेहरे पर भी चोट का ऐसा ही निशान था। माथा इसी तरह खूब बड़ा-बड़ा चमकता हुआ और आँखें इतनी ही पैनी, चमकीली। और कमाल का जीनियस था वह। हमारे बैच में बेशक सबसे ज्यादा इंटेलीजेंट!

फिर कुछ सोचकर बोले, ''सुबोध···हाँ, सुबोध नाम था उसका, सुबोध सक्सेना। कहीं यह वही तो नहीं? नहीं-नहीं, यह वही है—एकदम वही। इतना इंटेलीजेंट था वह कि हमेशा फर्स्ट क्लास फर्स्ट आता था और कोई भी प्रॉब्लम, जो किसी और से हल न हो, वह पलक झपकते झटपट हल कर देता। सच तो यह है कि हम सभी उससे रश्क करते थे।''

उसी दिन नीलकांत मेहरा ने चेन्नई के अपने कंप्यूटर संस्थान में इ-मेल किया। वहाँ फोन करके पुराने बैच के अपने कंप्यूटर साथी सुबोधकांत सक्सेना का स्थायी पता पूछा। वहाँ से दिल्ली का उसका पता मिल गया। बस समझिए हमारी आधी समस्या हल हो गई। और फिर आगे रास्ता खुलता चला गया!···

: 5 :

'द ईस्टर्न डेली' के पत्रकार ने सारी बातें नोट कीं और चला गया। अगले दिन अखबार के पहले पन्ने पर 'दुनिया के सबसे अनोखे चोर' की 'स्टोरी' छपी थी तो उसमें निक्का की बातों को कोट करते हुए यह सनसनीखेज रहस्योद्‌घाटन भी था कि निक्का ने कैसे उस सुपर चोर को मात दी और उसी की चाल से उसे अपने जाल में फँसाया।

पूरी खबर कुछ इस तरह थी—

···असल में हुआ यह कि हमारे कंप्यूटर उस्ताद और जासूस निक्का को उस शातिर 'महाचोर' का पता मालूम पड़ा तो एक दिन वह पता हाथ में लेकर घूमते-घूमते किसी बहाने से दरियागंज के सुबोध के घर जा पहुँचा। अड़ोसी-पड़ोसियों से सब पता कर लिया कि वह कब घर आता है, कब जाता है और उसकी क्या-क्या आदतें हैं। उसका अनुमान सही था कि वह चतुर चोर अकेला ही रहता था और शायद दुनिया में एकदम अकेला था या हो गया था। इसी वजह से उसका कमरा एकदम बंद रहता था। एक-दो बार तो निक्का को खाली हाथ ही लौटना पड़ा, लेकिन शायद तीसरी बार सुबोधकांत सक्सेना से उसकी मुलाकात हुई।

निक्का ने थोड़ा बहाना बनाते हुए कहा, ''कंप्यूटर में मेरी रुचि है अंकल, तो चेन्नई के आपके एक मित्र मि. मेहरा ने सुझाया कि सुबोधकांत सक्सेना से बड़ा कंप्यूटर विशेषज्ञ तो दिल्ली में ढूँढ़े से न मिलेगा। वह तो सुपर कंप्यूटर उस्ताद हैं। मि. मेहरा ने ही आपका पता दिया। चेन्नई कंप्यूटर संस्थान से आपने प्रशिक्षण ही नहीं लिया, आप तो गोल्ड मेडलिस्ट भी रहे हैं। उन्होंने मुझे सबकुछ बताया है।''

सुनकर सुबोध हँसा। कहा, ''ठीक है, मैं तुम्हें सिखाऊँगा। तुम मेरे शिष्य बन जाओ। बनोगे ना? मैं तुम्हें कंप्यूटर की दुनिया के नए-नए ऐसे आविष्कारों के बारे में बताऊँगा, जिनका भारत में अभी किसी और को नहीं पता। तुम उनके आधार पर इतना पैसा और नाम कमा सकते हो कि लोग दाँतों तले उँगली दबा लेंगे।''

''बस अंकल, फिर तो मेरी साध पूरी हो गई। मैं सीखने में बिलकुल कोताही नहीं करूँगा।'' निक्का ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा।

अब तो निक्का बार-बार कुछ-न-कुछ सीखने और पूछने के बहाने सुबोध के घर जा पहुँचता। सुबोधकांत सक्सेना से उसने ऐसी दोस्ती कर ली कि वह हाईटेक चोर जो सारी दुनिया का मस्तिष्क कंट्रोल करके चोरी करता था, उसका मस्तिष्क खुद निक्का से कंट्रोल हो रहा था। अगर निक्का दो-चार रोज मिलने न जाता तो सुबोधकांत उदास हो जाता। फोन करके उसे बुला लेता, ''आओ निक्का,

तुमसे कुछ बातें करनी हैं।''

निक्का सुबोधकांत से कंप्यूटर की दुनिया से नए-नए आविष्कारों की जानकारी तो हासिल करता था, उन्हें खुद भी करके देखने लगा। एक दिन उसने कहा, ''अंकल, मैंने कभी पत्रिका में पढ़ा था कि ऐसे कंप्यूटर भी बनने लगे हैं, जो आदमी के मस्तिष्क को कंट्रोल करने लगे हैं। क्या यह बात ठीक है?''

सुबोधकांत ने हँसकर कहा, ''हाँ, ऐसा कंप्यूटर बना लिया गया है और तुम्हें हैरानी होगी कि ऐसा कंप्यूटर बनानेवाला देश दुनिया का कोई और देश नहीं, बल्कि भारत है। और भारत के जिस वैज्ञानिक ने उस कंप्यूटर को ईजाद किया है, उसका नाम भी मैं जानता हूँ। उसका नाम है···''

कहते-कहते सुबोधकांत रुका तो निक्का बोला, ''मैं बताऊँ अंकल, उसका नाम क्या है?''

सुबोध ने सवालिया आँखों से निक्का की ओर देखा तो निक्का बोला, ''अंकल, उसका नाम है सुबोधकांत सक्सेना।···क्यों ठीक है न!''

सुनकर सुबोध ने निक्का की पीठ थपथपाते हुए कहा, ''अब तुम आ गए ठीक लाइन पर! लेकिन देखो निक्का, अभी मैं इस बात का खुलासा नहीं करना चाहता और तुम भी किसी से नहीं कहोगे। समझ गए न, क्योंकि खुलासा न करने के फायदे ज्यादा हैं।''

''क्या फायदे?'' निक्का ने बड़ी मासूमियत से पूछा। इसपर सुबोध ने मुसकराकर कहा, ''यह तुम बाद में जानोगे निक्का, धीरे-धीरे जानोगे। अभी तुम छोटे हो, बहुत छोटे!''

निक्का और सुबोधकांत देर तक बातें करते रहे। आधी रात बीत चुकी थी और अब सुबोधकांत की आँखों में नींद थी। निक्का बोला, ''अंकल, आज मैं यहीं रुक जाता हूँ। आपको कोई परेशानी तो नहीं··· ?''

''अरे, परेशानी किस बात की? वैसे भी इतनी रात हो गई है। आज तुम यहीं रुको, कल सुबह चले जाना।'' कहकर सुबोधकांत वहीं पास में ही बैड पर पसर गया। पर निक्का जागता रहा। सुबोध ने सोने से पहले अपनी कलाई से उतारकर मिनी कंप्यूटर को बड़ी सावधानी से तकिए के नीचे रख दिया था और अब खर्राटे भर रहा था।

जब सुबोधकांत गहरी नींद में था, निक्का ने चुपके से उसके तकिए के नीचे से सुपर कंप्यूटर निकाल लिया। उसने जल्दी से कंप्यूटर को ऑन करना चाहा, पर एक मुश्किल आ गई और यह एक बड़ी मुश्किल थी। पासवर्ड··· ! पासवर्ड तो उसे

पता ही नहीं था।

निक्का ने बहुत दिमाग दौड़ाया। पर आखिर पासवर्ड वह कैसे पता करे? उस हाईटेक कंप्यूटर विज्ञानी ने अपने सुपर कंप्यूटर का पासवर्ड क्या रखा है, भला निक्का कैसे जान सकता था?

पर अचानक निक्का के मन में एक शब्द आया, 'माइंड कंट्रोलर···!' और फिर अचानक माइंड शब्द उसके भीतर अटक गया। माइंड, माइंड···सुपर माइंड! उसे लगा, उसके भीतर 'सुपर माइंड' शब्द को लेकर एक गहरी गूँज बनती जा रही है। कोई पुकार-पुकारकर कह रहा है—सुपर माइंड! उसे लगा, हो-न-हो यही उस कंप्यूटर की कुंजी है। और सचमुच जैसे ही निक्का ने पासवर्ड की जगह 'सुपर माइंड' शब्द टाइप किया, कंप्यूटर फौरन खुल गया।

जीत! एक बहुत बड़ी जीत···! निक्का जैसे अपने-आप से कहा, ''अब मुझे इस जीत से कोई नहीं रोक सकता और न कोई इस महा चालाक चोर को बचा सकता है!'' और फिर झटपट निक्का ने उस सॉफ्टवेयर को खोला, जिसे भारत में क्या दुनिया में पहली बार सुबोधकांत सक्सेना ने बनाया था और माइंड कंट्रोलर के रूप में उसका इस्तेमाल करता था।

यह सॉफ्टवेयर सचमुच दिलचस्प था। जैसे-जैसे निक्का आगे बढ़ता जा रहा था, उसे बेहद मजा आ रहा था। और कभी-कभी वह इतना चकित हो उठता कि उसके हाथ 'की-बोर्ड' पर रुक जाते। माउस उसके हाथ में थरथराने लगता। निक्का के लिए यह ऐसी उत्तेजना का क्षण था, जिसकी उसने कभी ठीक-ठीक कल्पना तक नहीं की थी। और लो, अब इस सॉफ्टवेयर के सबसे महत्त्वपूर्ण और गोपनीय हिस्से में वह जा पहुँचा था। यहाँ दुनिया के सभी तरह के दिमागों के नक्शे थे। और इतना ही नहीं, उसमें अलग-अलग तरह के मस्तिष्कों के बारे में सांकेतिक नाम भी थे। कुछ बहिर्मुखी मस्तिष्क थे तो कुछ एकदम अंतर्मुखी। कुछ एकदम चालक और घुन्ने मस्तिष्क थे तो कुछ बेहद सीधे-सरल। कुछ चुप्पे लोगों के मस्तिष्क तो कुछ बेहद बड़बोले और नखरीले लोगों के मस्तिष्क थे। सीधे-सरल विनम्र लोगों के मस्तिष्क थे तो दुनिया के महा-घमंडियों के भी!

निक्का जैसे-जैसे उनके बारे में पढ़ता जा रहा था, सुबोधकांत सक्सेना द्वारा खोजे गए इस सुपर कंप्यूटर और उसके असाधारण सॉफ्टवेयर का राज उसके सामने खुलता चला जा रहा था और अब वह उन गाइड लाइंस के बारे में बखूबी जान गया था, जहाँ से होते हुए सुबोधकांत सक्सेना ने कंप्यूटर की दुनिया का यह महा आविष्कार कर डाला था।

आगे कंप्यूटर का सबसे जटिल यंत्र था, जिसमें मस्तिष्क से निकलनेवाली तरंगों का कंप्यूटर के रेडिएशंस से पीछा किया जाना था। फिर उसका सही तालमेल करके मानव-मस्तिष्क की तरंगों को अपनी पकड़ में करके मोटिवेशन किया जाना था। और फिर जरूरत पड़ने पर उन्हें किसी भी दिशा में घुमा देने की कोशिश की जानी थी! इस सबके तौर-तरीके इस जटिल सॉफ्टवेयर में मौजूद थे।

निक्का ने झटपट सुपर कंप्यूटर की चमत्कारी सूई को उस किस्म के मस्तिष्क की ओर दौड़ाना शुरू किया, जो एक किस्म का सुपर माइंड था। लेकिन इतना चालाक और इतना प्रतिभावान था कि वह एक साथ दुनिया का सबसे बड़ा चोर और दुनिया का सबसे बड़ा कंप्यूटर-विज्ञानी भी था। अपराध और विज्ञान दोनों क्षेत्रों का बेताज बादशाह!

एक मिनट···दो···तीन! कोशिश! कोशिश-पर-कोशिश···और लो फतह! यों दुनिया के सबसे बड़े कंप्यूटर-विज्ञानी चोर का पीछा करते-करते आखिर निक्का ने उसके मस्तिष्क की जटिल तरंगों को पकड़ लिया। और अब सबकुछ उसकी मुट्ठी में था। जो दूसरों का शिकार किया करता था और शिकार के मजे और दौलत हासिल करता था, जो शिकार करते-करते एक दिन दुनिया का सबसे बड़ा तानाशाह और अमीर आदमी बनना चाहता था, वह शिकारी आज खुद शिकार हो चुका था। और उसका शिकार किसी और ने नहीं, एक बच्चे निक्का ने किया था, जिसे कंप्यूटर की दुनिया में आए अभी कुछ ही वर्ष हुए थे। और अब तो उसने कमाल की सुपर टेक जासूसी का भी परचम लहरा दिया था।

अब निक्का को चिंता नहीं थी। चोर फंदे में आ चुका था। अब सुबोधकांत अगर अपनी नींद से जाग भी जाता तो वह निक्का का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था, क्योंकि वह महान् हाईटेक चोर यानी कंप्यूटर की दुनिया का बादशाह इस समय शस्त्ररहित था। उसका सबसे ताकतवर ब्रह्मास्त्र—उसका सुपर कंप्यूटर—इस समय निक्का के कब्जे में था। निक्का उसे न सिर्फ पूरी तरह समझ चुका था, बल्कि उसके जरिए काम करना और दूसरों का माइंड कंट्रोल करना सीख चुका था।

यह एक नया महाभारत था, जिसमें कोई रक्तपात नहीं, लेकिन लड़ाई भीषण थी। इस महाभारत का अर्जुन निक्का था!

: 6 :

निक्का ने सुबोधकांत के मस्तिष्क को उस जगह फोकस किया, जहाँ उसके शातिरपने के सारे किस्से उसकी मैमोरी में थे! आश्चर्य, अखबार में जो किस्से-कहानियाँ निक्का को पढ़ने को मिली थीं या लोगों से उसने सुबोध के बारे में जो

कुछ सुना था, सुबोध का चोरी का ढंग और उसके किस्से कहीं अधिक सनसनीखेज और रोमांचक थे।

फिर निक्का ने सूई को थोड़ा लक्ष्य की ओर खिसकाकर सुबोधकांत के अवचेतन मस्तिष्क को निशाना बनाते हुए पूछा, ''हाँ सुबोधकांत सक्सेना, अब बताओ चोरी किया हुआ सामान कहाँ है?

और आश्चर्य! सुबोध का दिमाग झटपट वहीं पहुँच गया, जहाँ निक्का उसे ले जाना चाहता था। सुपर हाईटेक चोर के सोचने के साथ-साथ स्क्रीन पर एक-एक कर वे स्थान और उनके नाम-पते आने लगे, जहाँ वह सामान छिपाया गया था। साथ ही सुबोधकांत की चोरी की अजीबोगरीब दास्तानें भी! अब सबकुछ साफ था, कुछ भी छिपा नहीं रह गया था।

''ठीक है, अब सो जाओ!'' निक्का ने कहा तो सुबोध पहले की तरह गहरी नींद में चला गया और सपने देखने लगा। इधर निक्का ने झटपट सुबोध से जो-जो जानकारियाँ इकट्ठी की थीं, उनके प्रिंट तैयार कर लिये। फिर उसने टेलीफोन घुमाकर पुलिस को सूचना दी, ''दुनिया का सबसे शातिर कंप्यूटर-विज्ञानी चोर मेरे कब्जे में है। वह आसानी से पकड़ा जा सकता है, अगर आप अभी इसी समय आ गए तो!''

''क्या··· ? क्या यह वही हाईटेक चोर है, जिसने चोरी करने के नायाब तरीके खोज निकाले हैं और पिछले कुछ महीनों में अखबारों में उसके चोरी के हैरतअंगेज कारनामे और खबरें छपती रही हैं!'' पुलिस अधिकारी की आवाज में उत्तेजना थी।

''हाँ-हाँ, वही!'' निक्का ने अपनी उत्तेजना को भरसक शांत करते हुए कहा। और सचमुच निक्का ने जो पता दिया था, आधे घंटे के भीतर पुलिस वहाँ जा पहुँची। सोते हुए सुबोधकांत सक्सेना को जगाकर गिरफ्तार कर लिया गया था।

सुबोध ने सामने खड़े निक्का की ओर देखा तो उसे क्रोध तो बहुत आया, पर वह क्या कहता! लाचार था।

अचानक निक्का के हाथ में अपना सुपर कंप्यूटर देखकर सुबोधकांत फिर से आपा खो बैठा। चीखकर बोला, ''मेरा मिनी सुपर कंप्यूटर निक्का के हाथ में कैसे? दिलवाइए···मुझे दिलवाइए—अभी!

''नहीं अंकल!'' निक्का ने पुलिस सुपरिंटेंडेंट डी.पी. खोसला से कहा, ''अगर यह यंत्र इसके हाथ में आ गया तो यह अभी हम लोगों के मस्तिष्क को 'टेम' करके छूट निकलेगा। फिर इसे पकड़ा नहीं जा सकता। यह हाईटेक चोर है, लोगों के दिमागों को अपने कंप्यूटर के अनोखे माइंड कंट्रोलर से कंट्रोल करके

बड़ी-बड़ी चोरियाँ करता है। इसी कंप्यूटर के बल पर इसने अपनी सारी चोरियाँ की हैं और अभी तक कानून के फंदे तक बच निकलता रहा है।''

यह सुनते ही पुलिस सुपरिंटेंडेंट मि. खोसला ने कड़ी निगाहों से सुबोधकांत सक्सेना की ओर देखकर कहा, ''तुम्हारा कंप्यूटर अब हमारे कब्जे में है। चलो, जल्दी चलो!''

अगले दिन पुलिस कमिश्नर आशीषदत्त कपूर ने एक बड़ी प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपनी इस बड़ी और आश्चर्यजनक सफलता के बारे में पत्रकारों को बताया। साथ ही पूरी ईमानदारी और साफगोई से यह भी कहा, ''इसका सेहरा हमारे छोटे से, उभरते हुए कंप्यूटर-विज्ञानी निक्का के सिर पर बँधना चाहिए, जिसने अपने से कई गुना बड़े प्रतिभाशाली एक घाघ कंप्यूटर-विज्ञानी को चतुराई से पकड़ लिया।''

सुनते ही वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने तालियाँ बजाकर निक्का के लिए प्यार और सम्मान प्रकट किया। फिर मि. कपूर के आग्रह करने पर निक्का ने पत्रकारों को उस मिनी सुपर कंप्यूटर की जानकारी दी, जिससे यह विलक्षण हाईटेक चोर अपने अजब कारनामे कर गुजरता था—बिना किसी खास कोशिश के, बिना खून-खराबे के खेल-खेल में लाखों की चोरियाँ करता था और लोग उसकी सफलता पर दाँतों तले उँगली दबाकर रह जाते थे।

निक्का ने उस मिनी सुपर कंप्यूटर के जरिए माइंड कंट्रोल का एक 'प्रोमो' भी पेश किया, जिसके जरिए आदमी के मस्तिष्क को 'टेम' किया जा सकता था। एक आदमी से कहा गया कि वह अपने नजदीकी प्यारे दोस्तों के बारे में सोचे—उनकी आदतें, शक्ल-सूरत, उनसे जुड़े किस्से-कहानियाँ और घटनाएँ भी! उसने ऐसा ही किया। और लो, क्षण भर में ही झटपट स्क्रीन पर उसके दोस्तों के नाम और चेहरे आ गए। और इसके साथ ही उनके स्वभाव का पूरा विवरण और वे मजेदार किस्से-कहानियाँ भी, जो उनसे जुड़ी हुई थीं। देखकर वह आदमी तो चकित था ही, भीड़ भी एकदम भौचक्की थी।

कुछ ही देर में लोगों में फुस-फुस शुरू हो गई। लोग इस छोटे मास्टर कंप्यूटर-विज्ञानी यानी निक्का की तारीफ तो कर ही रहे थे, साथ ही उस हाईटेक चोर की भी, जो चोर था, मगर ऐसा प्रतिभाशाली भी कि उसने ऐसा विलक्षण यंत्र ईजाद किया, जो लगभग आदमी के मस्तिष्क जैसा ही था और आदमी के मस्तिष्क के हर कोने तक जा सकता था। मस्तिष्क में उठनेवाले हर विचार को पढ़ सकता था।

''कुछ भी हो भई, विलक्षण प्रतिभा है इस शख्स में! काश, यह चोर होने की

बजाय अपना जीवन आगे के आविष्कारों में लगाता तो पूरी दुनिया में भारत का नाम ऊँचा कर सकता था!'' सब लोग खुस-फुस करके यही कह रहे थे।

''आप लोग ठीक कह रहे हैं। असल में हमने इसी सुपर कंप्यूटर के जरिए इसके अतीत की भी खोज की। निक्का ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, ''इसमें शक नहीं कि यह असाधारण जीनियस है। शुरू में इसने एक महान् कंप्यूटर-विज्ञानी ही होना चाहा था, जिसका सारी दुनिया में नाम हो। इस मिनी सुपर कंप्यूटर का आविष्कार करके यह इसे पेटेंट कराना चाहता था, ताकि दुनिया में इस तरह का आश्चर्यजनक और असाधारण 'मस्तिष्क कंट्रोलर' बनानेवाला यह दुनिया का पहला कंप्यूटर-विज्ञानी मान लिया जाए। पर फिर इसके जीन में जो कुछ दूसरी तरह के तत्त्व हैं, उन्होंने गड़बड़ मचानी शुरू की। इसने सोचा, 'ठीक है, मेरा आविष्कार है। इसे आज नहीं तो कल पेटेंट करा ही लूँगा। इसमें जल्दी क्या है! अभी थोड़ा इसका लुत्फ उठाया जाए!'

''फिर अपने शौक के लिए एक-दो लोगों पर इस मिनी सुपर कंप्यूटर की शक्तियों को आजमाया और माइंड कंट्रोल की अपनी विलक्षणता से खुश होकर सोचा, 'अरे, ऐसे तो खूब पैसा कमाया जा सकता है। पहले इसने अपना जीवन-स्तर ऊँचा करने के लिए कुछ शौकिया चोरियाँ कीं। और फिर उसे इसी में मजा आने लगा तथा होते-होते यह पक्का, घाघ चोर बन गया। इसके मन में यह महत्त्वाकांक्षा पलने लगी कि मैं अपने इस अनोखे आविष्कार के जरिए दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे अमीर आदमी बन जाऊँ! दुनिया का सबसे बड़ा तानाशाह!''

निक्का की बात पूरी होते ही पुलिस कमिश्नर मि. कपूर बोले, ''और जैसा कि निक्का कह रहा है, यह वाकई ऐसा ही तानाशाह हो जाता, अगर इसे चुनौती देने के लिए हमारे पास निक्का उस्ताद न होता और पूरे शहर गोपालपुर के लोगों का सहयोग हमें न मिल पाता।...अब इस वक्त तो सच पूछिए, सुबोधकांत सक्सेना नाम का यह शख्स कंप्यूटर विज्ञानी कम, कंप्यूटर चोर अधिक है। पर फिर भी हमें कोशिश तो करनी ही चाहिए, ताकि हमारे देश की यह एक बड़ी और असाधारण मेधा जाया न जाए, बरबाद न हो। किसी तरह यह रास्ते पर आ जाए!''

पुलिस अधिकारी की यह बात सुनकर पत्रकारों ने भी एक मत से उनके इस विचार की सराहना की।

: 7 :

इसके बाद मुकदमा चलना ही था, चला। इस मुकदमे की पूरी रिपोर्ट भी अखबार के पन्नों में नजर आती और लोग खोद-खोदकर पढ़ते। यहाँ तक कि

अदालत में भी जब इस केस की सुनवाई होती, हजारों लोगों की भीड़ वहाँ जमा हो जाती। अचानक पूरे शहर की और शहर ही क्यों, पूरे देश की गोपालपुर के इस अद्‌भुत चोर में दिलचस्पी हो गई थी। मुकदमा चलने पर जज ने भी वही बात कही जो पुलिस अधिकारियों ने कही थी, ''सुबोधकांत जीनियस है, लेकिन एक भटका हुआ जीनियस! हम इसे मारना नहीं चाहते, खत्म नहीं करना चाहते, बल्कि इसे सुधारकर सही रास्ते पर लाने की जरूरत है।''

जिस दिन मुकदमे का फैसला सुनाया जाना था, कोर्ट में सुबोध के माता-पिता और चेन्नई के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के डायरेक्टर मि. जी. गोपालस्वामी भी उपस्थित थे। सुबोधकांत सक्सेना को सिर्फ एक साल की सजा सुनाई गई। एक सांकेतिक सजा, जिससे वह अपने को सुधार ले और अब भी अपने लक्ष्य को पहचान ले।

सुबोधकांत शर्मिंदा था, बेहद शर्मिंदा। उसने कहा, ''मुझे यह सजा खुशी-खुशी स्वीकार है। बस, जेल में मुझे एक कंप्यूटर दे दिया जाए, जिसके जरिए मैं नए-नए आविष्कारों में अपनी शक्तियाँ लगाता रहूँ।'' उसकी यह बात जज ने मंजूर कर ली थी।

सुबोधकांत जब पुलिस के संरक्षण में जा रहा था तो अपने सामने गीली आँखों में आँसू लिये अपने माता-पिता और गुरु मि. जी. गोपालस्वामी को उसने देखा तो वह फूट-फूटकर रो पड़ा। उसने कसम खाई कि अब वह और भटकेगा नहीं और फिर से कंप्यूटर की दुनिया में नए-नए आश्चर्यजनक आविष्कारों की अपनी मंजिल की ओर लौट आएगा, ताकि इनसान का जीवन और अधिक सुखी और आनंदमय बनाया जा सके। यहाँ तक कि सामने खड़े निक्का को भी उसने प्यार किया और उसके सिर पर हाथ फेरा। उसका गुस्सा अब काफूर हो चुका था।

सचमुच यह सुबोधकांत अब पहलेवाले सुबोधकांत से कतई अलग था। उसे भीगी आँखों से विदाई देनेवाले बहुत थे, जो यह उम्मीद कर रहे थे—जल्दी ही यह हाईटेक चोर जेलखाने से छूटे और एक महान् कंप्यूटर-विज्ञानी बनकर दुनिया में देश के ताज को और अधिक ऊँचा और चमकीला बनाए।

□

चंद्रलोक की अदृश्य दुनिया

सन् 2095 के मई महीने का कोई एक दिन···! यानी इक्कीसवीं सदी के आखिरी दशक की कहानी है यह। चारों ओर आशुतोष···आशुतोष···आशुतोष का शोर! सभी ओर उसके नाम की चर्चा हो रही थी।

आशुतोष ने सचमुच धरतीवासियों के लिए एक क्रांति ही तो कर दी थी। अब उसकी दुनिया का विस्तार इतना हो गया था कि खाली पृथ्वी ही नहीं, सारे ग्रह भी उसमें शामिल हो चुके थे और उन ग्रहों में रहनेवाले विलक्षण प्राणी भी, जो धरती के लोगों से कहीं अधिक सभ्य और विकसित थे। इन नई खोजों के बाद हुआ यह कि आदमी और आदमी के बीच की दीवारें ढह गईं और सारी धरती एक नजर आने लगी थी, जैसे वह एक बड़ा परिवार हो।

और यह सब—आप यकीन मानिए—एक विलक्षण किशोर आशुतोष के करतब का परिणाम था, जिसने चंद्रमा पर सिर्फ पैर ही नहीं रखे, बहुत कुछ बदल भी दिया।

मजे की बात यह है कि इस विलक्षण चंद्रयात्री आशुतोष को शुरू में गप्पी क्या, महागप्पी ही समझा जाता था। जब वह छोटा ही था, तब चाँद को देखकर न सिर्फ ललकता था, बल्कि हर बार उसकी एक ही जिद होती कि ''पापा, देख लेना मैं एक दिन चाँद पर जाऊँगा··· जाऊँगा जरूर!''

आशुतोष के पापा सुकुमार बाबू जो एक स्कूल में हिंदी के अध्यापक थे। इस बात से हैरान थे। कभी-कभी थोड़ा खुश होते तो कभी थोड़ा सोच में भी डूब जाते।

''यह बच्चा तो थोड़ा एबनॉर्मल है!'' कभी-कभी वह अपनी पत्नी सविता देवी से कहा करते, ''इसकी बुद्धि सीधी नहीं, लगता है, टेढ़ी-टेढ़ी ही चलती है। अब बताओ तुम, कहता है, चाँद पर जाऊँगा, चाँद पर···जैसे यह खेल हो! अरे भई, दुनिया के बड़े-से-बड़े वैज्ञानिक यह सपना देख नहीं सकते और ये जनाब हैं कि···!

इसपर साँवले रंग की खुशमिजाज सविता देवी हँस देतीं। अपने बेटे की बलैया लेकर कहतीं, ''क्या पता, मेरा लाल दुनिया के बड़े-से-बड़े वैज्ञानिकों से भी बड़ा हो। कौन जानता है कि यह बड़ा होकर क्या कारनामा कर दे!''

इसपर सुकुमार बाबू भी दिल में हलकी सी गुदगुदी महसूस करते। पर उसे छिपाकर कहते थे, ''अरे भई, सब बच्चे तो इस उम्र में चंद्र-खिलौना लेने की जिद करते हैं। तुलसी और सूरदास के जमाने से लेकर आज तक चला आता है, 'मैया मोरी, चंद्र खिलौना लैहों···!' यह सूरदास ही लिख गए हैं। तो देख लो, सदियाँ गुजर गईं, हम तो यही देख रहे कि सब बच्चे चाँद को लेना चाहते हैं, पर यह जनाब हैं कि चाँद पर जाना चाहते हैं। कैसे जाओगे भई? कोई ऐसा झूला तो है नहीं कि झूलते-झूलते चाँद पर एक लंबी छलाँग लगा दो···!''

: 2 :

इसपर सविता देवी खिक्क से हँस देतीं। कहतीं—''भाई, जाए-न-जाए, पर उसे चाँद का सपना देखने से तो नहीं रोक सकते न तुम!''

पर जो झुक जाए, उसे आशुतोष तो नहीं कहते, फिर चाहे जो भी कहते हों। तो जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, उसकी जिद भी बढ़ती गई कि चाँद पर जाना है···चाँद पर जाकर दिखा देना है सारी दुनिया को!

अभी वह बारह वर्ष का ही हुआ था कि उसने अंतरिक्ष के बारे में किताबें पढ़नी शुरू कीं। चाँद के बारे में तो उसने खासकर बारीक-से-बारीक जानकारी इकट्ठी की···! चाँद पहुँचनेवाले मानव-यानों और मानवरहित यानों के बारे में भी।

''काश, भारत में भी इतने साधन होते कि चाँद-यात्रा आसान हो जाती!'' आशुतोष मन-ही-मन सोचा करता था।

भारत का राकेश शर्मा रूसी यान में अंतरिक्ष-यात्रा पर गया था, लेकिन चाँद पर क्या किसी भारतीय के कदम···?

आशुतोष सोचता, 'क्या चाँद की यात्रा भी बड़े मुल्कों की बपौती है! क्या भारत अपने बलबूते पर चाँद पर उतरने की योजना नहीं बना सकता? और फिर भला सरकार से ही क्यों उम्मीद की जाए! मैं खुद क्यों नहीं कर सकता? आदमी चाहे तो आखिर उसके लिए क्या मुश्किल है।'

आशुतोष ने सोचा—गहराई से सोचा···हर मुद्दे पर सिलसिलेवार सोचा और उस दिन के बाद उसने चाँद की यात्रा के लिए ठोस तैयारियाँ शुरू कर दीं। इस बारे में उसने इतनी किताबें पढ़ ली थीं कि उसका आधा कमरा इन्हीं किताबों से भरा हुआ था। और उसे अब रास्ता कुछ-कुछ सूझ रहा था।

'चाँद पर जाने का सबसे आसान और सुविधाजनक तरीका क्या है?'—इस शीर्षक से आशुतोष का लेख 'नेशनल टाइम्स' के संपादकीय पन्ने पर छपा तो सब ओर हड़कंप मच गया। कई बड़े वैज्ञानिकों ने लिखा, ''चमत्कार!···हमारा ध्यान तो इस ओर गया ही न था, जिधर इस नन्हे वैज्ञानिक ने इशारा किया है।''

अब तो उसके चाँद के बारे में लिखे गए लेख अखबारों में बहुत प्रमुखता से छपते, जिनमें वह बार-बार दोहराता कि अगर बहुत थोड़े से साधन हों, तो भी चाँद पर आसानी से पहुँचा जा सकता है। भारत जैसे देश के लिए चाँद पर पहुँचना कतई मुश्किल नहीं।

''चंद्रमा पर पहुँचना लगातार आसान होता जा रहा है। नई-से-नई तकनीकों और खोजों ने इसमें मदद दी है।'' वह बार-बार अपने लेखों में लिखता, ''बहुत जल्दी यह समय आनेवाला है कि जैसे हम गरमी की छुट्टी बिताने के लिए कुल्लू-मनाली या शिमला जाते हैं, ऐसे ही हम हर साल चंद्र-यात्रा का प्रोग्राम बनाया करेंगे।''

लोग किसी रोचक किस्से-कहानी जैसे लगनेवाले आशुतोष के ये लेख पढ़ते, हँसते और एक ओर रख देते थे।

एक लेख में आशुतोष ने यह चिंता जताई कि कहीं ऐसा न हो कि शक्तिशाली देश चंद्रमा पर पहले पहुँचकर वहाँ पर अपना कब्जा जमा लें। इसलिए भारत जैसे देश को पहले से वहाँ पहुँचकर अपना झंडा लहरा देना चाहिए।···''हमें पहले वहाँ कदम रखकर अपने देश की महान् सभ्यता और संस्कृति के निशान छोड़ने चाहिए। और यही नहीं, हमें चंद्रवासियों से दोस्ती करके जल्दी-से-जल्दी उनसे अपने सांस्कृतिक-राजनीतिक रिश्ते पक्के कर लेने चाहिए।'' अभी हाल के 'नवयुग' में छपे एक लेख में आशुतोष ने लिखा था।

आशुतोष का यह लेख पढ़कर लोग उपहास की मुद्रा में बुरी तरह हँसे। खासकर चंद्रवासियों की उसकी इस अजीबोगरीब कल्पना पर। कोई एकाध तो कह भी देता, ''अरे मूर्ख, वहाँ लोग नहीं रहते, केवल पत्थर हैं पत्थर! लगता है तुमने चंद्रमा के बारे में लिखी गई विज्ञान की किताबें अच्छी तरह नहीं पढ़ीं···और सिर्फ सपनों की दुनिया में रहते हो!''

इसपर आशुतोष का जवाब होता, ''आप लोगों ने अभी किताबें ही पढ़ीं हैं, मैंने किताबों से बहुत अधिक पढ़ा है···!''

इसपर कुछ लोग चौंकते। सोचते, 'कहीं सचमुच आशुतोष कोई असाधारण जीनियस तो नहीं!' पर ज्यादातर लोग जिनमें पढ़े-लिखे विद्वान् भी थे, उसे जीनियस

नहीं, उसे असाधारण मूर्ख ही मानते थे।

''चंद्रमा पर निश्चित रूप से जीवन है। चंद्रमा पर जीवन न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। मेरी नवीनतम खोजें और निष्कर्ष यही कहते हैं।'' आखिर 'नेशनल टाइम्स' में आशुतोष का पूरे पन्ने का यह लेख छपा। काफी खोजबीन और गहरे अध्ययन के बाद आशुतोष ने यह लेख लिखा था और बिलकुल नए ढंग के तर्क दिए थे।

पर इस पर भी उसकी हँसी उड़ानेवाले कम न थे।

'नेशनल टाइम्स' के एक पाठक ने विनोद और उपहास के भाव से लिखा, ''अगर आशुतोष की यह बात सही है तो इतने यान जो चंद्रमा पर पहुँचे और एक के बाद एक उनके निष्कर्ष आए, वे सभी एक साथ गलत साबित होंगे। वे जो चंद्रमा से पत्थर लेकर आए और चंद्रमा पर अपने पैरों के निशान छोड़कर आए, वे आशुतोष के मुताबिक तो मानो चंद्रमा पर गए ही नहीं, कहीं और सैर-सपाटा तथा पिकनिक मनाकर लौट आए।...यानी सही है तो अपने यही एक 'आशुतोष भगवान्', जो लगातार रहस्यमय भाषा में चंद्रमा की आरती उतारते रहते हैं—जय हो, जय हो, जय हो!''

पर इस तरह के तीखे व्यंग्यात्मक पत्रों का जवाब आशुतोष ने सिर्फ एक पंक्ति से दिया। उसके शब्द थे, ''वे जो पत्थर लेने गए थे, चंद्रमा से पत्थर लेकर लौट आए। मैं जीवन लेने जाऊँगा और सचमुच जीवन लेकर लौटूँगा।''

और फिर आशुतोष का वही लेख कुछ अकाट्य तर्कों और प्रयोगात्मक निष्कर्षों के साथ न्यूयॉर्क से निकलनेवाले 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ न्यू साइंटिफिक आइडियाज' में छपा तो जैसे पूरी दुनिया में भूचाल आ गया। हर ओर एक उथल-पुथल सी मच गई।

अब तो देश और विदेश की बहुत सी संस्थाओं ने आशुतोष से वादा किया कि अगर वह चंद्रमा पर जाना चाहता है तो उसकी वे हर तरह से मदद करने को तैयार हैं। आशुतोष को अब खुले हाथों हर तरह की आर्थिक मदद मिल रही थी। दुनिया के सब देशों की सरकारें टकटकी लगाए उसके अभियान की सफलता की प्रतीक्षा कर रही थीं। और भारत सरकार भी बेसब्र होकर देख रही थी कि आगे होता क्या है?

: 3 :

जिस दिन आशुतोष अपने खास तौर से निर्मित किए गए एक विशिष्ट डिजाइनवाले गोलाकार यान पर बैठकर अपनी इस महत्त्वाकांक्षी चंद्रयात्रा पर रवाना

हुआ, तो कई देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने चंद्रवासियों के नाम अपने मैत्री, संदेश भेजे। कुछ ने कागजों पर लिखकर पत्र दिए तो कुछ ने फ्लॉपी और सी.डी. के जरिए अपनी बातें पहुँचाने की कोशिश की।

कई दिनों की थका देनेवाली यात्रा के बाद आखिर आशुतोष चाँद की सतह पर पहुँचा। वहाँ के अजीबोगरीब परिवेश में उसके लिए साँस लेना, चलना, खाना-पीना हर चीज मुश्किल ही नहीं, एक मुसीबत जैसी थी। हालाँकि फिर भी उसे आनंद आ रहा था। उसे लग रहा था कि उसके पैर अब जमीन पर नहीं हैं और वह हवा में उड़ रहा है···और शायद जीवन और मौत के बीच कहीं लटका हुआ है! पर उसके इरादे मजबूत थे और उसने मन में ठान रखा था कि वह जिस बड़े उद्देश्य से यात्रा पर निकला है, उसे भूलना नहीं है। उसे हरगिज हारना नहीं है, लौटना है और जीतकर ही लौटना है।

पर चंद्रमा की सतह पर उतरने के बाद भी आशुतोष खुश नहीं था। इसलिए कि जैसा उसने सोचा था, वैसा यहाँ कुछ नहीं था। दूर-दूर तक लोग कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे थे। कहीं घर नहीं थे। सड़कें, मोहल्ले, बाजार नहीं थे। पीने के लिए पानी नहीं था। पेड़ नहीं थे। नदियों, नहरें, सागर नहीं थे। आशुतोष ने निराश होकर अपने-आप से पूछा, 'क्या मैं खुद ही तो किसी भ्रम का शिकार नहीं हो गया? कहीं ऐसा तो नहीं कि जो कुछ मैंने लिखा-पढ़ा और निष्कर्ष निकाले, वे सिर्फ हवा-हवा ही हों और हकीकत कुछ और ही हो! तो क्या इसीलिए लोग मुझ पर हँसते थे, जब मैं चंद्रमा पर जीवन होने की बात किया करता था?'

आशुतोष के चेहरे पर छाई गहरी विषाद की कालिमा अब सारी दुनिया को नजर आ रही थी। वह यहाँ अकेला होकर भी अकेला नहीं था और उसकी उदासी को पढ़नेवाले दुनिया के अनंत लोग थे। इसलिए कि आशुतोष चंद्रमा पर भले ही चला गया हो, पर सारी दुनिया की निगाहें उसपर टिकी थीं और सारी दुनिया के कैमरे उसे देख रहे थे।

'ऐसे में क्या खाली हाथ लौटना उचित होगा? बिना कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल किए इस तरह लौट जाने से कितनी खिल्ली उड़ेगी!' आशुतोष इस चिंता में था और जाने-अनजाने मानो मजबूरी में ही सही, आगे बढ़ता जा रहा था।

तभी एक जगह पैर के नीचे उसे कोई चीज महसूस हुई। लगा कि अभी-अभी किसी चीज से टकराया है। लेकिन किससे? वह चीज दिखाई तो नहीं पड़ रही!

उसने उस अदेखी चीज को उठाया। हाथों ने उसे महसूस तो किया, पर उसे

वह नजर नहीं आई। यह कितनी अजीब बात थी···! वह हाथों से उसे लगातार टटोल रहा था, यह देखने के लिए कि यह रहस्यमय चीज आखिर है क्या!

तब उसकी आँखों ने नहीं, उसके हाथों और टटोलती उँगलियों ने उसे बताया कि वह रहस्यमय चीज शायद चश्मा है। उसी तरह सामने की ओर जड़े काँच के दो बड़े-बड़े लैंस और साइड में वे पतली डंडियाँ, जो कान पर आकर टिक जाती हैं।

''अरे चश्मा! यह तो सचमुच चश्मा ही है। मगर यह चश्मा यहाँ कैसे आया?'' उसने हैरान होकर सोचा।

शायद यह मुझसे पहले चंद्रमा की यात्रा पर आए रूस या अमेरिका के किसी चंद्रयात्री का चश्मा हो, जो भूल से गिर गया हो।

'मगर···मगर फिर यह दिखाई क्यों नहीं दे रहा? चश्मा है तो उसे दिखाई भी तो देना चाहिए। मैं किसी अंधे की तरह इसे हाथों से टटोल रहा हूँ। और तब मुझे अंदाजा हुआ कि अच्छा, यह चश्मा है।'

अचानक आशुतोष के हाथ बढ़े और देखते-ही-देखते वह अदृश्य चश्मा उसकी आँखों पर आ गया और तभी···

जी हाँ, और तभी क्षण भर में जैसे सारी दुनिया ही बदल गई! वह चाँद जहाँ सिर्फ पत्थर-ही-पत्थर नजर आ रहे थे, कुछ और नहीं, मानो वह बेडौल, ऊबड़-खाबड़ पत्थर और चट्टानों का ही एक रूखा-सूखा धरातल हो, वहाँ अब एक हँसता-खिलखिलाता संसार नजर आने लगा, जिसमें रंग, रूप और शक्लें थीं। और इनसान अपनी सभी मनोहारी छवियों के साथ मौजूद था।

चारों ओर एक-से-एक सुंदर, सजीले छोटे-छोटे घर। घरों के बाहर पेड़ 'लॉन' हँसते-खिलखिलाते फूल और हरियाली। अत्यंत व्यवस्थित बाजार, सड़कें, ट्रैफिक, दफ्तर, लोग। लोगों की खासी चहल-पहल···मगर कहीं भीड़, भड़क्का नहीं। कहीं कोई अफरा-तफरी नहीं। कही कोई हाय-हाय और हबड़-तबड़ नहीं।

'अरे यह क्या!' आशुतोष एकाएक उत्तेजित हो उठा। उसने हैरान होकर सोचा, ''मैं कहाँ आ गया? यह कौन सी दुनिया है, जो अभी तक मेरी आँखों से छिपी रही और अब प्रकट हुई तो इस तरह जैसे यह कोई बड़ा भारी जादूमंतर हो।···एक पल पहले जो नहीं था, एक पल में ही वह सबका सब अचानक किस जादू के जोर से आया और सब ओर बस गया। यह जीवन, यह संसार अपनी पूरी खूबसूरती के साथ!

अगर यह चाँद है तो वह क्या था···पत्थर, पत्थर-ही-पत्थर!

: 4 :

इतने में कुछ छोटे कद-काठी के सफेद पोशाकें पहने दो लोग उसे नजर आए, जिनके माथे दमकते हुए थे और सिरों पर कुछ अजीब तरह की सफेद चाँदिया प्लेटें, जिनमें से अजीब सम्मोहित करनेवाले रेडिएशंस निकल रहे थे।

''आप धरती से आए हैं न···इधर आइए!'' उन दोनों ने एक साथ जैसे आदेश देनेवाले अंदाज में कहा।

आशुतोष डर गया। उसने उन अजनबियों को अपने मन की बात बता देनी चाही कि वह तो यहाँ दोस्ती करने और चाँद के संसार को उसकी पूरी मनोहरता के साथ समझने के लिए आया है। ताकि चंद्रमा और धरती के वासी एक-दूसरे से अनजान न रहें और जल्दी-से-जल्दी आपस में हाथ मिला लें।

''मैं यहाँ किसी गलत इरादे से नहीं आया। आप मेरा यकीन करें।'' आशुतोष ने सच्चाई बता देनी चाही, ''मैं वो हूँ, जिसके दिल में चंद्रमा और चंद्रमा के लोगों के लिए अपार मोहब्बत है···! और मैं अकेला ही ऐसा नहीं हूँ, पृथ्वी पर बहुतेरे लोग ऐसे हैं। चंद्रमा हमारे लिए प्यार की निशानी है। चंद्रमा हमारे लिए खूबसूरती का पैमाना है और हमारे बड़े तो बड़े, बच्चे भी चंद्रमा लेने की जिद करते हैं, मानो वह कोई खिलौना हो!'' आशुतोष ने कहा तो दोनों सफेद पोशाकधारी लोगों के चेहरों पर हँसी झलक उठी।

''वह हम समझ गए थे···कि आप वैसे नहीं हैं! आप वैसे हो ही नहीं सकते···इसीलिए चंद्रलोक पर आपका स्वागत है। हम हैं चंद्रलोक के सैनिक दीपंकर और चंद्रेश्वर···!'' उन दोनों ने एक साथ कहा तो आशुतोष को लगा दूर एक उजाला सा फैल गया है।

हँसते हुए उसने कहा, ''तो दीपंकर और चंद्रेश्वरजी···यानी चंद्रलोक के बड़े प्यारे और अद्‌भुत सैनिको, मुझे एक बात बताइए, क्या आपको दिमाग को पढ़ना भी आता है? भला कैसे जान लिया आपने कि मेरे भीतर क्या कुछ चल रहा है। मेरे भीतर भावनाओं की सारी उथल-पुथल और दिमागी हलचल···! यह सब कैसे बूझ लिया आपने? क्या आपके सिर पर लगी हुई ये सफेद चाँदिया प्लेटें आपकी मदद करती हैं, जिनसे हर समय रेडिएशंस निकलते हैं···?'' आशुतोष ने अपने खिलंदड़े अंदाज में कहा। अब वह भी थोड़ा-थोड़ा खुल रहा था और चंद्रमा पर आने की खुशी में सचमुच उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे।

''सबसे पहले तो तुम जो धरती के लोगों का मैत्री-संदेश लेकर आए हो···तुम्हारा स्वागत! बहुत-बहुत स्वागत! तुम जितने दिन रहना चाहो, रहो और निर्भय रहकर

रहो। चंद्रलोक पर कोई तुम्हारा बाल बाँका नहीं करेगा। इसलिए कि सच तो यह है कि जिस तरह धरती के लोगों के दिल में चाँद बसा हुआ है, वैसे ही चंद्रवासियों के दिल धरती के लिए धड़कते हैं। तुम उसी प्यारी धरती के बेटे हो। स्वागत आशुतोष, स्वागत!'' दीपंकर और चंद्रेश्वर ने मानो एक साथ कहा और आशुतोष को बाँहों में भर लिया।

फिर दीपंकर ने मुसकराते हुए कहा, ''और हाँ, अब तुम्हारे इस सवाल की बात की जाए क्या! हमने तुम्हारे दिमाग को पढ़ लिया, तो इसका जवाब है, हाँ! हमारे सिर पर लगी ये चाँदिया प्लेटें वही हैं, जैसा तुमने सोचा था। इनसे निकलने वाले रेडिएशंस सबकुछ कह देते हैं, जो कुछ तुम्हारे भीतर चल रहा हो। अगर तुम्हारे भीतर कहीं कुछ गड़बड़ होता, कोई षड्यंत्र ये सूँघते तो इन रेडिएशंस का रंग बदल जाता और वह पूरा षड्यंत्र हमारे कंप्यूटर के स्क्रीन पर नजर आने लगता।...मानना पड़ेगा आशुतोष कि तुम चतुर हो और सचमुच अपनी चतुराई के बल पर ही चंद्रलोक तक आ पाए हो!''

सुनकर आशुतोष को खुशी महसूस हुई। पर उसके भीतर अभी कुछ और भी चल रहा था, जिसका कोई हल उसे नहीं मिल पा रहा था।

''आखिर यह जादू क्या है, जो मैंने अभी-अभी देखा?'' आशुतोष ने डरते-डरते उन चंद्रवासियों से पूछ ही लिया।

''जादू! कैसा जादू?'' उन चंद्रवासियों ने मानो चौंककर पूछा।

''आखिर तो यह जादू ही था न कि अभी-अभी यहाँ कुछ नहीं था और फिर एकाएक सबकुछ नजर आने लगा, सबकुछ। पूरी दुनिया जैसे पल भर में आँखों के आगे बस गई हो। यह सब अचानक...!''

इसपर दोनों चंद्रवासियों ने उसकी आँखों पर लगे चश्मे की ओर इशारा किया। चश्मा जो आँखों में लगा था तो सबकुछ नजर आ रहा था। मगर वह चश्मा अब भी नजर नहीं आ रहा था।

आशुतोष ने फिर से हाथ बढ़ाकर अपनी आँखों पर लगे उस रहस्यमय चश्मे को टटोला और अपनी भूल पर खुद ही शरमा गया। बोला, ''हाँ, यह चश्मा...! यह मुझे रास्ते में मिला था। इसे पहनने के बाद ही...! हाँ, वाकई पहनने के बाद ही कहीं कुछ हुआ! जो कुछ दिखा, इससे पहनने के बाद दिखा...! तो क्या इसी चश्मे में यह जादू है? और भाई मेरे, यह चश्मा जो सारी दुनिया को दिखाता है, खुद नजर क्यों नहीं आता?''

आशुतोष की बात सुनकर दोनों चंद्रवासी हँसने लगे। बोले, ''इधर धरतीवासियों

के लोभ-लालच के साथ-साथ उनके झगड़े भी कुछ ज्यादा बढ़ गए थे। धरतीवासियों की आपस की मारकाट और लगातार युद्ध, भीषण लड़ाइयाँ, स्वार्थ और लालच के खेल···ऐसा नहीं कि यहाँ नजर न आते हों। बल्कि वे बातें जो धरती पर चलती हैं, यहाँ दूर से हमारे गुप्तचर कंप्यूटरों पर कहीं ज्यादा खुले रूप में और विस्तार से नजर आती हैं। धरती के लोगों की तृष्णा बढ़ती ही जाती है। क्या आश्चर्य कि उनकी यह तृष्णा बढ़ते-बढ़ते चंद्रमा पर भी चली आए और समूचे चंद्रमा को अपने लालच की डोरियों में लपेट लें। यह आशंका ज्यादातर चंद्रवासियों को थी। इसीलिए यहाँ के लोगों के मन में काफी उथल-पुथल थी, काफी आशंकाएँ···! तो सच तो यह है आशुतोष कि धरती के लोलुप प्राणियों से खुद को बचाने के लिए हमको अदृश्य होना पड़ा, ताकि धरती के लोग यहाँ आएँ तो उन्हें सिर्फ यहाँ चट्टानें ही नजर आएँ। वे इन चट्टानों और पत्थरों से मिलकर ही लौट जाएँ! यह चश्मा पहनने के बाद ही किसी को चंद्रलोक की असली सूरत और असली दुनिया नजर आए!···तो भई आशुतोष, कायदे से तो तुम्हें भी यहाँ से पत्थर बटोरकर यहाँ से औरों की तरह वापस चले जाना था, पर पता नहीं, किसकी भूल से यह जादुई चश्मा, जिसे विज्ञान के अद्‌भुत करिश्मों की मदद से बनाया गया है, यहाँ गिर गया और संयोगवश तुम्हें मिल गया। और इसके बाद तो···!''

''जी हाँ, इसके बाद की कहानी तो मैं जानता ही हूँ। लेकिन चाहे जिस किसी की गलती से यह चश्मा गिरा हो, मुझे तो उसकी यह भूल खासी रास आई, वरना···!''

''वरना क्या?''

''वरना तो कभी मैं यह नहीं जान पाता कि चंद्रमा पर जो लोग रहते हैं वे हमसे किस कदर मिलते-जुलते हैं और उनके दिलों में हमारे लिए कितना प्यार है!''

''पर आप तो लगातार चंद्रमा पर लेख लिखते रहे हैं! आपकी चंद्रवासियों के प्रति दृष्टि और नजरिया बाकी लोगों से एकदम अलग है, इसे हम लोग जानते हैं और तारीफ करते हैं। बल्कि चंद्रमा पर सभी यह जानते हैं।''

''अरे, आपको कैसे पता?'' आशुतोष ने हैरान होकर पूछा।

''हमें क्या नहीं पता!'' दीपंकर और चंद्रेश्वर दोनों के चेहरों पर एक साथ मीठी हँसी झलकी। फिर उन्होंने बताया, ''धरती ही नहीं, हर ग्रह से हमारे यहाँ समाचार आते हैं। और उन खबरों की हमारे यहाँ लगातार स्क्रीनिंग होती है। मुख्य खबरों की सुर्खियाँ हमारे लोक-संचार कक्ष में हर दिन लगाई जाती है, जिससे

चंद्रवासी खाली चंद्रमा के नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के समाचार रोजाना सुबह होते ही जान लेते हैं। हमारे इंटरनेट पर भी जो अखबार नजर आते हैं, वे खाली चंद्रमा के ही नहीं, सारी दुनिया की खबरें देते हैं! तो यह मुश्किल नहीं, कतई मुश्किल नहीं, हमारे लिए यह जानना कि धरती पर क्या हो रहा है? और खासकर चंद्रमा के बारे में कोई लिखे, तो उसके बारे में तो हमारी दिलचस्पी होना लाजिमी है। तो मोटी-मोटी बातें तो यहाँ हर कोई जानता है और अगर कोई चाहे या कोई खास रुचि हो तो दुनिया की हर खबर बारीक-से-बारीक डिटेल्स भी जान सकता है।''

''तो क्या दूसरे ग्रहों पर भी आपके अखबारों के संवाददाता काम करते हैं?'' आशुतोष ने जानना चाहा।

''हाँ-हाँ क्यों नहीं! चंद्रवासियों के सारे अखबार असल में विश्व एडीशंस होते हैं। इसलिए हर अखबार को दुनिया भर की खबरें देनी ही होती हैं। इसीलिए सारी दुनिया में हमारे संवाददाताओं का जाल बिछा पड़ा है। हाँ, वे खबरें हमें जिन सूक्ष्म यंत्रों के जरिए देते हैं, अभी आप उनकी कल्पना ही नहीं कर सकते। क्योंकि तकनीकी ज्ञान-विज्ञान के लिहाज से अभी धरती चंद्रमा से पिछड़ी हुई है। तो जो संवाददाता हमें खबरें देते हैं, हर इतवार को वे खुद यहाँ आते हैं और अपने-अपने क्षेत्रों का पूरा हालचाल बताते हैं। हर इतवार को पूरे चंद्रलोक के प्राणी एक विशाल जनसभा की शक्ल में जुटते हैं और फिर यहीं मेले-ठेले, पिकनिक, खेलकूद और उल्लास! कितना ही जीवन यहाँ चारों ओर ठिठका हुआ नजर आता है। खेल-का-खेल और जानकारी की जानकारी। इस तरह से चंद्रलोक पर आप देखेंगे कि सामाजिकता कहीं अधिक है।'' दीपंकर ने कहा।

''पर जब पृथ्वीवासियों के लिए आपके दिलों में इतनी मोहब्बत है, तो उस दिन अपने आनंद-पर्व में पृथ्वी-ग्रह के कुछ विशेष प्रतिनिधियों को आप क्यों नहीं बुलाते हैं?'' आशुतोष ने जानना चाहा।

''माफ कीजिए, आपके यहाँ पृथ्वी पर जितनी हिंसा और भ्रष्टाचार है, उतना किसी और ग्रह में नहीं है। इसीलिए जानबूझकर अपने आपको बचाने के लिए दूर-दूर रहना पड़ता है। यहाँ तक कि इसीलिए हमें अदृश्य हो जाना पड़ा। आपमें से ज्यादातर लोगों ने यह मान लिया था कि चंद्रमा पर जीवन नहीं है और वह बस, बेडौल पत्थरों का ग्रह है और हम आपके इस झूठे विश्वास पर नाराज नहीं, खुश थे।''हमें लगा, आप लोग यही मानते रहें तो हम लोग सुरक्षित रहेंगे। धरती पर किसी ने इस झूठ को तोड़ने की भरसक कोशिश नहीं की। नए उदीयमान वैज्ञानिकों में बस एक आपको यकीन था आशुतोष कि चंद्रलोक जीवन-विहीन नहीं हो

सकता। जरूर चंद्रवासी हैं और हमसे कहीं ज्यादा समुन्नत हैं! भारतीय मिथकों में, जो यह विश्वास था, उसी ने आपको बल दिया और आप अपनी कोशिशों में लगे रहे। आज आपने अपने विश्वास को असलियत में बदलते देख भी लिया। पर सच कहें तो हमें डर है कि कहीं धरती के लोगों को यह बात पता चले तो वह फौरन भीड़-की-भीड़ बनाकर चले आएँगे और फिर हमारे लिए मुसीबत···!'' दीपंकर ने थोड़े तैश में आकर कहा।

चंद्रेश्वर ने, जो थोड़ा विनम्र था, बात सँभाली, ''हालाँकि यह ठीक है कि यह चश्मा···! अत्यंत उन्नत तकनीक से बना यह जादुई चश्मा बड़े काम की चीज है और बगैर इसके चंद्रलोक और उसकी असलियत को देख पाना नामुमकिन है, पर फिर भी···एक भय जरूर चंद्रवासियों के दिलों को मथता रहता है। माफ करें, इसके पीछे आप पृथ्वीवासियों द्वारा अतीत में दिए गए जख्म ही हैं, जो जाने कब फिर-फिर हरे हो जाते हैं!''

इस पर आशुतोष क्या कहता! उसका सिर जैसे खुद-ब-खुद नीचे झुका जा रहा था और पैर जमीन में गड़ते जा रहे थे। उसे इस कदर शर्मिंदा देखकर दोनों चंद्रवासियों ने आग्रह किया, ''क्या यह संभव है कि आपने चंद्रलोक पर जो कुछ देखा और उसके रहस्यों को जाना, उसके बारे में कुछ न लिखें, ताकि एक बड़ा रहस्य रहस्य ही रहे। कम-से-कम हम चंद्रलोकवासियों का इससे बड़ा भला होगा।''

पर आशुतोष को यह किसी कदर मंजूर नहीं था। उसने साफ लफ्जों में कहा, ''नहीं, मुझे लिखना ही होगा। मैं यह सब न लिखूँ तो नहीं चलेगा। बल्कि यह तो मेरी बहुत बड़ी हार होगी। बचपन से ही जब से मैंने होश सँभाला, मेरा यह विश्वास था कि चाँद पर जीवन है और चंद्रलोकवासी भी हमारी ही तरह के प्राणी होते हैं। भले ही उनकी सभ्यता हमसे ज्यादा उन्नत सभ्यता हो!···आज जब मेरा विश्वास हकीकत में बदला है तो मेरा तो मन होता है कि मैं खुशी से चीखकर धरती के उस छोर से इस छोर तक सभी लोगों को यह बताऊँ कि मैंने एक सत्य को पा लिया है—एक महासत्य को पा लिया!'' कुछ रुककर आशुतोष ने कहा, ''हाँ, पर मैं धरतीवासियों को आप लोगों का यह संदेश जरूर दे दूँगा कि वे चंद्रमा पर तभी आएँ—तभी अपने पैर यहाँ रखें, जब वे मन से पूरी तरह निर्मल हो चुके हों और हिंसा और प्रदूषण से मुक्त हों।''

इसपर चंद्रवासियों ने आशुतोष को गले से लगाकर दाद दी और उसे चंद्रलोक के विशिष्ट अधिकारियों और सम्मानित नागरिकों से मिलाने ले गए। इनमें वैज्ञानिक,

लेखक, कलाकार, चित्रकार, चिंतक, विचारक, दार्शनिक सभी थे। उनसे बात करते हुए आशुतोष को लगा ही नहीं कि वह धरती पर नहीं, चंद्रलोक में विचरण कर रहा है और चंद्रलोक के वासियों से मिलकर विचारों का आदान-प्रदान कर रहा है।···हाँ, सबसे मिलते हुए उसने एक बात जरूर महसूस की कि चंद्रलोक में जिससे भी मिलो, वह इतवार का जरूर जिक्र करता है। हर किसी ने उससे यही आग्रह किया कि आ ही गए हो, आशुतोष, तो हमारे सुखद और प्रसन्न इतवार के मेले में जरूर शरीक होना। यह सचमुच एक अद्‌भुत मेला है और चंद्रलोक में बगैर किसी नागा के, हर इतवार को यह मेला आयोजित होता ही है, जिसमें चंद्रलोक के प्राणी उमड़कर आते हैं और शामिल होते हैं।

: 5 :

और फिर वह इतवार भी आया, जब चंद्रलोक के उस महा विशाल मेले में वहाँ के निवासी से उत्साह से भरकर उमड़ पड़े थे। पर इस बार के मेले की खासियत यह थी कि उसमें आशुतोष के सम्मान में एक शानदार भोज दिया गया था, जिसमें सभी चंद्रवासी आमंत्रित थे। पहले तो वे सब आशुतोष को देखकर शंकित हुए, पर फिर धीरे-धीरे आशुतोष की बातों और उसकी सरल भावना ने सभी को मोह लिया। सभी को लगने लगा कि यह तो पृथ्वीलोक का ऐसा प्रतिनिधि है, जिसके दिल में प्यार और मोहब्बत भरी हुई और नफरत रंच-मात्र भी नहीं है!···यह पता लगते ही चंद्रवासियों ने आगे बढ़कर आशुतोष का स्वागत किया और उसे धरती के बारे में तरह-तरह के प्रश्न करके जानकारियाँ हासिल करने लगे।

जिस महा विशाल शानदार पार्क में इस मेले का आयोजन हुआ था, आशुतोष की आँखें तो उसे देख-देखकर थकी जा रही थीं। दूर-दूर जहाँ तक उसकी निगाहें जातीं, बस लोग-ही-लोग नजर आते। हँसते हुए, प्रसन्न, खुशनुमा लोग जिन्होंने शायद दु:ख को जाना ही नहीं था और हिंसा, ईर्ष्या जैसी बुराइयों को मीलों पीछे छोड़ चुके थे। लिहाजा आशुतोष को उस मेले में बस खुशियाँ और प्यार के रंग बरसते नजर आ रहे थे, जो आकाश में उड़ते रंग-बिरंगे गुब्बारों की तरह सबके दिलों में उत्साह भर रहे थे। लोग या तो टोलियों में बैठे थे या फिर आसपास घूम-फिर रहे थे। सबको अपने मनपसंद खाने-पीने की छूट थी और इतना बड़ा वह मेला था, जिसमें किस्म-किस्म के झूले, सर्कस और फिल्में थीं। तरह-तरह के तमाशे भी···और वह मेला रात भर चलता रहा।

आशुतोष को सबसे ज्यादा मजा तब आया, जब उसने एक सिनेमा घर में यह विज्ञापन देखा कि इसमें रात भर धरती के अनोखे मुल्क भारत के महान् कलाकार

राजकपूर की फिल्में दिखाई जाएँगी! आशुतोष चौंका, 'राजकपूर क्या यहाँ···चंद्रलोक पर भी···?' उसकी यह जिज्ञासा और भोला प्रश्न सुनकर उसके साथ चल रहे चंद्रलोक के एक वैज्ञानिक चंद्रहासन ने मधुर-मधुर मुसकराते हुए कहा, ''और क्या तुम समझते हो आशुतोष, कि राजकपूर सिर्फ तुम्हारी ही जागीर है? अरे भई, महान् कलाकार किसी एक देश या ग्रह के नहीं होते, वे सारे विश्व और ब्राह्मांड के होते हैं! और राजकपूर ही क्या, सभी ग्रहों के महान् कलाकारों की महान् फिल्में हम लोग यहाँ देखते-दिखाते हैं। हालाँकि यह अलग बात है कि राजकपूर जैसी लोकप्रियता यहाँ किसी को नहीं मिली। समझो कि चंद्रलोक का बच्चा-बच्चा राजकपूर का दीवाना है। उसकी 'आवारा', 'श्री 420', 'मेरा नाम जोकर', 'बूट पालिश'—शायद ही कोई फिल्म होगी, जिसका एक-एक संवाद और गाना हम चंद्रवासियों को रटा न पड़ा हो।

इसपर आशुतोष को कुछ हँसी आ गई। बोला—''माफ कीजिए, यह तो बड़ी अजीब बात लगती है। आप चंद्रवासी हम लोगों से यानी धरती के लोगों से तो इतनी नफरत करते हैं, पर हमारी फिल्में और कलाकार आपको दीवानगी की हद तक प्रिय हैं···यह बात तो कुछ समझ में नहीं आई!''

''देखिए-देखिए, हमें समझने की कोशिश कीजिए!'' चंद्रहासन ने बीच में टोकते हुए कहा, ''आपने गलत कहा कि हम आपसे नफरत करते हैं। हम बिलकुल आपसे नफरत नहीं करते···बल्कि सच्ची बात तो यह है कि हम धरती के कुछ लोगों से ही नफरत करते हैं। और इससे भी सही बात यह है कि हम उनसे नफरत नहीं करते, बल्कि जिनके दिलों में नफरत भरी है, उनसे थोड़ा डरकर रहते हैं। हमारा मानना है कि धरती पर भी ज्यादातर लोग प्यार और शांति से रहना चाहते हैं, लेकिन उन्हें रहने नहीं दिया जाता। खासकर राजनेता उन्हें लड़ाते हैं। क्योंकि जनता लड़ती रहे, इसी में उन्हें फायदा है। आपको आश्चर्य होगा कि इसीलिए हमारे यहाँ राजनीति नहीं चलती, बल्कि कहना होगा कि चंद्रलोक में सच्चा प्रजातंत्र है। यहाँ सच में प्रजा ही निर्णय करती है! कोई भी मसला हो, उसपर विचार और निर्णय करने के लिए एक अलग समिति बना दी जाती है और वह पूरी समिति जो भी निर्णय करे, उसे सभी को मानना पड़ता है···''

''अच्छा कोई राजा नहीं, कोई रानी नहीं···मंत्री और प्रधानमंत्री भी नहीं! तो फिर आप लोगों का काम कैसे चलता है? शासन और व्यवस्था कैसे चलती है?'' आशुतोष ने थोड़ा हैरान होकर पूछा।

इसपर चंद्रहासन ने चंद्रलोक की मुकम्मल व्यवस्था के बारे में आशुतोष को

जो कुछ बताया, उससे उसकी हैरानी कम होने की बजाय बढ़ ही गई, लेकिन उसमें खासी प्रसन्नता भी शामिल थी। क्योंकि उसने समझ लिया था कि जो चंद्रलोक में हो सकता है, वह पृथ्वीलोक पर भी हो सकता है। बस, थोड़े दृढ़ इरादे की जरूरत है।

तभी आशुतोष का ध्यान एक और समस्या की ओर गया। उसने पूछा, ''मिस्टर चंद्रहासन, अभी-अभी आपने बताया कि दुनिया के हर देश की बनी फिल्में आप देखते हैं। दुनिया की हर भाषा का साहित्य डिजिटल फार्म में आपके पुस्तकालय में है, जिसका यहाँ निरंतर अध्ययन किया जाता है। तो क्या भाषा की समस्या आपको परेशान नहीं करती?''

इसपर चंद्रहासन से मुसकराते हुए कहा, ''भई आशुतोष, हमारे पास जो आधुनिकतम सॉफ्टवेयर है, वे दुनिया की किसी भी भाषा को पढ़, समझ और लिख सकते हैं और उसका अनुवाद चंद्रलोक की भाषा चंद्रायनी में कर सकते हैं। इसलिए दुनिया की किसी भी भाषा को समझने में हमें मुश्किल नहीं आती। असल में हमारे सॉफ्टवेयर भाषा की समस्या को समस्या नहीं रहने देते और हम अलग-अलग मुल्कों की भाषाओं का खासा आनंद भी लेते हैं।''

ऐसी ही बातें। बातें, खूब बातें··· ! आशुतोष रात भर चंद्रलोक के उस प्रसन्नता और उल्लास भरे मेले में घूमता रहा। उसे लग रहा था कि वह गुब्बारों की तरह हवा में उड़ रहा है, फूलों की तरह महक रहा है और उड़ते-उड़ते सपनीले आकाश के तारों को छू आया है!

रात भर का वह मेला आशुतोष के लिए एक जिंदगी भर न भुलाया जा सकनेवाला रंगभरा सपना भी था, जिसके रंगों की चमक कम होने की बजाय, बढ़ती ही जाती थी और उसमें खुशियों की ओस टपक रही थी। शायद इसलिए कि चंद्रवासियों के प्यार की पूरी ऊष्मा आशुतोष के साथ थी। मानो चंद्रवासियों ने अपने प्यार से आशुतोष को नहला दिया हो।

चलते समय आशुतोष को चंद्रलोक के निवासियों ने ही नहीं, बल्कि सभी ग्रहवासियों ने एक-से-एक सुंदर और बेशकीमती उपहार दिए। और फिर आशुतोष जिस तरह प्यारभरा धड़कता दिल लिये चंद्रमा पर आया था, उसी तरह खुशी से कँपकँपाती उम्मीदों के साथ धरती की ओर उड़ चला। चंद्रलोक के वासियों की शुभकामनाएँ और प्यार उसके साथ था।

: 6 :

धरती पर जाकर आशुतोष ने चंद्रलोक की यात्रा का वर्णन बताते हुए चंद्रवासियों

के प्यार का जिक्र किया तो धरती पर तो मानो भूचाल आ गया। जब आशुतोष ने धरती के लोगों के बारे में चंद्रवासियों की राय बताई तो कइयों ने शर्मिंदगी महसूस की और सोचा, 'क्या हम पृथ्वी को बुराइयों और नफरत से नहीं बचा सकते?' फौरन इसी इरादे से एक बहुत बड़ा विश्व सम्मेलन बुलाया गया, जिसमें जोर-शोर से यह बात दोहराई गई कि पूरी धरती एक परिवार है। हमें सिर्फ एक देश की सीमाओं में सिकुड़कर नहीं रहना, बल्कि पूरे मानव-परिवार से प्यार करना है। और अगर ऐसा हो गया तो नफरत की दीवारें ढह जाएँगी और कोई किसी के खून का प्यासा न रह जाएगा।...

तेजी से कोशिशें हुईं, योजनाएँ बनीं और हर किसी ने दिल से साथ दिया। यह पृथ्वी का एक नया 'कायाकल्प' था।

जल्दी ही पृथ्वी को सारे रोगों, शोकों और परेशानियों से बचाकर एक नई-नई, सुंदर और सुहानी पृथ्वी बनाने का आंदोलन शुरू हो गया। धरती के एक छोर से दूसरे छोर तक। और फिर चंद्रवासियों का तथा दूसरे ग्रहों के लोगों का वहाँ आना-जाना शुरू हुआ। पहली बार आशुतोष बहुत से लोगों को साथ लेकर चंद्रयात्रा पर गया। और वहाँ सभी को उसने भ्रष्टाचार और बुराइयों से मुक्त धरती की असलियत बताई। साथ ही धरती के लोगों को यह समझाया कि अगर चंद्रवासी आपस में प्यार करते हुए, हमसे भी ज्यादा सभ्य और उन्नत हो सकते हैं तो हम क्यों नहीं हो सकते! हम भला बुद्ध और ईसा की करुणा के रास्ते पर क्यों न चलें?...कौन हमें रोक रहा है!

आशुतोष की बातों का सब पर गहरा असर पड़ा और जब धरती के लोग चंद्रमा से उतरकर नीचे आए तो उनकी आँखों में धरती को भी चंद्रमा के समान नया-नया झिलमिल-झिलमिल रूप देने का सपना तैर रहा था। और एक नया सुहाना भविष्य मानो पास आने की प्रतीक्षा में था।

□

गिल-गिल सेवन चौकीदार

यह एक अजीब से बूढ़े वैज्ञानिक प्रोफेसर मिशी पा का किस्सा है, जो किसी जमाने में शिंपाई नगर में रहा करते थे। सचमुच अजब थे प्रोफेसर मिशी पा, जिन्हें देखते ही लगता था, वे कुछ खास हैं और उन लोगों में से हैं, जो रात-दिन अपने आप में और अपने खयालों में खोए रहते हैं, अपने शरीर तथा आसपास की उन्हें कोई खास खबर नहीं होती। यों भी उनकी दाढ़ी हरदम बढ़ी हुई रहती। हाथ में सिगार। और सुबह हो या शाम, कुछ सोचते हुए वे अपने घर के सामनेवाले लॉन में धीरे-धीरे टहलते दिखाई पड़ते। फिर पूरे दिन उनकी एक झलक देख पाना भी कठिन हो जाता।

प्रोफेसर मिशी पा बहुत कम ही घर से निकलते थे। सिर्फ तभी वे यह कोठी छोड़कर कुछ दिनों के लिए जाते थे, जब उन्हें रोबॉट-विज्ञान यानी रोबॉटिक्स पर किसी खास राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में हिस्सा लेने के लिए जाना पड़ता। और सेमिनार से वापस घर आते ही वे फिर उसी तरह दीवानगी से अपने काम में लग जाते, जिसके लिए वे दुनिया भर में मशहूर थे। उनके दोस्त अकसर कहा करते थे कि वे किसी जवान आदमी से भी चार गुना काम करते हैं। और यह कोई आज की बात नहीं, बरसों बरस से यही सिलसिला चला आता था। सच तो यह है कि जिस काम में प्रोफेसर मिशी पा लगे थे, वह उनके लिए खाली साइंस का एक सब्जेक्ट नहीं, जिंदगी थी।

वे अकसर कहा भी करते थे, ''भई, साइंस तो किस्से-कहानी की दुनिया से भी ज्यादा दिलचस्प चीज है। मुझे तो इसी में मजा आता है। इसीलिए काम करते-करते कब सुबह से रात हो गई, मुझे पता ही नहीं चलता।'' और हकीकत सचमुच यही थी।

प्रोफेसर मिशी पा बरसों से जिस काम में लगे थे, वह था रोबॉटिक्स। यानी

किस्म-किस्म के रोबॉट तैयार करने का विज्ञान। हालाँकि लोगों को मोटे तौर से उनकी बात कुछ समझ में नहीं आती थी। वे कहा करते थे, ''अब देखिए प्रोफेसर साहब, यह तो हम भी जानते हैं कि आदमी ने कुछ ऐसे रोबॉट बना लिये हैं, जो वक्त-जरूरत थोड़ी-बहुत उनकी मदद कर सकते हैं, जैसे सुबह-सुबह उठाकर हाथ में अखबार या चाय का प्याला थमा देना या फिर थोड़ा-बहुत और भी काम-धाम या तमाशा कर सकते हैं, मगर इससे क्या? है तो यह एक खेल-तमाशा ही न! इससे क्या जिंदगी बदल जाएगी?''

सुनकर प्रोफेसर मिशी पा को हँसी आ जाती। वे समझ नहीं पाते कि ऐसा कहने वालों को क्या बताएँ, कैसे समझाएँ कि वे रोबॉटिक्स को वहाँ ले जाने का सपना देख रहे हैं, जहाँ जिंदगी एकदम बदल जाती थी। और रोबॉट को आगे बढ़कर इस तरह आदमियों की दुनिया में हिस्सा लेना था कि सबकुछ बदल जानेवाला था, सबकुछ। इसी में वे रात-दिन जुटे थे। खास बात यह कि डॉ. मिशी पा ने न सिर्फ इस बारे में असाधारण पेपर्स लिखे और प्रकाशित करवाए, बल्कि उन्होंने खुद ऐसे एक-से-एक कमाल के रोबॉट बनाए कि रोबॉटिक्स में उनके काम को देखने के लिए दुनिया भर से वैज्ञानिक आते थे। इंटरनेट पर सारी दुनिया के वैज्ञानिक रोबॉटिक्स से जुड़ी समस्याओं और जटिल सवालों को लेकर उनसे डिस्कस करते और प्रोफेसर मिशी पा किसी को निराश नहीं करते थे। पूरी दुनिया में उनके शिष्य थे, जो उनसे सीखते और उनसे प्रेरणा लेकर काम करते थे, पर अपनी निजी जिंदगी में वे अकेले थे। हाँ, कुछ रोबॉट ही थे उनकी जिंदगी, या फिर एक बूढ़ा नौकर सैम, जो पता नहीं कब से उनके साथ था? न यह सैम को याद था और न प्रोफेसर मिशी पा को।

कभी किसी सेमिनार में जाना होता तो वे सैम को अपने साथ ले जाते थे। उसी को पता होता था कि प्रोफेसर मिशी पा को क्या खाना-पीना, पहनना है, किस समय कौन सी दवाएँ लेनी हैं और उनकी कौन सी जरूरी चीज कहाँ रखी है? प्रोफेसर मिशी पा, उनका बूढ़ा नौकर सैम और किस्म-किस्म के रोबॉट, बस यही था उनका परिवार। और काम, काम, रात-दिन काम, बस यही प्रोफेसर की जिंदगी थी।

□

सिर्फ थोड़े से दोस्त थे प्रोफेसर मिशी पा के, जो कभी-कभी उससे मिलने आया करते थे। तभी इस बड़ी सी कोठी में हमेशा पसरा रहनेवाला सन्नाटा थोड़ा टूटता था। शिंपाई नगर में काफी बड़ी सी नीले रंग की कोठी थी उनकी, जिसका स्थापत्य कुछ अजीब ही था। ज्यामिति की अजब-गजब आकृतियों की तरह। वही

उनका घर था, वही प्रयोगशाला।

कॉलोनी की आसपास की और कोठियों से काफी अलग उसकी पहचान थी। शायद इसीलिए आसपास के लोग मखौल में उसे विचित्र कोठी या जंतर-मंतर कहा करते थे। सबसे अजीब चीज थी, उस विचित्र कोठी के बाहर गेट के बाईं ओर बाहर काले भैरव की सी शक्लवाला लोहे का एक अजब सा ढाँचा। जो भी लोग आसपास से गुजरते, उनकी नजर में यह जरूर आता था। दूर से देखने पर उसमें एक मनुष्याकृति दिखाई पड़ती, पर बड़ी बेडौल सी। अड़ोसी-पड़ोसी उसे देखते और हँसते, ''अरे प्रोफेसर मिंशी पा ने भला यह क्या तमाशा किया? यह तो अजीब है, बहुत ही अजीब!''

उसके बारे में लोग तरह-तरह की बातें भी करते। कोई-कोई कहता, ''अरे, तुम जानते नहीं, यह डिठौना है, डिठौना। प्रोफेसर मिशी पा ने दरवाजे पर इसलिए बैठा रखा है कि वे रात-दिन जिस महान् काम में जुटे रहते हैं, उसपर कोई नजर न लग जाए।''

उनके पड़ोसी डेंटिस्ट डॉ. सोनी का कहना था, ''नहीं भाई, यह ऐसी मामूली चीज नहीं है। देखने में चाहे जो भी लगे, पर प्रोफेसर का बहुत लाड़ला है यह। मैंने खुद देखा है, प्रोफेसर मिशी पा इस कोठी से निकलकर कहीं जाते हैं तो जाने से पहले थोड़ी देर इस भैरव के पास खड़े होकर कुछ बुद-बुद सा करते हैं, फिर उनके कदम बाहर की ओर मुड़ते हैं।''

कुछ और अड़ोसी-पड़ोसी कई बार कयास लगाते, ''आखिर इस काले भैरव के पास खड़े होकर क्या बुद-बुद करते हैं प्रोफेसर मिशी पा? कहीं वे सनक तो नहीं गए?''

और किसी-किसी को आशंका थी, ''कहीं यह कोई तंत्र-मंत्र या जादू का चक्कर तो नहीं?''

मगर कुछ सयानों का मानना था कि ''नहीं-नहीं, यह कुछ और ही मामला है। कोई चाहे तो प्रोफेसर मिशी पा से सीख सकता है कि मशीनों से भी कैसे प्यार किया जा सकता है?''

एक-दो ने तो फुसफुसाते हुए यह भी कहा, ''अरे, आपको पता नहीं, यह उनका प्यारा चेला है।''

कॉलोनी की वेलफेयर एसोसिएशन के प्रेजिडेंट मि. रंधावा का कहना था, ''हाँ, प्रोफेसर मिशी पा के पास लोग आते तो बहुतेरे हैं, पर उनके साथ काम करनेवाला कोई नहीं है। शायद इसीलिए इसे रखा गया है।''

''पर अगर ऐसा ही है तो यह बाहर क्यों है? भीतर क्यों नहीं?'' लोग पूछते।

''इसलिए कि यह चौकीदार है और भई, चौकीदार तो बाहर ही होगा न।'' जवाब में कोई-कोई कह उठता।

''मगर यह क्या चौकीदारी करेगा?'' डॉ. सोनी हैरानी जताते हुए कहते। इस पर लोग 'हा-हा-हा!' करके हँस देते।

''और फिर प्रोफेसर के पास ऐसा है क्या, जो कोई चुरा लेगा?'' कोई-कोई पूछ लेता।

इसपर फिर वैसी ही 'हा-हा, ही-ही' शुरू हो जाती।

''और क्या पता भई, इतना रात-दिन काम कर रहे हैं, कहीं ये सोना न ईजाद कर रहे हों। अंदर जरूर सोने और रत्नों का ढेर होगा, ढेर!'' बगल के बिजनेसमैन मि. गुप्ता होंठ दबाकर थोड़े शरारती अंदाज में कहते।

''कभी हम भी चलें?'' कहते-कहते उनके पड़ोसी पालकीवाला की मूँछें फड़कने लगतीं।

''हाँ, मगर देखते हो न, वह भैरव'''काला-काला!'' मि. रंधावा याद दिलाते और सब एक साथ जोर से हँस पड़ते।

□

लेकिन जो बात हँसी-हँसी में कही जाती है, वह कभी-कभी सच भी हो जाती है और पिछली सर्दियों में सचमुच ऐसा ही हुआ।

हुआ यह कि एक दिन जब प्रोफेसर मिशी पा अपने नौकर सैम को साथ लेकर पुणे में रोबॉटिक्स पर एक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में हिस्सा लेने गए थे, तभी आधी रात के समय उनके घर कुछ चोर आए। बेचारे चोर! खुद को बड़ा शातिर समझ रहे थे। उन्हें लगा, अकेली सुनसान कोठी में चोरी करने में भला खतरा ही क्या है। मजे में चोरी करो और घर का सारा कीमती सामान बटोरकर मजे में घूमते-टहलते हुए निकल जाओ। हालाँकि हुआ कुछ उलटा ही। चूहेदानी में जैसे चूहे फँसते हैं, वैसे खुद फँसा हुआ देखकर वे बेचारे अपनी किस्मत को रो रहे थे। और उस घड़ी को कोस रहे थे, जब उन्होंने रोबॉट विज्ञानी मिशी पा की इस विचित्र और रहस्यपूर्ण कोठी में चोरी करने का फैसला किया।

वे चोर आए तो प्रोफेसर मिशी पा के रोबॉटिक्स के कमाल के कारण फँसे कैसे और कैसे वे पकड़े गए? यह बड़ा ही मजेदार किस्सा है और यही नहीं, कैसे इस मामले में झटपट पुलिस को खबर मिली, कैसे हजारों मील दूर बैठे प्रोफेसर

मिशी पा तथा उनके दोस्त एकाएक सबकुछ जान गए और हर ओर धड़ाधड़ खतरे की घंटियाँ खड़कने लगीं? इसके पीछे भी प्रोफेसर मिशी पा की वही साइंस काम कर रही थी, जिसकी बाबत वे अकसर बात किया करते थे कि साइंस तो किसी किस्से-कहानी से भी ज्यादा दिलचस्प चीज है।

यहाँ तक कि सारा मोहल्ला हैरान था कि यह हुआ क्या और कैसे! प्रोफेसर मिशी पा पर बात-बेबात हँसनेवाले आस-पड़ोस के चेहरे एकदम भौचक्के थे। मिनटों में एकदम ऊँचे लेवल पर खोजबीन शुरू हो चुकी थी। पुलिस अधिकारियों की जीपें अँधेरे में रोशनी की शहतीरें फेंकती तेजी से यहाँ से वहाँ दौड़ रही थीं।

असल में हुआ यह कि उस कोठी को सुनसान समझकर चोरी करने आए चोरों के दल में से एक चोर प्रोफेसर मिशी पा की कोठी के दरवाजे के पास आया और टोह लेने के इरादे से चुपके से इधर-उधर देखता हुआ वहाँ टहलने लगा। मास्टर-की के जरिए कोठी का ताला खोलकर अंदर घुसने से पहले वह अच्छी तरह देख लेना चाहता था कि कहीं कोई आसपास जागा हुआ तो नहीं है या कोई देख तो नहीं रहा? बस, यही वह समय था, जब दरवाजे के एक ओर मजबूती से कदम जमाए उस काले से अघोर भैरव की आँखें अचानक किसी तेज टॉर्च की तरह चमकीं। फिर झप से कुछ अजीब सी नीली किरणें निकलीं और उस काले भैरव में ही समा गईं।

चोर कुछ हैरान-परेशान हुआ। सोचने लगा, ''अरे, यह क्या? यह कैसी बैटरी सी चमकी थी, अभी-अभी? कहीं यह प्रोफेसर का कोई कमाल तो नहीं?''

पर फिर उसने सोचा, ''नहीं-नहीं, मैं भी कैसा बुद्धू हूँ! यह तो यों ही हुआ होगा बाईचांस, और मैं बिना बात ही डर गया। भला यह लोहे का बेढंगा सा ढाँचा मेरा क्या कर लेगा? और हाँ, आसपास सन्नाटा है, घोर सन्नाटा। यों भी इतनी कड़ाके की सर्दी में भला कौन जाग रहा होगा? हमें अब झटपट अपना काम शुरू करना चाहिए।''

वह तो इसकी कल्पना ही नहीं कर सकता था कि इतनी देर में ही भैरव अपना आधे से ज्यादा काम कर चुका था। उसने न सिर्फ उसका फोटो, बल्कि उसके माइंड को भी स्कैन कर लिया था। और उसके मन में चोरी का जो इरादा था, उसे जानने के साथ ही पुलिस और प्रोफेसर मिशी पा को बिग अलर्ट देते हुए पूरी तैयारी कर ली थी।

इस सबसे बिलकुल अनजान चोर ने ताला खोलने के लिए मास्टर-की निकाली और फिर चौकन्ना होकर गेट की ओर बढ़ा। वह अब ज्यादा समय खोए बगैर

जल्दी-से-जल्दी अपना काम पूरा कर लेना चाहता था।

पर चोर अभी गेट से कुछ ही दूर था कि तभी अजीब सी गुर्र-गुर्र की आवाज सुनाई दी। वह चौंककर इधर-उधर देखने लगा, भला यह आवाज कहाँ से आई? कहीं कोई कुत्ता या पिल्ला तो नहीं आ गया? पर वह आगे कुछ सोच पाता, इतने में ही अचानक एक मजबूत बाँह उसकी ओर बढ़ी। लोहे जैसी मजबूत और सख्त बाँह, जो उसकी गरदन को जकड़ना चाहती थी!

अब तो चोर वाकई चकराया। घबराहट के मारे वह पसीने-पसीने था।

''ओह, यह क्या? लगता है, खतरा सचमुच बड़ा है। यह तो वाकई प्रोफेसर की जुगाड़ है···कि कोई आए तो फँस जाए!'' चोर घबराया। वह यह भी भूल गया कि अपने साथियों को चेता दे या कि मदद के लिए बुलाए।

इसकी बजाय उसने तेजी से भाग निकलने की कोशिश की, पर हैरानी इस बात की थी कि वह जितनी दूर जाता, वह रहस्यपूर्ण बाँह भी उतनी ही लंबी होती जा रही थी। और फिर इतना ही नहीं, उसने खुद को उसके पास उसी तरह खिंचकर आते देखा, जैसे लोहा चुंबक के पास खिंचकर चला आता है!

अब वह पूरी तरह काले भैरव की पकड़ में था और उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि चोर की हड्डियाँ चट-चट होने लगीं। उसने पूरा जोर लगाकर खुद को छुड़ाने की बहुत कोशिश की, पर जितना वह जोर लगाता, उस बाँह की पकड़ और-और मजबूत होती जाती!

''ओह, मारे गए! अब तो बच पाना मुश्किल है।'' चोर ने धीरे से बुदबुदाते हुए कहा।

इतने में काले भैरव का पेट खुला और उसमें से एक गोल सा टोप निकला। धीरे-धीरे वह चोर के सिर की ओर बढ़ने लगा और होते-होते उसके सिर के ऊपर फिट हो गया।

उसके बाद एक लंबी सी जंजीर निकली, जिसने चोर को पूरी तरह जकड़ सा लिया।

चोर के छिपे हुए साथी दूर से यह दृश्य देख रहे थे और उनकी बुरी तरह घिग्घी बँध गई थी। पर थोड़ी देर बाद हिम्मत करके वे निकलकर आए और पूरा जोर लगाकर चोर को भैरव की जकड़ से छुड़ाने लगे। मगर यह क्या? काले ठिगने रोबॉट को नया शिकार मिल गया। चोर के तीनों साथी एक-एक कर उसके साथ ही जकड़ गए।

अब सबके सिर पर वैसा ही एक-एक टोप नजर आ रहा था और हाथ-पैर

में जंजीरें, जिससे वे हिल-डुल तक नहीं सकते थे। यहाँ तक कि वे अपने हाथ-पैर भी नहीं हिला सकते थे।

उसके बाद फिर से 'गुर्र-गुर्र' की तेज आवाजें। तेजी से बत्तियाँ जलीं-बुझीं, फिर जलीं, फिर बुझीं। और थोड़ी ही देर में पुलिस की एक के बाद एक कई गाड़ियाँ पीं-पीं-पीं करती कोठी के पास नजर आईं। देखते-ही-देखते पूरी कॉलोनी में जगार हो गई। कड़ाके की ठंड के बावजूद आधी रात में ही कॉलोनी के तमाम लोग इकट्ठे हो गए। सबके चेहरे पर सवालिया निशान कि आखिर हुआ क्या?

उधर प्रोफेसर मिशी पा को भी एक-एक चीज की जानकारी मिल रही थी। इसके साथ ही उनके आसपास के मित्रों तक अलर्ट मैसेज पहुँच गया था। साथ ही पुलिस कमिश्नर को भी, जो प्रोफेसर मिशी पा के प्रशंसक थे और उनकी वैज्ञानिक प्रतिभा के कारण उनका बहुत सम्मान करते थे।

□

सुबह होने से पहले प्रोफेसर मिशी पा वापस आ गए थे। तब तक चोर और उसके तीनों साथी पुलिस की गिरफ्त में आ चुके थे।

पुलिस जब उन्हें पकड़कर ले जा रही थी, तो प्रोफेसर मिशी पा ने पुलिस कमिश्नर मि. भावे को थैंक्स कहा। पर मि. भावे का कहना था, ''प्रोफेसर मिशी पा, थैंक्स तो आपके इस चुस्त-दुरुस्त और हिम्मती चौकीदार को देना चाहिए, जिसने हमारे आने से पहले ही सारा काम कर दिया। सच्ची बात तो यह है कि हमारे लिए इसने कोई काम छोड़ा ही नहीं।''

कॉलोनी के सब लोगों की निगाहें भी उस काले भैरव पर ही गड़ी थीं, जिसे देखकर कभी-कभी वे प्रोफेसर मिशी पा का मजाक उड़ाया करते थे, पर आज अपनी आँखों से उन्होंने उसका जादू देख लिया।

सब-के-सब हैरान, भला यह कैसा चौकीदार है? वे प्रोफेसर मिशी पा से अनुरोध कर रहे थे, प्रोफेसर साहब, ऐसा एक जादूगर चौकीदार हमारे लिए भी बना दो।

''हमने चौकीदार तो एक-से-एक अच्छे देखे, पर यह आपका चौकीदार तो अनोखा है। रात हो या दिन, हरदम तैयार। सचमुच आदमी से ज्यादा चौकस है आपका यह रोबॉट!'' डॉ. सोनी को कहना था।

प्रोफेसर मिशी पा एक पल के लिए चुप रहे। फिर बोले, ''भई, मैं तो इन दिनों गिल-गिल सेवन चौकीदार की नेक्स्ट जनरेशन सामने लाने की तैयारी में लगा हूँ। वह जब बनेगा, तो उसे ही आपको भेंट करूँगा। पर चलिए, मुझे खुशी है कि

इस बहाने आपने मेरे रोबॉटिक्स को तो जान लिया।''

''जी हाँ, और उसकी अहमियत को भी।'' मि. रंधावा बोले।

''अब समझ में आया कि आप रात-दिन किस काम में जुटे रहते हैं और क्या काम कर दिखाना चाहते हैं?'' उनके पड़ोसी बिजनेसमैन गुप्ताजी ने कहा।

''यह तो मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है कि मेरे बिना बताए ही आप सबकुछ जान गए। इसका मतलब, गिल-गिल सेवन चौकीदार में कुछ बात तो है।'' प्रोफेसर मिशी पा मुसकराए।

सुनकर सब हँसने लगे। और सबके साथ-साथ प्रोफेसर मिशी पा भी आज पहली बार इतना खुलकर हँस रहे थे।

□

नीली किताब का रहस्य

उस अजीबोगरीब जर्मन जासूस आर.आर. विंटरटन का कभी पता न चलता, अगर अपना टीनू उर्फ मिस्टर लिटिल जासूस ऐसा कमाल न दिखाता, जिसके आगे आर.आर. विंटरटन के सारे तीर-तरकस बेकार हो गए। और बेचारा अंधी खाई में ऐसे गिरा···ऐसे कि भई क्या कहने!

अब तो हालत यह है कि हर कोई टीनू की पीठ थपथपाकर उसकी हौसला-अफजाई कर रहा है। हर किसी के होंठों पर शब्द हैं, ''हमारा लिटिल जासूस ग्रेट है, सिंपली ग्रेट!''

और पुलिस कप्तान मिस्टर श्रीवास्तव ने तो टीनू की भरपूर तारीफ करते हुए कहा, ''आज देश को ऐसे ही जागरूक और हिम्मतवाले बच्चों की जरूरत है। अगर टीनू के पापा चाहें तो बड़े होने पर खुशी-खुशी इसे पुलिस की कोई शानदार नौकरी दी जा सकती है। यह तमाम छँटे हुए, घाघ अपराधियों को पकड़कर पुलिस का हौसला ऊँचा करेगा तथा देश का नाम करेगा।''

ऐसा नहीं कि टीनू को इससे खुशी न हुई हो। बल्कि उसके भीतर अपने अभियान में सफल हो जाने की खुशी का पारावार ठाठें मार रहा था। और उसका मन हो रहा था कि वह नाचे, नाचता रहे देर तलक।

पर वह अजब परेशानी में फँसा था। सोच रहा था, कहीं पापा नाराज तो नहीं होंगे? आखिर जासूस को पकड़ने में जिस कैमरे का इस्तेमाल किया गया था, वह उसके पापा का ही था। और वह भी पापा के दफ्तर का। टीनू ने चुपके-चुपके उसका इस्तेमाल करके अपराधी को पुलिस की हथकड़ियाँ पहना दी थीं। पर टीनू के पापा यह कहाँ जानते थे! अभी तो उन्हें कुछ पता ही न था कि···

'जब उन्हें पता चलेगा तो···?' सोच-सोचकर टीनू परेशान था।

टीनू के पापा मिस्टर द्वारकानाथ शर्मा सी.बी.आई. में बड़े अफसर थे। टीनू ने

अपराधी को पकड़ने के लिए, जो टेक्टिस अपनाई थी, वह एक तरह से उसके पापा की ही बताई हुई थी। पर टीनू ने इतनी होशियारी से उसका इस्तेमाल किया था कि पहले ही निशाने में···दुश्मन साफ!

यों तो मि. द्वारकानाथ शर्मा कभी दफ्तर की कोई बात घर पर न बताते थे। वे जानते थे कि दीवारों के भी कान होते हैं। कहीं कोई ऐसी बात लीक न हो जाए, जिससे किसी अपराधी को फायदा हो जाए और वह कानून के शिकंजे से बच निकले!

पर होंठों को भरपूर बंद करने की कोशिश के बावजूद, दो-एक छोटी-छोटी बातें तो जब-तब उनके होंठों से फिसल ही पड़ती थीं।

सच तो यह है कि टीनू बचपन से ही शरारती और खासा इंटेलीजेंट है। उसके सवाल ही ऐसे होते थे कि मि. शर्मा न चाहते हुए भी कुछ-न-कुछ बेटे को बताने को मजबूर हो ही जाते थे। जैसे एक दिन टीनू ने पूछ लिया, ''पापा, पापा, सी.बी.आई. माने क्या? लोग कहते हैं आप जासूस है। मुझे भी लोग 'जासूस' का बेटा कहकर खिल्ली उड़ाते हैं। तो क्या सच है कि आप जासूस हैं? आप किसकी जासूसी करते हैं पापा और क्यों?''

टीनू की बात सुनकर मि. शर्मा एक पल के लिए भौंचक्के रह गए। उनकी समझ में नहीं आया कि वे उसे किस तरह जवाब दें कि उसके मन में खामखाह जो एक गलत तसवीर बना दी गई है, वह मिट जाए और वह नए या कहें कि सही ढंग से सोचने लगे।

आखिर कुछ सोच-विचारकर उन्होंने कहा, ''बेटे, जासूस पुराना शब्द है। असल में हम जासूसी नहीं करते, देश की सुरक्षा को हर घड़ी मजबूत करने की कोशिशों में लगे रहते हैं, ताकि दूसरे देश का कोई जासूस या अपराधी हमारे सुरक्षा-घेरे को भेदकर हमारे देश, देशवासियों तथा देश के राजनेताओं और शासकों को कोई नुकसान न पहुँचा सके। यानी हम जासूस नहीं है, बल्कि दुश्मन के जासूसों और अपराधियों को पकड़ने का काम करते हैं। समझ गए न!''

''अच्छा पापा, लेकिन पता कैसे चलता है आपको किसी जासूस या अपराधी का?'' टीनू का अगला सवाल था।

''कई तरह से···!'' टीनू के पापा मुसकराकर बोले, ''उस व्यक्ति की बातों से। उसके व्यवहार, रहन-सहन, हर चीज से। यहाँ तक कि उसके चेहरे के हाव-भाव और उसकी बॉडी लेंग्वेज से भी। बड़े होओगे तो तुम खुद-ब-खुद समझ जाओगे।''

''और पापा, ऐसे अपराधी को पकड़ने और कानून के शिंकजे में कसने की तरकीब क्या है? टीनू ने गोल-गोल आँखें घुमाते हुए पूछा, ''क्या आप उसके इर्द-गिर्द जाल बिछाते हैं और वह उसमें मछली की तरह फँस जाता है?''

इस बार मि. शर्मा ने गौर से बेटे की ओर देखा। सोचने लगे, ''इस जरा से बच्चे को ऐसी चीजों से क्या मतलब है? कौन उसके दिमाग में ये बातें भर रहा है? जाल शब्द का इसे कैसे पता चला? हो सकता है, इसके साथियों में आपस में यह गप्पबाजी चलती हो, पर···यह उम्र बच्चे के खेलने की है या इन पेचीदगियों में उलझने की है?''

''पापा, आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया!'' पापा को चुप देखकर टीनू यह कहने से खुद को रोक नहीं पाया कि ''पापा, आपको ऑफिस से मना किया गया है न, इन बातों के बारे में बोलने से। कहा गया है न कि घर में अपनी पत्नी और बेटे को भी ये बातें नहीं बतानी, इसीलिए आप छिपाते हैं न!''

टीनू ने कहा तो मि. द्वारकानाथ शर्मा के चेहरे का रंग उतर गया। बोले, ''ऐसी तो कोई बात नहीं है बेटे!''

''तो पापा, फिर आप बताइए न, अपराधियों को पकड़ने की आप लोगों की टेक्टिस क्या है? मेरा मतलब, कोई अचूक तरीका, जिससे वह एकदम घिर जाए और बच न सके!'' टीनू ने जिद की।

मि. शर्मा ने सोचा, कुछ-न-कुछ तो बताना ही चाहिए। नहीं, तो पता नहीं टीनू के मन में इन सवालों को लेकर जाने कैसी गुत्थी बन जाए! बोले, ''टीनू बेटे, अपराधियों को पकड़ने की कोई एक रणनीति तो है नहीं। जैसा अपराधी होता है, उसके परिवेश और परिस्थितियाँ देखकर जैसा ठीक लगता है, वैसा ही कर लेते हैं। कोई बहुत पढ़ा-लिखा अपराधी है या एकदम अनपढ़, इससे भी फर्क पड़ता है। फिर उसका अपराध किस किस्म का है, यह भी देखना होता है। हम अपराधी के जीवन जीने के ढंग या जीवन-शैली को देखते हैं। उसके बारे में तमाम तरह की जानकारियाँ हासिल करते हैं। सबूत जुटा लेते हैं। फिर जब जैसा जरूरी होता है, वैसा कर लेते हैं। कभी-कभी तो सीधा छापा डाल देते हैं···कभी पक्का सबूत न होने पर पहले उसे किसी अपराध में फँसने दिया जाता है और हम दूर से छिपकर सबकुछ देखते हैं। फिर अपराधी रँगे हाथों पकड़ में आ जाता है। जैसे कोई घूसखोर अफसर किसी काम को करने के लिए घूस माँग रहा हो, तो वह अकसर इस तरह पकड़ में आ सकता है।''

''पापा, मैंने सुना है, कुछ लोग कैमरा छिपाकर रखते हैं और कैमरे की

फिल्म देखकर अपराधी को पकड़ लेते हैं—यानी कैमरे में उस अपराधी के कारनामों की पूरी वीडयो फिल्म···!'' टीनू से जानना चाहा।

''हाँ, ऐसा होता तो है।'' टीनू के पापा ने टालनेवाले अंदाज में कहा।

''तो पापा, क्या कैमरा इतना छोटा भी होता है कोई···कि छिपाकर रख दें और अपराधी को पता न चले!''

''हाँ, क्यों नहीं!'' टीनू के पापा ने हँसकर कहा, ''कैमरे तो आजकल इतने छोटे आने लगे हैं कि कोई चाहे तो उन्हें अपने बटनहोल में लगा ले और इससे इतनी साफ फिल्म हासिल हो सकती है कि क्या कहने!''

''पापा, मैंने एक फिल्म देखी थी। उसमें सैनिक पतंगें उड़ाकर पहाड़ के दूसरी ओर बसे शत्रुओं की जासूसी की खबरें पता कर लेते हैं। उन पतंगों पर भी शायद छोटे-छोटे कैमरे लगाकर यह काम किया गया होगा।'' टीनू ने पूछा।

''हाँ, ऐसा हो तो सकता है।'' टीनू के पापा ने कुछ सोचते हुए कहा, ''यहाँ तक कि लोग किताबों में भी कैमरे छिपाकर रख देते हैं और फिर दुश्मन की सारी गतिविधियाँ पता चल जाती हैं।''

''किताब में कहाँ पापा···उसकी जिल्द में?'' टीनू ने जानना चाहा।

''हाँ, और कहाँ!'' पापा ने कुछ टालनेवाले अंदाज में कहा, ''पर तुझे अभी से ऐसी चीजों की क्या पड़ी है! बड़ा होकर जो ठीक लगे, करना। पर अभी तो अपनी पढ़ाई में मन लगा। चल तो, अपनी गणित की किताब निकालकर नई वाली यूनिट के सवाल कर ले।''

पर टीनू की उलझन शायद अभी भी सुलझी नहीं थी। बोला, ''पापा, मुझे छोटावाला कैमरा देखना है। एक बार, बस एक बार मुझे दिखा देना!''

पापा हँसकर बोले, ''तू तो बहुत जिद्दी है टीनू!''

फिर टीनू के पापा जल्दी से अंदर से एक चमड़े की जिल्दवाली मोटी किताब लेकर आए। उसमें किताब के पीछे एक जगह छोटा सा नीले रंग का स्टिकर चिपका था। टीनू के पापा ने उसे सावधानी से उतारा, तो नीचे से गत्ते का एक टुकड़ा निकला और उसके नीचे था कैमरा। टीनू के पापा बोले, ''देख टीनू, तुझे दिखाऊँ! जब इस कैमरे से काम लेना होता है तो बस, ऊपर का गत्ता निकाल दिया जाता है और कैमरा झट अपना काम शुरू कर देता है। गत्ता निकालकर इसे कमरे में कहीं भी रख दे, तुझे खुद-ब-खुद पता चल जाएगा।''

टीनू भला यह मौका कैसे छोड़ता! उसने किताब को झट अलमारी के ऊपरवाले खाने में इस तरह रखा कि कैमरे का लैंस बाहर की तरफ था। उसके बाद कोई

पाँच मिनट तक टीनू कमरे में इधर-उधर नाचता हुआ अलग-अलग मुद्राएँ बनाता रहा। कभी उसने पापा के पास आकर बातें कीं तो कभी नाच-गाने का अभ्यास किया। फिर पापा से बोला, ''वाहजी पापा, वाह! आज तो मेरी फिल्म बनकर रहेगी।''

सुनकर पापा जोर से हँसे। बोले, ''वाहजी टीनू, वाह! मगर ऐसी फिल्में खुद की ऐक्टिंग देखने के लिए नहीं, बल्कि अपराधी को पकड़ने के लिए तैयार की जाती हैं। समझे!''

फिर पापा ने किताब उठाकर कैमरा निकाला। उसकी फिल्म रिवाइंड की और उसे कंप्यूटर के बड़े स्क्रीन पर दिखाया तो टीनू हक्का-बक्का रह गया। उसके नाचने-गाने के साथ-साथ उसका चेहरा···चेहरे का एक-एक भाव उस फिल्म में आ गया था। यहाँ तक कि उसकी बातें, गाने और डायलॉग भी। साथ ही कमरे की पूरी तसवीर भी। पापा और उसके बीच होनेवाली बातचीत भी एकदम साफ सुनाई पड़ रही थी।

''तब तो पापा, दिन भर कोई कमरे में क्या-क्या करता रहा है या उसके कमरे में कौन आया, कौन गया, पूरा किस्सा यह किताब बता देती होगी।'' टीनू ने जानना चाहा।

''हाँ, क्यों नहीं?'' टीनू के पापा ने कहा, ''क्या अब भी कोई शक है?''

बेटे की जिज्ञासा और समझदारी से मि. द्वारिकानाथ शर्मा खुश थे, लेकिन उसे थोड़ा समझाना भी जरूरी था कि वह फिलहाल पढ़ाई-लिखाई में ही अपना ज्यादा ध्यान लगाए। इसलिए उन्होंने थोड़ा प्यार से डाँटते हुए कहा, ''बस टीनू, बस, अब तू यह चक्कर छोड़कर अपनी पढ़ाई-लिखाई में लग जा। ऐसी बातों के लिए तो पूरी उम्र पड़ी है!''

कहकर पापा ने वह मोटी सी किताब अपनी अलमारी के ऊपरवाले खाने में रख दी।

: 2 :

उस दिन वह किताब टीनू की आँखों में गड़ गई। और जब-जब वह अपनी गली के दूसरे छोर पर रहनेवाले शख्स मि. आर.आर. विंटरटन के बारे में सोचता, उसे इस किताब की जरूर याद आती।

जाने क्यों टीनू को लग रहा था, यह गोरा, लंबा और बेहद आकर्षक सा दिखनेवाला आर.आर. विंटरटन नाम का शख्स ठीक नहीं है।

टीनू को देखते ही उसके चेहरे पर जो एक चोरी का सा और जाने-अनजाने

कुछ छिपाने का भाव आ जाता था, टीनू से वह बच नहीं पाता था। टीनू को हर बार आर.आर. विंटरटन से मिलकर कुछ अजीब ही लगता। उसे लगता, जैसे यह कुछ छिपा रहा है। यानी यह कोई ठीक आदमी नहीं है। अंदर-अंदर कोई चाल चल रहा है! चाल के अंदर फिर कोई और चाल··· ! लगता है, इस आदमी के भीतर कोई बड़ा तहखाना सा है, जिसमें बहुत कुछ है, बहुत कुछ!

'आदमी के भीतर तहखाना··· ?' सोचकर टीनू को हँसी आ जाती, पर जाने क्यों विंटरटन को देखकर उसे सबसे पहले तहखाने का ही खयाल आता था।

फिर भी शायद यह आर.आर. विंटरटन को जानने की जिज्ञासा ही थी कि टीनू ने उसकी बगल में रहनेवाले अपने दोस्त के घर आने-जाने के बहाने विंटरटन के कमरे में झाँकना और कभी-कभी 'हाय-हैलो' करना नहीं छोड़ा। हाँ, अब वह चौकन्ना जरूर हो गया था। हर बार उस कमरे में जाते या आते समय ध्यान से पूरे कमरे पर एक सरसरी नजर जरूर डाल लेता।

विंटरटन के पूछने पर टीनू ने सहज भाव से ही बता दिया था कि उसके पिता सी.बी.आई. में हैं। हालाँकि विंटरटन यह बात पहले से ही जानता था और उसने सिर्फ टीनू के मुँह से सुनने भर के लिए ही यह सवाल किया था कि टीनू, तुम्हारे पापा क्या करते हैं··· ? टीनू ने सीधे-सादे ढंग से यह बताया तो विंटरटन को लगा कि यह लड़का तो एकदम सीधा है और इससे कुछ अंदर की बातें पता चल सकती हैं। तब से विंटरटन उससे बड़े प्यार से बोलता और कुछ-न-कुछ भीतरी बात जानने की कोशिश करता। शुरू में टीनू ने इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। पर अब तो वह खूब अच्छी तरह समझ गया था कि जरूर दाल में कुछ काला है। पर फिर भी उसने यह बात प्रकट करने की जरूरत नहीं समझी। हाँ, अंदर-अंदर कुछ और ज्यादा चौकन्ना जरूर हो गया।

विंटरटन कई बार चालाकी से ऐसा सवाल पूछता कि टीनू को पता ही नहीं चल पाता था कि असल में सवाल पूछने के पीछे उसका इरादा कुछ और जानना ही है···या कोई ऐसी बात निकलवाना है, जिसका संबंध उसके पापा या उनके दफ्तर से हो! शुरू में टीनू का ध्यान इस बात पर नहीं था। पर धीरे-धीरे वह इसे लेकर खूब सतर्क होता गया। और उसने सोच लिया है कि विंटरटन के इरादों को कामयाब नहीं होने देना।

एक बार विंटरटन ने उससे पूछा, ''टीनू, तुम्हारे पापा तो दफ्तर से आ गए होंगे कि नहीं?''

टीनू ने सहज ही जवाब दिया, ''नहीं, अभी तो नहीं आए।''

''क्या बहुत देर से घर आते हैं?'' विंटरटन ने अगला सवाल किया।

''हाँ, रात को तो नौ-साढ़े नौ तक बज जाते हैं। कभी-कभी तो और भी देर लगती है।'' टीनू ने बताया।

''और सुबह घर से जाते कितने बजे हैं?'' विंटरटन ने पूछा।

''घर से आठ-साढ़े आठ बजे निकलते हैं, मगर कभी-कभी बहुत जल्दी भी जाना पड़ता है।'' टीनू ने बताया।

''जल्दी क्यों··· ?'' विंटरटन ने मुसकराते हुए पूछा।

मगर यहाँ आते-आते टीनू बुरी तरह चौंक गया था। उसे लगा कि इस आदमी को तो इतनी बातें नहीं बतानी चाहिए थीं। पता नहीं, वह इसका कहाँ, किस षड्यंत्र के लिए उपयोग करे! ओह, मैंने इसे यह सब बताकर गलती की। टीनू जैसे मन-ही-मन पछता रहा था। उसने मानो अपने आपसे कहा, ''कहीं इससे मेरे पापा के जीवन के लिए कोई संकट न पैदा हो जाए? हे राम, यह मैंने क्या किया!''

अब तो टीनू को अपने आप पर गुस्सा आ रहा था कि आखिर क्यों वह इस आदमी के जाल में बार-बार फँस जाता है, जो जाहिर है कि कुछ गड़बड़ सा आदमी है! यह ऊपर से सीधा-सादा बनता जरूर है, मगर सीधा-सादा हरगिज नहीं है। अंदर से बड़ा पेंचदार, घुन्ना और चालाक है। खतरनाक भी हो सकता है।···यकीनन!

तब से टीनू विंटरटन के सवालों का जवाब देते समय खास सतर्क हो जाता। या तो उन्हें हँसी-हँसी में टाल ही जाता या फिर उलटे-सीधे और ऐसे भरमानेवाले जवाब देता था···कि विंटरटन को सही जवाब मिलने की बजाय, कहीं कुछ और भटकना ही पड़ जाता है और एक बार तो उसने यह कहकर कि उसके पापा कुछ फ्रॉड किस्म के चालाक विदेशियों की धर-पकड़ शुरू करनेवाले हैं, विंटरटन का ब्लडप्रेशर एकाएक बढ़ा दिया था।

''व···व···व्हाट··· ?'' कहते-कहते उसका चेहरा एकदम सर्द हो गया था।

''यस, मि. विंटरटन···बट व्हाई यू बौदर? यू आर नॉट दैट टाइप आप पर्सन, आई थिंक।'' टीनू ने सीधा उसकी आँखों में देखते हुए कहा।

''य···य···यस-यस-यस!'' कहते हुए भी विंटरटन की हकलाहट गई नहीं थी। और टीनू को मजे-मजे में खेल मिल गया था, जिससे जब चाहे वह विंटरटन को नचा सकता था। उसकी समझदारी से विंटरटन एकदम चकरा जाता और मूर्खों की तरह उसकी ओर देखने लगता। तब टीनू मन-ही-मन उसकी हालत पर हँसता

हुआ, दो-चार और अधिक चकरानेवाली गोलमोल बातें कहकर उसकी परेशानी और बढ़ा देता था।

कभी-कभी टीनू आवाज को धीमा करके कोई रहस्यात्मक बात बतानेवाले अंदाज में कहता, ''मि. विंटरटन, डू यू नो, व्हाट इज गोइंग टु हेपन?'' सुनते ही विंटरटन के पूरे शरीर में कान लग जाते। फिर टीनू गोपनीय सूचनाओं के नाम पर जानबूझकर कुछ ऐसी बेपरवाली बातें हवा में उड़ा देता था, ताकि विंटरटन यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ फालतू में दिन भर भटकता रहे। और सचमुच होता भी यही था। टीनू से सूचनाएँ हासिल करते ही विंटरटन थोड़ी देर बाद कमरे से निकलता और पूरे शहर का चक्कर लगाने लगता, ताकि उसे काम की कुछ चीजें मिल जाएँ, जिनका कुछ सुराग टीनू ने उसे दिया है।...मगर टीनू सुराग नहीं देता था, कुछ ऐसी गुत्थियाँ छोड़ देता था, जिनमें विंटरटन दिन भर फँसा रहता था। टीनू दूर से उसे परेशान होते देखता, मन-ही-मन हँसता और उसकी परेशानी का भरपूर मजा लेता। फिर आगे के लिए ऐसी ही नई-नई पहेलियाँ सोचना शुरू कर देता, जिनमें विंटररटन को उलझाया जा सके।

पर विंटरटन की पापा में इतनी दिलचस्पी अब भी टीनू को ठीक-ठीक समझ में नहीं आ रही थी। इन दिनों उसके पापा हथियारों के एक सौदे को लेकर कुछ बड़े विदेशी षड्यंत्रों और धोखाधड़ी के अपराध के मामले की छानबीन कर रहे थे। कहीं विंटरटन की असली दिलचस्पी इसी में तो नहीं है? टीनू कभी-कभी सोचता तो उसे लगता कि उसकी यह आशंका एकदम गलत तो नहीं है।

इस बात से टीनू कुछ और बेचैन हो जाता था और कहीं अधिक गौर से गली के आखिरी मोड़ पर के विंटरटन के कमरे और उसके पास आनेवाले मेहमानों पर अपनी सतर्क आँखें गड़ा देता।

: 3 :

टीनू ने गौर किया कि पिछले कुछ दिनों से विंटरटन के पास काफी विदेशी लोग आने लगे थे। उनमें से ज्यादातर जर्मनी के थे। कुछ इंग्लैंड और अमेरिका के भी। और एक आश्चर्यजनक बात उसने यह नोट की थी कि विंटरटन का कमरा ज्यादातर अब बंद ही रहता था। बाहर से दरवाजा बंद होता और अंदर से खुस-फुस की आवाजें आतीं। जब कभी टीनू अब विंटरटन के कमरे में जाता तो वह बड़ी अजीब सी आँखों से घूरता हुआ दरवाजा खोलता और बड़ी अरुचि से उसका परिचय अपने मेहमानों से कराता। उसने पहले ही शायद सबको टीनू और उसके पापा के बारे में बता दिया था। शायद यही वजह है कि टीनू के वहाँ पहुँचते ही वे

लोग अपनी बातचीत बंद कर देते और उनके चेहरे पर एक अबूझ सा परेशानी का भाव आ जाता।

तब टीनू समय काटने और कमरे की चीजों पर थोड़ा गहराई से गौर करने के लिए इधर-उधर की फिजूल बातें शुरू कर देता और बेपर की गप्पें हाँकने लगता। इन्हीं में कुछ गलत सूचनाएँ भी फिट कर देता···कि परसों मेरे पापा ने वहाँ छापा मारा! कल फलाँ जगह छापा मारा गया···और इतनी-इतनी चीजें पकड़ी गईं। पंद्रह करोड़ की हेरोइन भी। कुछ लोग वीजा खत्म होने के बाद भी छिपकर रह रहे थे। वे पकड़े गए। तीन विदेशी जासूसों को पकड़कर जेल के सीखचों के अंदर···! ऐसी बातें कहते समय वह बड़े गौर से विंटरटन और उसके साथियों की ओर देखता, जिनके चेहरों का रंग उड़ चुका होता!

टीनू समझ गया कि यह कोई गड़बड़ किस्म का गैंग है। और जब किसी अपराधी गैंग के पकड़ने की बात कही जाती है, ये लोग जरूरत से ज्यादा सतर्क हो जाते हैं···यानी ये भी उन्हीं में से एक हैं। इनकी असलियत किसी-न-किसी तरह खोलनी होगी। वैसे भी ये पापा के बारे में इतनी बातें जान गए हैं कि अगर जल्दी ही इन्हें जेल की हवा न खिलाई गई तो ये पापा को नुकसान भी पहुँचा सकते हैं।

यह सब सोचते हुए टीनू एक क्षण के लिए तो डरा, पर फिर एकाएक उसके मन में एक बड़ा शानदार आइडिया आया और वह खुलकर मुसकरा दिया।

उस समय टीनू विंटरटन के कमरे में ही था। विंटरटन ने टीनू को यों मजे से मुसकराते हुए देखा तो पूछा, ''क्यों टीनू, कोई जोरदार बात याद आ गई क्या?''

''हाँ-हाँ, जोरदार, बहुत जोरदार!'' टीनू ने विंटरटन के कानों में धीरे से फुसफुसाकर कहा, ''बस दो-तीन दिन इंतजार करो! जल्दी ही कोई बहुत धाँसू सूचना आप लोगों को मिल सकती है, जो शायद आपके बहुत काम आए। बदले में आप मेरे जर्मनी जाने और वहाँ पढ़ाई का इंतजाम कर दें!''

सुनकर विंटरटन उछल पड़ा। हँसकर बोला, ''पक्का, एकदम पक्का! हाथ मिलाओ टीनू यार?''

उसी समय घर आकर टीनू ने उस नीली किताब को देखा, जो उसके पापा ने उसे दिखाई थी। वह अब भी वहाँ पड़ी थी। बस, एक क्षण में ही उसने मन-ही-मन योजना बना ली।

अगले दिन वह विंटरटन के कमरे पर गया और जब वह थोड़ी देर के लिए बाथरूम गया, उसने उस किताब को सावधानी से विंटरटन की अलमारी के ऊपर वाले खाने में ऐसी जगह रख दिया, जहाँ से कैमरे में पूरे कमरे की तसवीर ठीक-

ठीक आ सके, पर यह किताब किसी को नजर भी न आए।

जब विंटरटन लौटा तो टीनू ने कुछ इधर-उधर की बातें कीं और फिर चलते-चलते कहा, ''दो दिन···बस दो दिनों में कोई बहुत महत्त्वपूर्ण खबर आपको मिलनेवाली है—वेट, वेट प्लीज!''

और टीनू थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद घर चला आया। घर आकर उसने महसूस किया कि उसका दिल बुरी तरह धुक-धुक कर रहा है! और सच ही पूरे दिन उसका दिल धुक-धुक करता रहा।

टीनू सोच रहा था, वह नीली किताब तो मेरी नहीं, पापा की है! और सच तो यह है कि वह पापा की भी नहीं, पापा के ऑफिस की किताब है, जो हो सकता है, उन्होंने किसी खास काम से घर पर लाकर रखी हो। अगर वह किताब वापस न मिल पाई तो क्या होगा? अगर पापा को कभी उस किताब की जरूरत पड़ी और उन्होंने पूछ लिया तो? पर टीनू को यकीन था कि उसने किताब को इस तरह रखा है कि विंटरटन का ध्यान उसपर नहीं जाएगा।

: 4 :

अगले दिन सुबह होते ही टीनू फिर से विंटरटन के कमरे की ओर दौड़ा। सौभाग्य से इस समय विंटरटन अकेला ही था। सुबह का नाश्ता करते हुए वह अखबार पढ़ रहा था। टीनू बोला, ''अंकल, कल आपने कॉफी बहुत अच्छी पिलाई थी। इतना अच्छा उसका टेस्ट था कि क्या कहूँ। मुझे तो रात भर उसके सपने आते रहे। आज भी वैसी ही कॉफी बनाकर पिलाइए ना! फिर मैं आपको एक बढ़िया···बढ़िया क्या, खासी शानदार खबर देनेवाला हूँ।''

विंटरटन खुशी से उछला, ''हुर्रे!'' और अखबार वहीं फेंककर जल्दी से रसोईघर की ओर दौड़ पड़ा। टीनू को बस इसी क्षण की प्रतीक्षा थी। उसने जल्दी से अपनी निगाहें अलमारी के ऊपरवाले हिस्से की ओर दौड़ाईं। किताब अब भी नजर आ रही थी। उसने झटपट उसे उठाया, अपने बैग में रख लिया और विंटरटन के आने से पहले अखबार उठाकर अखबार पढ़ने में लीन हो गया।

विंटरटन बड़े उत्साह से कॉफी बनाकर लाया। टीनू ने जल्दी से कॉफी पी और उसकी भरपूर तारीफ की। फिर विंटरटन को एक-दो नहीं, कई उलटी-सीधी चकरा देनेवाली बातें बताकर दौड़ा-दौड़ा घर आया। उत्तेजना के मारे उसके पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे। आते ही उसने झट डिजिटल कैमरे को कंप्यूटर से जोड़ा और अगले ही पल कंप्यूटर के परदे पर उस फिल्म को देखा जा सकता था, जो विंटरटन के कमरे पर कल घटित हुई एक हकीकत थी।

विंटरटन के कमरे पर दिन भर जो-जो लोग आए और जो-जो बातें हुईं, टीनू थोड़ी ही देर में सबसे वाकिफ हो गया। अब तो एकदम यह साफ हो गया कि विंटरटन और उसके साथियों के इरादे सही नहीं हैं। और उनमें कुछ तो बड़े ही खतरनाक और शातिर लोग हैं।

टीनू समझ गया कि उसके पापा हथियारों की खरीद के मामले में विदेशी अपराधियों के गैंग को पकड़ने में लगे हैं, इसीलिए टीनू और उसके पापा में विंटरटन की इतनी दिलचस्पी है। या तो वह किसी तरह दवाब डालकर मामले को रफा-दफा करना चाहता है या फिर कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहता है कि पापा को ही रास्ते के कंकड़ की तरह ठोकर मारकर हटा दिया जाए।

टीनू को अब यह भी समझ में आ गया था कि उसके पापा ने चारों ओर अपराधियों पर जो जाल बिछा दिया है, उसमें कई बड़े-बड़े अपराधी फँस चुके हैं और जो फँसे नहीं हैं, वे भी कानून के हाथों से ज्यादा दूर नहीं हैं। इनमें विंटरटन भी एक है। विंटरटन के कुछ और दुष्ट साथी भी हैं। इनमें एक जो मोटा और गंजा सा आदमी था, कैमरे की उस फिल्म में बार-बार चिल्लाकर कह रहा था, ''अगर मि. द्वारकानाथ शर्मा रास्ते पर नहीं आते तो हम उसे रास्ते से हटा देंगे। किक हिम···शूट हिम, शूट हिम एटवंस!''

और तब एक लंबी नाकवाला बूढ़ा विदेशी बीच का रास्ता लेते हुए धीरे से उसे समझा रहा था कि ''नो-नो, मि. वाटसन, हमें इसकी जरूरत नहीं है। ऐसा करके तो हम और उलटे फँस जाएँगे। द्वारकानाथ शर्मा सी.बी.आई. के बड़े अफसर हैं। उनको खत्म करने की बजाय हमें और किसी बड़े अफसर से मिलना चाहिए, ताकि मि. द्वारकानाथ शर्मा का इस पोस्ट से ट्रांसफर हो जाए। फिर हम अपनी मनमानी कर लेंगे। द्वारकानाथ शर्मा ईमानदार आदमी है, सख्त है, इनके रहते हमारी दाल नहीं गल सकती।···''

विंटरटन और उसके बहुत से साथियों की यही राय थी। लेकिन वह गुंडा सा दिखनेवाला गंजा आदमी बार-बार कह रहा था, ''आई शैल शूट हिम···आई शैल शूट मि. द्वारकानाथ शर्मा, आई स्वेयर!''

सुनकर टीनू को सिहरन हुई। उसने सोचा, ''ये लोग तो कुछ भी कर सकते हैं, कुछ भी।''

''तो क्या ये पापा को सचमुच मार सकते हैं···? क्या सचमुच!'' टीनू ने मानो अपने आप से पूछा और यह सवाल पूछते-पूछते जैसे उसे थरथराहट सी हुई।

''क्या मुझे पापा को यह सब बता देना चाहिए?'' टीनू ने अपने आपसे पूछा,

''कहीं सबकुछ बता देने पर पापा डाँटेंगे तो नहीं?''

तब टीनू को आखिर एक रास्ता सूझा। उसे याद आया, पुलिसवाले अंकल मि. श्रीवास्तव कभी-कभी घर आया करते हैं। क्या उन्हीं को सबकुछ न बता दिया जाए? क्या सारी बात जानने के बाद वे उसकी मदद नहीं करेंगे! क्या अपराधियों को पकड़ेंगे नहीं?

टीनू को यही सही रास्ता लगा। उसने उसी समय पापा की टेलीफोन डायरेक्टरी से देखकर मि. श्रीवास्तव के दफ्तर का फोन लगाया। कहा, ''अंकल, मैं अभी आपसे मिलने आना चाहता हूँ।''

और उसी समय टीनू अपनी साइकिल लेकर मि. श्रीवास्तव के दफ्तर की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ जाकर उसने सारी बातें और सबूत मि. श्रीवास्तव के आगे रख दिए। कहा, ''अंकल, वे लोग निश्चत रूप से किसी दुश्मन देश के जासूस हैं और हमारे देश में किसी बुरे इरादे से आए हैं। वे पापा को भी नुकसान पहुँचाना चाहते हैं। उन्हें आप जल्दी-से-जल्दी गिरफ्तार कर लीजिए, नहीं तो वे फिर हाथ नहीं आएँगे। वे कोई बड़ा षड्यंत्र कर रहे हैं। आप चाहें तो मेरे घर आकर मेरे कंप्यूटर स्क्रीन पर देख लें। आप सबकुछ जान जाएँगे।''

और सारा खेल सिर्फ घंटे-दो घंटे में एक उत्तेजना भरी कहानी में ढलकर खत्म हो गया। टीनू की समझदारी से सचमुच विंटरटन ही नहीं, उससे भी खतरनाक अपराधी पुलिस के शिकंजे में आ गए। उनमें गंजा वाटसन सबसे खूँखार अपराधी था, जिसकी पुलिस को कई मामलों में तलाश थी।...यों एक बड़ा षड्यंत्र कामयाब होते-होते रह गया। बाद में सब पुलिस अधिकारियों ने मिलकर कंप्यूटर स्क्रीन पर वह पूरी फिल्म देखी, जिसे टीनू एक बड़ा खतरा उठाकर अपने कैमरे की फिल्म में दर्ज कर लाया था। चारों ओर फोन-पर-फोन खड़क रहे थे, तो फिर टीनू के पापा को यह सब कैसे पता न चलता! पुलिस कप्तान मि. श्रीवास्तव ने ही उन्हें यह सुखद सूचना दी थी।

टीनू के पापा को पूरी कहानी पता चली तो उनके उत्साह का भी ठिकाना न था। उनके चेहरे पर एक रंग आ रहा था, एक जा रहा था। उनका इतना छोटा सा बेटा, छुटका सा टीनू भी इतना बड़ा कमाल कर सका! टीनू के पापा को मानो विश्वास नहीं हो रहा था।

बाद में टीनू के पापा ने टीनू को पास बुलाया और सबकुछ पूछा तो टीनू ने धीरे से सिर झुकाए हुए कहा, ''पापा, माफ करना, मैं चाहता तो आपको पहले भी बता सकता था, क्योंकि इस विंटरटन पर शक मुझे पहले से ही था। पर मैंने

सोचा, एक बार मैं खुद ही आजमाऊँ! बड़े-बड़े केस आप हेंडल करते हैं, पर एक छोटा सा केस तो आपका बेटा भी हेंडल कर सकता है न पापा। बस, सोचा यही था कि कुछ बात बन जाए, तभी आपको बताऊँ···और सचमुच, वोक्काटा!''

मि. श्रीवास्तव ने मुसकराते हुए टीनू के पापा से कहा, ''मि. द्वारकानाथ शर्माजी, आपके बाद आपका बेटा! लगता है, आपका पूरा परिवार देश की ही सेवा के लिए बना है!'' सुनकर टीनू के पापा ने धीरे से टीनू का माथा चूम लिया।

टीनू जो अब तक डर रहा था, अब उसका संकोच थोड़ा कम हुआ। उसने झिझकते हुए पापा से कहा, ''पापा, आप मुझसे नाराज तो नहीं हैं?''

''क्यों, क्यों···किसलिए! तूने तो इतना बड़ा काम किया है पगले।'' मि. द्वारकानाथ शर्मा ने लाड़ जताते हुए कहा।

''असल में पापा···पापा, मैं आपकी नीलीवाली किताब ले गया था! वही किताब जो आपने दिखाई थी, जिसमें वीडियो कैमरा फिट था। मुझे उसकी जरूरत पड़ी···और फिर इतना समय भी नहीं मिल पाया कि आपसे पूछ लूँ।''

सुनकर टीनू के पापा जैसे सब समझ गए। बोले, ''नहीं टीनू बेटा, मैं तुमसे बिलकुल नाराज नहीं हूँ। बल्कि मुझे आज पक्का यकीन हो गया कि तुम कुछ भी गलत नहीं कर सकते!'' इसपर टीनू को लगा कि उसकी सारी चिंताएँ खत्म हो गई हैं।

''हाँ, पर टीनू, एक बात जरूर कहनी है कि ये काम तुम करना जरूर, लेकिन पढ़ाई को छोड़कर नहीं, पढ़ाई पहले, बाद में कुछ और! क्यों, वादा करते हो?'' टीनू के पापा कह रहे थे।

''हाँ, पापा···वादा, पक्का वादा!'' टीनू ने मुसकराकर कहा।

: 5 :

अगले रोज 'नेशनल टाइम्स' के पहले पन्ने पर टीनू के साहस और चतुराई की यह पूरी कहानी छपी थी, जिसे देश के कोने-कोने में लाखों लोगों ने एक साथ पढ़ा और हैरानी से यह देखा कि एक छोटा सा बच्चा भी अगर ठान ले तो अपनी समझदारी से क्या कुछ नहीं कर सकता! साथ ही टीनू का फोटो और उसका इंटरव्यू भी छपा था, जिसमें टीनू ने कहा था, ''मैं देश की सेवा के लिए अपना पूरा जीवन लगा देना चाहता हूँ।''

टीनू ने सचमुच पक्का इरादा कर लिया है कि वह बड़ा होकर पापा की तरह ही देश के बड़े-बड़े काम करेगा। आखिर देश को ऐसे हिम्मतवाले लोगों की ही तो जरूरत है!

□

शब्द-भेदी तीर

चलिए, कहानी की शुरुआत में हम जरा प्रशांतपुर और उसके लोगों से मिल लें।''प्रशांतपुर! यानी एक ऐसा देश जिसके लोग युद्ध से घृणा करते हैं और अमन-चैन से रहना पसंद करते हैं। इसलिए प्रशांतपुर के लोगों को भगवान् बुद्ध और महावीर के अहिंसा के उपदेश सबसे अधिक भाते हैं। न वे किसी पर हमला करना चाहते हैं और न चाहते हैं कि कोई खामखाह उनके अमन-चैन में खलल पैदा करे।

प्रशांतपुर सभ्य देश है, जहाँ का हर व्यक्ति पढ़ने-लिखने और अपना काम करने में व्यस्त रहता है। प्रशांतपुर का लक्ष्य ही है—पूरे संसार को प्यार और शांति का उपदेश देना। यों ऐसा भी नहीं कि वे लोग किसी पुरातनपंथी दुनिया के लोग हों और केवल धर्मग्रंथ ही पढ़ते हों। वहाँ आधुनिक सभ्यता का उजाला पूरी तरह फैल चुका है और विज्ञान का बहुत विकास हुआ है। सारी दुनिया का आधुनिकतम तकनीकी और इलेक्ट्रॉनिक ज्ञान भी प्रशांतपुर वालों के पास है। खासकर आणविक-शक्ति हासिल करने के लिए तो वहाँ के वैज्ञानिकों को अथक कोशिश करनी पड़ी। पर उस आणविक-शक्ति का प्रयोग प्रशांतपुर में विकास के लिए होता है, विनाश के हथियार यानी परमाणु बम बनाने के लिए नहीं।

हालाँकि कुछ साल पहले इस बात को लेकर प्रशांतपुर में एक तीखी बहस भी हुई थी, जिसने पूरे देश में एक तरह की उथल-पुथल ही पैदा कर दी थी। प्रशांतपुर आम तौर से आसानी से अशांत नहीं होता, पर वे ऐसे दिन थे, जब प्रशांतपुर की शांति छिन्न-भिन्न हो गई थी। प्रशांतपुर में दो दल बन गए थे और हर आदमी चाहे वह छोटा हो या बड़ा, एक तीखी बहस की लपेट में था।

लोगों के एक वर्ग का कहना था, ''हमें परमाणु-बम बनाना चाहिए। इसलिए कि हम चाहे शांतिमार्गी हैं, पर हम सारी दुनिया को तो शांति-पथ पर चलने के

लिए नहीं मना सकते। अगर कोई दूसरा बुरे इरादों का आदमी हम पर हमला करे, तो हम क्या करेंगे? आज के जमाने में ईंट का जवाब पत्थर से देनेवाला ही अमन-चैन से अपने घर में बैठ सकता है। वरना तो लोग यहाँ किसी को जीने नहीं देना चाहते।''

ये गरम दल के लोग थे।

पर नरम दल के लोग भी चुप नहीं बैठे थे। उनका कहना था कि ''अगर कोई अपनी सभ्यता छोड़ दे तो क्या जरूरी है कि हम भी अपनी हजारों वर्ष पुरानी महान् सभ्यता और उसके उपदेशों से मुँह मोड़ लें? हम अपने सिद्धांतों से समझौता क्यों करें! अगर हम शांति की नीति को मानते हैं तो हमें शांति के पथ पर चलकर ही अपने देश को आगे ले जाना होगा। नहीं तो हमें मान लेना चाहिए कि हमारे सिद्धांतों की हार हुई है। यानी आज के समय में शांति और अहिंसा का कोई मतलब नहीं···! और फिर ऐसा कहने के बाद फिर हम चाहे परमाणु बम बनाएँ, या फिर तोप, आग्नेयास्त्र···कुछ फर्क नहीं पड़ता! पर कम-से-कम हमारी कथनी और करनी में कोई फर्क तो न हो।''

''ये बातें तो सारी ठीक हैं!'' इसपर कोई दूसरा कहता, ''पर सवाल यह है कि अगर हमारे ऊपर कोई परमाणु बम से हमला करे, तो हम कर क्या सकते हैं? ऐसी हालत में तो हम अपना बचाव तक नहीं कर सकते? ऐसी शांति से क्या फायदा, जिसमें बेमौत मरना लिखा हो? या वह शांति कैसी जिसमें रिरियाहट और हीनता भरी हो। हम शांति से रहना चाहते हैं, लेकिन दीन-हीन बनकर तो नहीं! फिर हम क्यों न परमाणु बम बनाएँ?''

''नहीं, यह सब कहने की बात है!'' नरमपंथी दल के लोग कहते, ''अगर आप चुपचाप शांति से अपनी राह पर चले जा रहे हैं तो क्या दूसरे को किसी पागल कुत्ते ने काटा है, जो अपनी राह चलते किसी बंदे पर परमाणु-बम का हमला कर देंगे?''

''पर···हमारी सीमाओं की रक्षा-पंक्ति मजबूत हो, भला इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? आखिर हम अपने बचाव के लिए ही तो परमाणु-बम बना रहे हैं, किसी पर हमला करने के लिए तो नहीं!'' परमाणु बम-वादी तबका बड़े जोर-शोर से अपने पक्ष में तर्क उपस्थित करता।

अहिंसावादी लोगों के पास इसका कोई जवाब नहीं था।

परमाणु-बम के पक्षधर लोगों ने एक तर्क यह भी दिया कि भारत शांति से रहनेवाला देश है, फिर भी यहाँ आतंकवादी हमले जारी क्यों है? क्यों कारगिल

युद्ध की नौबत आती है? क्यों इराक जैसे छोटे देश पर अमेरिकी महाशक्ति पागलों की तरह टूट पड़ती है और उसे बुरी तरह रौंद डालती है। ऐसे तमाम संग्रहालय, जिसमें इराक की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के बेशकीमती दस्तावेज थे और जो विश्व-धरोहर थे, उन्हें किस वहशियाना तरीके से बरबाद कर दिया गया! पर किसी ने अमेरिका का क्या बिगाड़ लिया? लिहाजा ऐसे हालात में अपनी सुरक्षा की चिंता सबसे पहले होनी ही चाहिए। और आत्म-सुरक्षा के लिए परमाणु-बम बनाने में कोई बुराई नहीं है।

यों प्रशांतपुर में अहिंसावादी पहली बार इस कदर मुसीबत में पड़े थे। वे परमाणु-बम बनाने के समर्थकों के तर्कों के जवाब में बस, गौतम बुद्ध और भगवान् महावीर के उपदेश दोहरा रहे थे या उनके जीवन-प्रसंगों की चर्चा कर रहे थे। कोई अंगुलिमाल के हृदय-परिवर्तन की बात करता तो कोई अजातशत्रु की चर्चा करता, जिसका जीवन बाद में चलकर एकाएक बदल गया।

अजब कशमकश का यह क्षण था। जिसमें निर्णय मुश्किल था और सब अपनी बात किए जा रहे थे। बस तर्कों पर तर्क देते जा रहे थे।···मगर समाधान अभी दूर, बहुत दूर था।

: 2 :

तब आत्मविश्वास से भरा एक किशोर, सनत जिसका नाम था, आगे आया और देखते-ही-देखते सारा दृश्य बदल गया।

सनत एक अनोखा तीरंदाज था। उसकी खासियत यह थी कि उसका लक्ष्य-संधान अचूक था। उसके तीर चलाने के कौशल की बड़े-बड़े सूरमा भी तारीफ करते थे।

सनत ने जब महासभा में बड़े-बड़े दिग्गजों को अपने-अपने तर्कों के सहारे आपस में उलझते-झगड़े देखा तो वह आगे आया और सिर झुकाकर बोला, ''क्षमा करें···! अगर आप लोग चाहें तो प्रशांतपुर की सुरक्षा का जिम्मा मुझे दे दें। मैं प्राण-पण से देश की रक्षा करूँगा। अगर मुझसे कोताही हो तो आप परमाणु-बम बनाने पर विचार करें, इससे पहले नहीं!'' इसपर महासभा में उपस्थित सभी विद्वान् और दिग्गज चौंके। सबकी आँखों में एक साथ यह सवाल कौंधा, ''यह कौन है···यह कैसे हो सकता है? यानी जो यह कह रहा है, क्या वह यकीन लायक भी है!''

''अरे बेटे, तुम तो छोटे से हो। इतने बड़े देश की सुरक्षा का जिम्मा कोई मामूली बात नहीं है। यह लाखों लोगों के जीवन-मरण का प्रश्न है। तो तुम पर

भला हम प्रशांतपुर की सुरक्षा का भार कैसे सौंप दें! और भला तुम अकेले यह भार उठाओगे कैसे?''

''नहीं-नहीं, मैं यह नहीं कहता कि आप अभी से पूरी तरह प्रशांतपुर की सुरक्षा का जिम्मा मुझे सौंप दें।'' सनत ने कहा, ''अभी प्रशांतपुर की सुरक्षा यहाँ की सेना उसी तरह करे, जैसे अब तक करती आई है। अगर आप चाहें तो मुझे यह अवसर दे दें कि आगे आनेवाले किसी भी तरह के संकट का सामना करने के लिए मैं एक अकाट्य सुरक्षा-घेरा प्रशांतपुर के चारों ओर बना दूँ। और जब मैं अकाट्य सुरक्षा-घेरा कह रहा हूँ, तो यह सचमुच अकाट्य ही होगा। कोई उसे काट नहीं पाएगा, लाँघ नहीं पाएगा। और उसके बाद परमाणु बम हो या कोई और हमला, यहाँ तक कि कोई बड़े-से-बड़ा भीषण प्रक्षेपास्त्र प्रशांतपुर के भीतर आकर उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा।...सारी चीजें प्रशांतपुर के उस सुरक्षा घेरे से बाहर ही रहेगी, अंदर नहीं आ पाएँगी।''

इसपर प्रशांतपुर के बूढ़े-जवान सभी लोगों ने अचकचाकर उस भोले-भाले से दिखनेवाले बारह वर्ष के किशोर की ओर देखा। क्या यह सीधा-सादा सा लगनेवाला किशोर बालक टैंकों, मिसाइलों और परमाणु बम के हमलों को निष्फल कर पाएगा? है इतना माद्दा इसमें! है इतना साहस! है विज्ञान की कोई ऐसी शक्ति?

क्या सचमुच यह संभव है, सचमुच!

''पर यह होगा कैसे? तुम अभी छोटे से हो सनत। फिर तुम्हारे पास अपने ऐसे कोई साधन भी नहीं। अकेले दम पर तुम यह कैसे करोगे? बताओ, तुम्हें अपना यह प्रयोग सफल करने के लिए क्या-क्या साधन और कितने लोग चाहिए?'' एक बूढ़े से दिखनेवाले महासभा सदस्य ने प्यार से सनत के सिर पर हाथ रखते हुए कहा।

इसपर सनत ने अपना तीर-कमान निकाला। शांत लहजे में बोला, ''आप लोगों को भरोसा दिलाने के लिए मुझे बड़ी-बड़ी बातें कहने की जरूरत नहीं है। जो मुझे करना है, करके दिखा देता हूँ। अभी प्रशांतपुर के बाहरवाले वनक्षेत्र के किसी खुले मैदान में चले। वहाँ आप मेरा निशाना देखें। आप देखेंगे कि किसी भी दिशा में जहाँ आवाज होगी, वहाँ मेरा तीर ध्वनि की बारीक-से-बारीक तरंगों का पीछा करते हुए खुद-ब-खुद पहुँच जाएगा। और मैं उस दिशा में देखूँगा भी नहीं।...बस, मेरा तीर ध्वनि का पीछा करते हुए वहाँ पहुँचेगा और लक्ष्य को बेध डालेगा। चाहे तो तसल्ली के लिए आप मेरी आँखों पर काली पट्टी बाँध दें और

फिर मेरी अचूक तीरंदाजी और निशाने की परीक्षा करे। बस, कहीं कोई आवाज होनी चाहिए और मेरा तीर अपने निशाने की ओर बढ़ चलेगा।

और सचमुच हुआ! यह करिश्मा हुआ, जिसे दो-चार, दस-बीस लोगों ने नहीं, प्रशांतपुर के हजारों चकित लोगों ने खुद अपनी आँखों से देखा। हुआ यह कि वन-क्षेत्र के एक खुले मैदान में सनत अकेला खड़ा था। वहाँ से कोई पाँच-सात सौ गज की दूरी पर किसी ने लोहे के घड़े पर दूर से पत्थर उछाला। और यह आवाज सनत के कानों में पहुँची ही थी कि एकाएक उसका तीर छूटा और सनसनाते हुए आगे बढ़ा, लोहे के घड़े के ठीक बीचोबीच लगा। और सिर्फ लगा ही नहीं, भीतर गड़ गया। उसने सचमुच अपने लक्ष्य को बेध दिया था।

प्रशांतपुर के नागरिक चौंके यह क्या, यह कैसी अनहोनी है! क्या लोहे को किसी तीर से ऐसे भी बेधा जा सकता है?

सनत हँसा। बोला, ''यह मामूली तीर नहीं है, इलेक्ट्रॉनिक तीर है। इनके अगले हिस्से पर तीव्र रेडिएशंस हैं। ये लोहा तो क्या, दुनिया की किसी भी सख्त-से-सख्त और अभेद्य समझी जानेवाली धातु को तोड़ सकते हैं। चट्टानों को चकनाचूर कर सकते हैं'''और यहाँ तक कि अगर दुश्मन पहाड़ के पीछे छिपा हो, तो पहाड़ को चीरकर भी उसके सीने में धँस सकते हैं।

यह बात सुनकर लोग, जो अभी तक विनोद-भाव से हँस रहे थे, एकाएक सनाका खा गए।

सफेद बालोंवाले एक ममतालु बुजुर्ग ने पूछा, ''पर बेटा सनत, तुमने यह अनोखी कला या अनोखा विज्ञान सीखा कहाँ से? तुम्हारी तो यह पढ़ने-लिखने की उम्र है।''

इसपर सनत ने गंभीर मुद्रा में कहा, ''यह उधेड़-बुन मेरे भीतर कोई साल-दो-साल से चल रही थी कि प्रशांतपुर की सुरक्षा कैसे की जाए? जब दुनिया के सब बड़े-से-बड़े देशों के पास आणविक हथियार मौजूद हैं और हमने अपने अहिंसा-सिद्धांत के कारण क्षमता होते हुए भी जानबूझकर अभी तक नहीं बनाया, तो फिर हम अपनी सुरक्षा भला कैसे करेंगे? कोई दो साल से पूरा प्रशांतपुर आंदोलित था और उसकी गूँजें-अनगूँजें हम बच्चों के दिलों में भी उतर रही थीं। सब मिलकर सोचते थे, क्या करें, क्या नहीं! तब प्रशांतपुर के सारे बच्चों ने मिलकर मुझे यह जिम्मा सौंपा कि मैं कुछ ऐसा करूं, जिससे प्रशांतपुर के लोगों का बाल बाँका न हो। इसमें मेरे दोस्तों, बल्कि प्रशांतपुर के सब बच्चों ने बड़ी मदद की। जो-जो चीजें मुझे चाहिए थीं, सब दौड़-दौड़कर मेरी छोटी सी प्रयोगशाला

में ला-लाकर जमा करते रहे। जो-जो किताबें मुझे इस क्षेत्र में अध्ययन के लिए चाहिए थीं, उन्हें बच्चों ने ही अपने घरों और पुस्तकालयों से ला-लाकर मेरे पास पहुँचाया। इसलिए इस अनोखे इलेक्ट्रॉनिक तीर का आविष्कार सिर्फ मेरी ही खोज नहीं, इसमें प्रशांतपुर के सभी बच्चों का पूरा-पूरा योगदान और प्रोत्साहन है।...

''मैं जानता था, आखिर एक दिन इसकी जरूरत पड़ेगी। आप लोग पिछले दो वर्षों से इस महासभा में यह बहस चलाए हुए थे कि हमें आणविक हथियार बनाने चाहिए या नहीं? देश में परमाणु-बम बनना चाहिए या नहीं?...मैं यह सब पढ़ता रहा। भीतर-भीतर गुनता रहा और मैंने अपनी तरह का एक ऐसा परमाणु-हथियार बना लिया, जो एकदम अहिंसक है और बिना किसी का नुकसान किए अपना काम करता है। आप कह सकते हैं कि मैंने परमाणु-बम बनाने की बजाय परमाणु की शक्ति को एक निराले रूप में, अपने अनोखे और अचूक तीरों में ढाल लिया है।...मेरे ये तीर परमाणु-बम से कम प्रभावी नहीं हैं। पर ये परमाणु बम की तरह तबाही नहीं मचाते। बेकसूरों को मौत के घाट नहीं उतारते। सिर्फ उसी शत्रु का संहार करते हैं, जो नुकसान पहुँचाने के इरादे से पास आए।...और अब तो मैं समझता हूँ, जब यह अनोखी शक्ति प्रशांतपुर को मिल गई है तो फिर परमाणु-बम बनाने की हमें सचमुच जरूरत नहीं है।''

सनत की बातों का इतना गहरा असर था कि कुछ देर तक दूर-दूर तक शांति और सन्नाटा सा बिखर गया।

: 3 :

फिर बड़ी-बड़ी मूँछोंवाले एक नौजवान ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, ''हमें तुम्हारी बातों पर पूरा-पूरा भरोसा है...पर तुम तो अकेले हो! तुम क्या-क्या करोगे, कहाँ-कहाँ लड़ोगे? क्या हम तुम्हारे साथ-साथ प्रशांतपुर के बच्चों की सभी सेना भी भेज दें प्रशांतपुर की रक्षा के लिए? यह तो हम सभी बड़ों का अपमान होगा। होगा कि नहीं?''

किसी और ने कहा, ''भला आज के आणविक जमाने में तुम कहाँ-कहाँ अपने तीर-कमानों से लड़ोगे? तीर-कमान अब सचमुच एक गुजरी हुई दुनिया की चीज हो गई है सनत। वे तो अब सिर्फ पुराणों की कथाओं में या फिर आदिवासियों के हाथों में ही अच्छे लगते हैं।''

इसपर सनत मुसकराया। बोला, ''आप लोग सम्मानित लोग हैं और मैं आपके सामने छोटा बच्चा ही हूँ। फिर भी यह शिकायत तो मैं कर ही सकता हूँ, आपने मेरी बातों पर पूरा ध्यान नहीं दिया। मैंने यह नहीं कहा था कि प्रशांतपुर की सुरक्षा

के लिए अकेला मैं लड़ूँगा। मैंने यह कहा था कि पूरे प्रशांतपुर के चारों ओर मैं एक ऐसा अकाट्य सुरक्षा-घेरा बना दूँगा कि दुश्मन का कोई भी वार कामयाब नहीं होगा। उसका कोई भी अस्त्र उसे तोड़ नहीं पाएगा। दुश्मन कितना ही महाबली क्यों न हो, वह हमारी सुख-शांति को भंग नहीं कर पाएगा।···मैं दरअसल, अब भी उसी सुरक्षा-घेरे के बारे में सोच रहा हूँ कि उसे कैसे सही-सही रूप दिया जाए। उसमें किसी को तीर चलाने की जरूरत न होगी, पर अगर किसी ने हम पर हमला किया तो हमारे सधाए हुए अनोखे इलेक्ट्रॉनिक तीर, जो ऑटोमेटिक प्रणाली से चलते हैं, उसे पल भर में तबाह कर डालेंगे। और यों प्रशांतपुर पहले की तरह प्रशांत बना रहेगा···अशांत न होगा!''

इस बार सनत की बातों ने सचमुच प्रशांतपुर के लोगों पर गहरा असर डाला, पर अभी भी कुछ थे, जिनके मन में गहरी शंका थी। उन्होंने फिर से अपना सवाल सनत के आगे रखा। विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र पढ़ानेवाले आचार्य शुभदर्शन ने पूछा, ''सनत, तुमने अपने तीरों की बहुत लंबी-चौड़ी व्याख्या की, पर तुम्हारे तीरों में ऐसा नयापन क्या है? ऐसे शब्द-भेदी तीर तो महाराज दशरथ के जमाने में भी होते थे और खुद महाराज दशरथ के पास थे। और आगे बढ़ो और इतिहास में आओ, तो पृथ्वीराज चौहान के पास भी ऐसे ही शब्दभेदी तीर थे, नहीं?''

''हाँ, आप ठीक कह रहे हैं।'' सनत ने कहा, ''मैं आपकी बात काट नहीं रहा हूँ, पर इतना तो कह ही सकता हूँ कि उन शब्दभेदी तीरों से मेरे तीरों में एक फर्क तो है। और वह यह कि दुश्मन कितनी ही दूरी पर क्यों न हो, तब भी ये इलेक्ट्रॉनिक तीर उसे छोड़ेंगे नहीं। हर हाल में उसका संहार करके ही रहेंगे। और तो और, ये हजार मील दूर तक बड़े मजे से दुश्मन का सफाया कर सकते हैं। हालाँकि किसी बेकसूर की जान ये हरगिज नहीं लेंगे। फिर इन तीरों की एक खासियत यह है—जैसा कि मैंने पहले बताया कि ये किसी भी सख्त-से-सख्त धातु, यहाँ तक कि पहाड़ों का सीना भी चीर सकते हैं।···और जब हमारा प्रशांतपुर का सुरक्षा-घेरा पूर्ण हो जाएगा, तब तो एक नायाब चीज यह होगी कि इन तीरों को कोई नहीं चलाएगा। सुरक्षा-घेरे की बाहरी दीवारों से ये खुद-ब-खुद चलेंगे। सिर्फ कंप्यूटर से हम उन्हें गाइड करेंगे कि उन्हें किस हालत में कब चलना है, कब नहीं। और फिर सबकुछ अपने आप होगा। बस आप समझ लीजिए कि शत्रु अगर सात पहाड़ों के पीछे भी छिपा होगा, तो भी ब्रह्मास्त्र की तरह घातक इन इलेक्ट्रॉनिक तीरों से बच नहीं पाएगा। अगर एक बार इन्हें शत्रु की सही पहचान बता दी जाए, तो ये जरा भी देर न करते हुए एकदम सीधे उसकी छाती में लगते हैं और उसे मौत

की शांत नींद सुला देते हैं।

''फिर एक फर्क यह भी है कि इस इलेक्ट्रॉनिक घेरे के पास सिर्फ अपने अक्षय किस्म के इलेक्ट्रॉनिक तीर ही नहीं, एक विलक्षण इलेक्ट्रॉनिक दूरबीन भी होगी, जिसे दुनिया के किसी भी मिसाइल या टैंक से नष्ट नहीं किया जा सकेगा। वह बता देगी कि शत्रु कब, किन गतिविधियों में लीन है···और कहाँ छिपकर कैसे-कैसे षड्यंत्र रच रहा है। यह सब आपको किसी कंप्यूटर के परदे पर इस तरह देखने को मिल जाएगा, जैसे आप कोई फिल्म देखते हैं और यों सबकुछ साफ हो जाएगा, दिन के सूरज की तरह!''

अब भला पूछने को क्या रह गया था!

प्रशांतपुर के लोगों ने अपनी विशाल महासभा के एकमत से हुए निर्णय के बाद सनत को यह पूरा अधिकार दे दिया कि वह इस दिशा में अपनी खोजें जारी रखे और जल्दी-से-जल्दी प्रशांतपुर के चारों ओर सुरक्षा-घेरा बना दे। इसके लिए सनत को जरूरी धन-साधन मुहैया करवाने के अलावा एक खूब बड़ी सी अच्छी प्रयोगशाला भी बनवा देने के लिए कहा गया।

: 4 :

तो यानी कि परमाणु बम बनाने का इरादा खत्म···! यह अहिंसावादियों की बहुत बड़ी विजय थी।

अभी तक सनत के साथी सिर्फ उसकी उम्र के छोटे-छोटे बच्चे ही थे। वे अब भी पूरी तरह सनत के साथ थे और उसकी अनोखी बाल सेना की तरह उसके आदेश का पालन करने के लिए बेसब्र रहते थे। पर इसके साथ बड़े-से-बड़े वैज्ञानिकों ने जरूरत पड़ने पर सनत को अपनी सेवाएँ देना और उसकी मदद करना शुरू कर दिया था।

कोई सात साल की अनोखी साधना के बाद सनत आखिर सफल हुआ था और प्रशांतपुर के चारों ओर ठीक वैसा ही सुरक्षा-घेरा बन गया था, जैसी कि सनत की कल्पना थी। यह सचमुच एक अभेद्य दीवार थी, जो जरूरत पड़ने पर दुश्मन को मार भी लगाती थी और उसकी छिपी हुई गतिविधियों और षड्यंत्रों की सूचना भी लगातार प्रशांतपुर के सूचना-केंद्र को देती रहती थी। उसके परदे पर पूरी हलचल दिखाई देती थी।

पर फिर भी अभी शंकाएँ तो थीं ही। आखिर कैसे मान लिया जाए कि एक किशोर वैज्ञानिक द्वारा बनाई गई यह सुरक्षा-दीवार सचमुच वैसी ही अभेद्य और अकाट्य है, जैसा कि दावा किया गया? तो फिर इस दावे की परख कैसे हो?

आखिर एक दिन यही हुआ। रिहर्सल! युद्ध का रिहर्सल···प्रशांतपुर पर भीषण हमला! यह हमला नकली था और हमला करनेवाले भी प्रशांतपुर के सैनिक थे, जिन्होंने कुछ खास तरह के परमाणुरोधी सुरक्षा-वस्त्र पहन रखे थे। उन्होंने टैंकों और मिसाइलों के जरिए प्रशांतपुर पर भीषण हमला किया। साथ ही उनकी वायु सेना भी अपनी तीखी मार कर रही थी।···यह किसी को नहीं बताया गया था कि हमलावर प्रशांतपुर के ही लोग हैं। सबकी पहचानें गुप्त थीं और सिर्फ इतना ही कहा गया था कि एक अज्ञात शत्रु ने प्रशांतपुर को नष्ट करने के लिए चारों ओर से उसपर हमला बोल दिया है। सबको होशियार और सतर्क रहना है। लेकिन पहले अपनी अभेद्य सुरक्षा-दीवार को अपना काम करते देखना है। अगर वह ठीक से दुश्मन को माकूल जवाब नहीं दे पाई, तो फिर प्रशांतपुर की सेना आगे बढ़ेगी।···

पर नहीं, खत्म—सबकुछ खत्म! कोई आधे घंटे के भीतर हमला करनेवाली शत्रु-सेना नेस्तनाबूत हो चुकी थी। बाद में यह राज खुला कि यह शत्रु-सेना कोई और नहीं, प्रशांतपुर के सैनिकों की ही एक गुप्त टोली थी, जिसके पास आधुनिकतम टैंक, रॉकेट, मिसाइलों जैसे हथियार थे। पर प्रशांतपुर की सुरक्षा-दीवार ने सभी का असर खत्म कर दिया।···शत्रु-सेना के सारे साधन खत्म हो गए और जो सैनिक बचे, वे भी इसलिए बच पाए, क्योंकि उनके पास परमाणुरोधी वस्त्र थे। वरना तो प्रशांतपुर की अनोखी सुरक्षा-दीवार ने अपना काम करते वक्त सभी कुछ तबाह कर डाला था।

प्रशांतपुर के लोगों ने सनत का यह अनोखा जादू देखा, तो खूब जोर से तालियाँ बजाकर उसका स्वागत किया। और फिर हमले तथा सुरक्षा-दीवार की कारगर रणनीति की पूरी वीडयो फिल्म प्रशांतपुर के लोगों को दिखाई गई, ताकि वे देख लें कि सनत ने एक छोटे से किशोर वैज्ञानिक ने कैसा चमत्कार कर दिखाया था!

अब सचमुच प्रशांतपुर के लोगों को यकीन आ गया था कि वे बड़े-से-बड़े सैन्य हमले और शत्रु-देशों की गतिविधियों से बचे हुए हैं, महफूज हैं।

साथ ही लोगों ने इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा-घेरे के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक दूरबीन का भी यह कमाल देख लिया था कि धरती पर हो या आकाश में, दुश्मन कहीं भी हो, वह इस इलेक्ट्रॉनिक दूरबीन की आँख में जरूर नजर आ जाएगा और फिर सनत के जादुई तीरों से बच नहीं पाएगा।

यहाँ तक कि कुछ दुश्मन सुरक्षा-दीवार को चकमा देने के लिए एक ही दिशा में भागने की बजाय अलग-अलग दिशाओं में भागे। झाड़ियों, दीवारों और

चट्टानों के पीछे छिप गए, तो भी उनकी पहचान करने में इन इलेक्ट्रॉनिक तीरों को जरा भी मुश्किल नहीं आई। एक ही साथ तीर छूटते थे, पर वे अलग-अलग दिशाओं में अलग-अलग जगहों पर छिपे शत्रु-सैनिकों को बेध डालते थे। यह अलग बात है कि परमाणुरोधी वस्त्रों के कारण वे वहाँ जज्ब हो जाते थे।

: 5 :

इस नकली हमले के बाद प्रशांतपुर में अनोखी शांति छा गई। इसलिए कि प्रशांतपुर में लंबे अरसे से चल रही एक बेचैन बहस कि परमाणु-बम बनना चाहिए या नहीं, अब हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो गई। लोगों ने समझ लिया था कि उनके पास जो कुछ है, वह परमाणु-बम से कहीं ज्यादा शक्तिशाली है।

सनत, जो बचपन में ही लक्ष्य-संधान करने का शौकीन था, उसकी तीरंदाजी ने सचमुच अब के ऐसा संधान किया कि प्रशांतपुर हमेशा के लिए प्रशांतपुर हो गया।

हर दिशा में सुना यह जा रहा था कि इस बार विश्व शांति का नॉबेल पुरस्कार सनत को ही मिलेगा। क्योंकि उसने लोगों को युद्ध नहीं, शांति के लिए प्रेरित किया था और उसका बस चले तो वह सारी दुनिया से युद्ध को समाप्त कर देगा।

सनत का दावा था कि वह अपने इलेक्ट्रॉनिक तीरों को ध्वनि की गति से चला सकता है और अगर उसके प्रयोग जारी रहे तो वह उन्हें प्रकाश की गति से भी आगे बढ़ाएगा, ताकि शत्रु तो मारा जाए, लेकिन बेकसूर जनता को किसी तरह का नुकसान न हो, जो परमाणु हथियारों के खौफ से पूरी शताब्दी तक काँपती आई है।

साथ ही एक पौराणिक प्रसंग अचानक प्रशांतपुर के लोगों को याद आया। यहाँ तक कि वहाँ के बच्चे-बच्चे की जबान पर सुनाई देने लगा।...वह अनोखा प्रसंग था—लंका में लंका नाम की एक राक्षसी का, जो किसी व्यक्ति की छाया देखकर उसे ग्रस लेती थी। हनुमान जब लंका जा रहे थे तो इस राक्षसी ने हनुमान की छाया देखकर उन्हें पकड़ लिया था। लोग कहते, सनत के आगे के प्रयोग संभवत: इसी तरह के होंगे। वह दुश्मन की गतिविधियों को कंप्यूटर के परदे पर देखकर ही उन्हें उसी समय नेस्तनाबूत कर देगा। कहीं तीर नहीं चलेंगे और दुश्मन खत्म हो चुका होगा। उसके बाद तो अमरीका जैसे महाबलियों के बावजूद प्रशांतपुर को कभी किसी शत्रु का भय नहीं रहेगा।

सनत की इस अनोखी सुरक्षा-दीवार का उद्घाटन करते हुए प्रशांतपुर के प्रधानमंत्री प्रफुल्लमुखम् ने कहा, ''हमारा नारा है कि हम किसी पर हमला नहीं करेंगे, पर हमारे दुश्मनों को जो मानवता के दुश्मन भी हैं, यह जरूर समझ लेना

चाहिए कि अगर हम पर हमला किया तो प्रशांतपुर पर हमला करके कोई बच नहीं पाएगा। हम युद्ध नहीं, शांति के पक्ष में हैं, लेकिन युद्ध ठाननेवाले आतताइयों को हम बख्शनेवाले भी नहीं हैं।''

प्रशांतपुर में सनत और उसके अनोखे साथी बाल और किशोर वैज्ञानिकों की यह अनोखी, एकदम अनोखी रिसर्च अभी तो पूरी दुनिया के लिए रहस्य ही है। सुना है, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, जापान, जर्मनी सहित कई देश बड़े-बड़े साधन झोंककर इस दिशा में नई-नई खोजें करना चाहते हैं, ताकि सनत के प्रयोग की काट की जा सके। या कम-से-कम ये देश अपने लिए ऐसी ही इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा-दीवार बना सकें, पर अभी तक तो इनमें किसी को जरा भी सफलता नहीं मिली। इन देशों के वैज्ञानिकों ने यह कोशिश भी कि प्रशांतपुर के वैज्ञानिकों के कामों की टोह ली जा सके और किसी जासूस के जरिए वहाँ के भेद लेकर उनके आविष्कारों की नकल की जा सके। पर प्रशांतपुर के देशप्रेमी नागरिकों ने उनकी इस योजना को भी फेल कर दिया।

यों प्रशांतपुर शांति के मामले में ही नहीं, अपनी विज्ञान की खोजों के कारण भी अभी तक तो दुनिया में अजेय बना हुआ है—और बना रहेगा अभी शायद युगों तक—क्योंकि वहाँ सनत जो है···या फिर सनत जैसे उत्साही, कल्पनाशील बाल-वैज्ञानिक हैं, जिनकी नई-नई खोजें अब भी जारी हैं।

□

प्रोफेसर जोशी बादल देश में

प्रोफेसर जोशी कुछ परेशान थे और सोच रहे थे कि क्या सच ही उन्हें अपनी धरती को छोड़कर कहीं और जाना होगा? उनके दोस्त और तमाम परिचित उन्हें महा-घुमक्कड़ कहकर यद करते थे। तो क्या उनकी घुमक्कड़ी अब उन्हें धरती छोड़कर कहीं और ले जाएगी? आखिर कुछ तो उन्हें निर्णय करना ही होगा।

प्रोफेसर विनायक जोशी देश के जाने-माने वैज्ञानिक थे, जिनकी असाधारण प्रतिभा को सारी दुनिया के वैज्ञानिक मानते थे। शुरू में जब एरोनोटिक्स पर उनके अचरज भरे आर्टिकल दुनिया के जाने-माने रिसर्च जर्नल्स में छपे तो लोग भौचक्के रह गए। सबके होंठों पर एक ही सवाल था कि इतना बड़ा और मौलिक सूझ-बूझवाला वैज्ञानिक अब तक कहाँ छिपा बैठा था?

कुछ ही दिनों में अमेरिका के कई जाने-माने शोध-संस्थानों से उनको खासतौर से आमंत्रण भेजा गया कि वे चाहें तो विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कुछ समय अपनी सेवाएँ दें। और अगर वे हमेशा के लिए यहीं आकर काम करना पसंद करें, तो उन्हें एसोशिएट प्रोफेसर के रूप में तत्काल नियुक्ति मिल सकती है।

पर प्रोफेसर जोशी का साफ इनकार। उनका कहना था कि वे अपनी सेवाएँ अपने देश में ही देना चाहते हैं, ताकि सारी दुनिया में भारत का नाम ऊँचा हो। और उन्होंने ऐसा ही किया। हाँ, अमेरिका में कुछ समय रहकर अंतरिक्ष-विज्ञान से जुड़े एक शोध-संस्थान में प्रमुख सलाहकार के रूप में अपने उपयोगी सुझाव देने के लिए उन्होंने हाँ कह दिया।

इस दौरान उनकी प्रतिभा का आतंक दूर-दूर तक फैला। उनके कई मशहूर व्याख्यान हुए तथा कई रिसर्च-पेपर्स ने धूम मचाई, जिनमें उन्होंने भविष्य की अंतरिक्ष-यात्राओं के ऐसे मजेदार नक्शे पेश किए कि लगने लगा, अरे, भविष्य में तो अंतरिक्ष में जाना एक खेल सरीखा हो जाएगा। प्रोफेसर जोशी का कहना था कि

अंतरिक्ष-यात्रा के दौरान अगर ग्रहों की गुरुत्वाकर्षण शक्तियों और अंतरिक्ष किरणों से ही ऊर्जा ली जा सके तो हम अंतरिक्ष-यात्रा के भारी-भरकम तामझाम से बच सकते हैं। तब अंतरिक्ष-यात्रा बहुत आसान हो जाएगी। ऐसा कहने के साथ-साथ प्रोफेसर जोशी ने ऊर्जा-संतरण के जो सूत्र और व्यावहारिक तरीके बताए, उससे दुनिया भर के वैज्ञानिक अचरज में पड़ गए। इसलिए कि प्रोफेसर जोशी ने एक ऐसी अज्ञात शोध-दिशा की ओर इशारा किया था, जिस ओर किसी ने सोचा तक नहीं था।

पर फिर जल्दी ही उन्हें अपने देश की याद आई। उन्हें लगा, उनके शोध के फायदे उनके देश के लोगों को ही क्यों न मिलें। और एक दिन अचानक वे अपने पद से त्यागपत्र देकर वापस भारत आ गए।

हालाँकि यहाँ आकर भी उनकी समस्या खत्म नहीं हुई। इसलिए कि अपने देश में उन्हें अपनी पसंद का काम नहीं मिल रहा था। लोग उनकी प्रशंसा तो दिल खोलकर करते, पर कहीं किसी शोध-संस्थान में उनकी नियुक्ति की बात चलती तो लोग थोड़ा होंठ टेढ़े करके कहते, ''हमने सुना है, वे जिद्दी बहुत हैं। जो ठीक समझते हैं, उसके लिए अड़ जाते हैं। पता नहीं कब, किस बात पर नाराज हो जाएँ! इसलिए हमारी तो भई, यही सलाह है कि उन्हें दूर ही रखो तो अच्छा है।'' और यों कोई-न-कोई अड़ंगा आ ही जाता।

फिर प्रोफेसर जोशी का घुमक्कड़पना भी उन्हें एक जगह कहाँ ठहरने देता था! कुछ बरस पहले का किस्सा है, कोलकाता के एक बड़े रिसर्च इंस्टीट्यूट में वे प्रोफेसर थे। कई बड़े रिसर्च प्रोजेक्ट्स उनके अंडर चल रहे थे। पर अचानक एक दिन उनके मन में आया, ''अरे यार मि. जोशी, कब तक कागज काले करते रहोगे? साइंस खाली लैबोरेटरी में आँखें फोड़ने और कागज काले करने का नाम थोड़े ही है। खुली आँखों से दुनिया को देखा जाए तो आदमी ज्ञान-विज्ञान के छिपे हुए रहस्यों को समझ पाता है। कुछ भी हो, तुम जैसे बंदे को एक बार पूरी दुनिया का चक्कर तो काटना चाहिए।''

बस, प्रोफेसर जोशी ने झटपट इस्तीफा दिया और चल पड़े। कोई ढाई साल बाद वे दुनिया का कोना-कोना घूम-घामकर आए तो उनके पास बेशकीमती अनुभवों का खजाना था, पर नौकरी छूट चुकी थी और गुजारे के लिए कोई ठीक-ठिकाना नहीं था।

पर प्रोफेसर जोशी के चेहरे पर जरा भी चिंता या शिकन नहीं थी। कोई पूछता तो मुसकराकर कहते, ''अरे भई, कहीं-न-कहीं, कुछ-न-कुछ तो हो ही जाएगा।

इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है?''

प्रोफेसर जोशी को दूर-दूर की यात्राएँ करना और घुमक्कड़ी का काफी शौक था। जब देखो, इधर से उधर, उधर से इधर आया-जाया करते। उन्होंने दुनिया के बहुत से मशहूर देश और नगर देख लिये। दूर-दूर घूमकर नदियाँ देखीं, समंदर देखें, पहाड़ देखे। तरह-तरह के लोगों से मिले। उनसे मिलकर उन्हें नई-नई बातें पता चलीं। नए-नए अनुभव मिले। इस बात से प्रोफेसर जोशी की खुशी का ठिकाना न था।

अकसर लोग पूछते, ''अरे प्रोफेसर जोशी, आपको इस तरह की यात्राओं से क्या मिलता है? आप एक जगह टिककर क्यों नहीं बैठते? इतने बड़े साइंटिस्ट हैं आप। आपको तो किसी बड़े, बहुत बड़े संस्थान में होना चाहिए था।''

प्रोफेसर जोशी हँसकर कहते, ''भई, मेरे पैर में चक्कर है। मैं एक जगह टिककर नहीं रह सकता। और जो कुछ मुझे मिला कम या ज्यादा, मुझे खुशी-खुशी मंजूर है।''

दोस्त ऊँच-नीच समझाते हुए कहते, ''अरे भाई, किन चक्करों में उलझे हो, पैसा कमाओ। पैर में चक्कर है तो जरा उसे थामकर बैठो, वरना जिंदगी मुश्किल हो जाएगी।''

इसपर प्रोफेसर जोशी जवाब देते, ''भई, जिंदगी तो बड़ी खूबसूरत चीज है। बँधकर रहने के लिए थोड़े ही है। बँधा हुआ पानी सड़ जाता है। इतने सुंदर-सुंदर पहाड़, नदियाँ, समंदर और खूब हँसती-गाती हरी-भरी वादियाँ—सब हाथ हिला-हिलाकर बुलाते हैं। तो फिर उनकी पुकार को मैं अनसुना कैसे करूँ? वैसे भी मुझे लगता है, जिंदगी तो चलने का नाम है। हर आदमी को थोड़ा-बहुत तो जरूर घूमना-फिरना चाहिए। फिर घुमक्कड़ी में कितनी तरह के लोग मिलते हैं। उनसे बहुत-कुछ सीखने को मिलता है।...मैंने जितनी भी वैज्ञानिक खोजें की हैं, उनके पीछे मेरी यही घुमक्कड़ी ही तो है। तो मैं इसे कैसे छोड़ दूँ? ना-जी-ना, मैं तो यह घुमक्कड़ी छोड़ नहीं सकता, चाहे जितनी भी मुश्किलें आएँ।''

इसी तरह समय निकलता जाता था। पर प्रोफेसर जोशी को नहीं बदलना था। वे नहीं बदले। मगर मुश्किलें तो आईं और कई बार प्रोफेसर जोशी बहुत परेशान भी हो जाते थे।

एक बार की बात है, बहुत समय तक घुमक्कड़ी के बाद प्रोफेसर जोशी अपने शहर में वापस आए। उनके पास कोई बँधी-बँधाई नौकरी तो थी नहीं। पर पैसों की जरूरत तो पड़ती थी। उन्होंने सोचा, 'अपनी घुमक्कड़ी और अजीबोगरीब

यात्राओं की कहानियाँ लिख-लिखकर छपवाऊँगा। उससे जो पैसे मिलेंगे। उसी से गुजारा कर लूँगा।'

इस काम में उनकी खूब बड़ी सी लाल रंग की डायरी बड़ी मददगार थी, जो किसी लँगोटिए दोस्त की तरह हर घड़ी उनके साथ रहती थी। असल में प्रोफेसर जोशी जब अपनी लंबी यात्रा पर थे तो डायरी साथ रखते थे। किसी भी नए आदमी से मिलना होता या कोई नई बात पता चलती तो उसी में दर्ज कर लेते। उसकी वह डायरी बड़ी कीमती थी। उसमें एक-से-एक कमाल की चीजें दर्ज थीं। उसी डायरी को देख-देखकर वह अपनी यात्राओं के मजेदार किस्से लिखने लगे। जो लिखते, वह पत्रिकाओं में छपता तो लोग जी-भरकर तारीफ करते, पर उससे ज्यादा पैसे नहीं मिलते थे।

प्रोफेसर जोशी को थोड़ा दु:ख हुआ। सोचने लगे, 'तो क्या मेरा सारा जीवन ही बेकार गया? मेरे जीवन भर के अनुभवों का इतना मोल भी नहीं है कि मैं ठीक से गुजारा कर सकूँ?'

फिर हुआ यह कि एक दिन किसी ने उनकी वह बेशकीमती डायरी भी चुरा ली। प्रोफेसर जोशी दु:खी हो गए। उनका मन एकदम उखड़ गया। सोचने लगे, 'चलो, यहाँ से चलें। कहीं और चलें।'

'मगर कहाँ?' वे कुछ भी सोच नहीं पा रहे थे।

तभी एकाएक उनके दिल ने कहा, 'चलो, अब की बार किसी बिलकुल नई जगह चलते हैं।'

'कहाँ?' उन्होंने एक पल सोचा और फिर अपना अंतरिक्ष-यान बनाना शुरू कर दिया, जिसकी कल्पना उनके दिमाग में न जाने कब से थी। इस काम में दोस्तों ने भी मदद की और प्रोफेसर जोशी अपने कुछ शिष्यों के साथ इस काम में ऐसी दीवानगी से जुटे थे कि लोग कहने लगे, ''भई, यही धुन तो हमारे प्रोफेसर जोशी को दुनिया का सबसे निराला इनसान साबित करती है। ऐसा जीनियस तो हमने कोई और देखा नहीं।''

और फिर कुछ ही महीनों में प्रोफेसर जोशी का अंतरिक्ष-यान तैयार हुआ, जिस पर बैठकर वे सब मित्रों से विदा लेकर, बादलों के देश की ओर चल पड़े। जैसे-जैसे यान ऊपर उठता गया, उसकी गति बढ़ती जा रही थी और प्रोफेसर जोशी अपनी घड़ी की ओर देखते हुए निश्चिंत थे। उन्हें पता था कि उनकी गणना गलत नहीं हो सकती। पूरे सैंतालीस घंटे तेईस मिनट के बाद उन्हें बादलों के देश में पहुँच जाना था। और वाकई अपनी गणना के अनुसार एकदम ठीक समय पर वे

पहुँच गए। जब वे बादलों के देश में कदम रख रहे थे तो उनका मन कह रहा था, 'सुनो प्रोफेसर जोशी, अब यहाँ तुम्हें शांति महसूस होगी। काम करने के बहुत मौके मिलेंगे और घुमक्कड़ी के भी। असल में तुम्हें यहीं आना था, आज नहीं तो कल। इसीलिए तुम यहाँ से वहाँ भटक रहे थे। और अब यहीं तुम्हारी बाकी खोजें होंगी, जिनसे दुनिया का भला होगा।'

और सचमुच बादलों की दुनिया ने प्रोफेसर जोशी को लुभा लिया। यहाँ शांति थी, सुंदरता भी और ऐसी शीतलता, जिसमें मन हमेशा नई-नई बातें सोचता। प्रोफेसर जोशी को लगा कि उनके मन में छिपी हुई बातें अब एक-एक करके सामने आ रही हैं। बस उन्हें लिखने की जरूरत है।

बादलों के देश में एक-से-एक अजब नजारे थे। हमेशा रंगों की बरखा होती रहती। सूरज निकलता तो सब ओर सात रंगों का जादू बिखर जाता। प्रोफेसर जोशी को यह बड़ा अच्छा लगता। फिर वहाँ के लोग भी उन्हें बहुत अच्छे और मिलनसार लगे। सबने बड़े खुले दिल से प्रोफेसर जोशी का स्वागत किया। धीरे-धीरे प्रोफेसर जोशी उन्हीं में घुल-मिल गए। वहीं रहने लगे।

बादलों के देश में रहते हुए भी प्रोफेसर जोशी ने अपना लिखना-पढ़ना नहीं छोड़ा। पहले वे हाथ से लिखते थे, अब सीधे कंप्यूटर पर लिखते। वे जो कुछ बोलते, कंप्यूटर खुद-ब-खुद उसे लिखता जाता। यहाँ तक कि जो वे हिंदी या अंग्रेजी में बोलते, वह खुद-ब-खुद बादलों के देश की भाषा मेघाशी में दर्ज हो जाती। डायरी खो गई थी तो क्या! प्रोफेसर जोशी को बहुत सी चीजें याद थीं। उन्होंने अपनी रोमांचक यात्राओं के किस्से-कहानियाँ लिखीं तो बादलों के देश में हलचल मच गई। हर कोई उन्हें इज्जत से देखने लगा। सभी आदर से उनका नाम लेते थे। प्रोफेसर जोशी को यह अच्छा लगता था।

फिर बादलों के देश में घुमक्कड़ी के बहुत मजे थे। जिस चीज के लिए वे अब तक तरसते थे, उसे बादल देश के तेज गतिवाले अजब-अनोखे रथों ने पूरा कर दिया। असल में बादलों के देश में तो हर कोई घुमक्कड़ था। इसलिए कि यहाँ जमीन तो थी नहीं, सब लोग बादलों के रथ पर सवार होकर घूमते थे। सभी के रथ के घोड़ों का रंग अलग-अलग था। और जिस रंग के घोड़ोंवाले रथ पर कोई घूमता, उसी रंग का बादलों का मुकुट भी उसके सिर पर सज जाता।

प्रोफेसर जोशी को बड़ा अचरज हुआ। सोचने लगे, ''भला क्यों है ऐसा? बादलों के देश में सबके रथ के घोड़ों का रंग अलग-अलग क्यों है? सबके मुकुट अलग-अलग रंग के क्यों हैं?''

उन्हें यह देखकर भी हैरानी होती कि सामने से उनका रथ आ रहा हो, तो बाकी सभी लोग अपना रथ किनारे पर रोककर खड़े हो जाते, ताकि उन्हें कोई परेशानी न हो।

प्रोफेसर जोशी लोगों से इसका कारण पूछते तो वे हँसकर रह जाते। फिर कहते, ''कुछ दिन में आप खुद ही समझ जाएँगे प्रोफेसर जोशी।''

प्रोफेसर जोशी जितना इस पहेली को खोलने की कोशिश करते, उतना ही अधिक उलझते जाते।

पर आखिर एक दिन उन्हें पता चला कि बादल देश में सबके रथ के घोड़ों के अलग-अलग रंग क्यों हैं? और इतना ही नहीं, सबके मुकुट भी अलग-अलग रंगों के हैं। उन्हें यह भी पता चला कि जिसके रथ के घोड़ों का रंग सुनहरा होता, सब उसकी इज्जत करते। जिसके रथ के घोड़ों का रंग घनघोर काला होता, लोग उससे दूर रहते। चाँदिया घोड़ोंवाले रथ पर जो चलते, सब उन्हें प्यार करते। भूरे-सलेटी घोड़ोंवाले उतने अच्छे न समझे जाते।

प्रोफेसर जोशी ने जरा गौर से अपने रथ के घोड़ों की ओर देखा तो वहाँ भूरे-सलेटी रंग के बीच थोड़ा-थोड़ा चाँदिया-उजास फैलता नजर आया। उन्होंने बादलपुर के अपने दोस्तों से इसका राज पूछा, तो एक दोस्त ने कहा, ''माफ कीजिए प्रोफेसर जोशी, हमारे यहाँ बादलों के रंग में सबके मन का रंग आ जाता है। जब आप यहाँ आए थे तो आपके मन में बहुत ज्यादा गुस्सा था। उन लोगों के लिए, जिन्होंने आपकी डायरी चुरा ली और आपको बिना बात बहुत कष्ट दिया। पर अब आपने उन्हें माफ कर दिया है। यों जैसे-जैसे आपका मन साफ होता गया, आपके मुकुट का रंग साफ होता गया और आपके रथ के घोड़ों का रंग भी!''

सुनकर प्रोफेसर जोशी झेंप गए। पर उन्हें खुशी भी हुई। उस दिन के बाद उनके मन से रहा-सहा गुस्सा खत्म हो गया और घमंड भी। इसके बाद उनके रथ के घोड़ों और मुकुट का रंग भी निखरता चला गया। उनके काम करने में भी तेजी आई।

इधर प्रोफेसर जोशी एक अनोखी खोज में लगे थे, जिससे दुनिया का रूप बदल सकता था और लोग सुख-शांति से जीवन जी सकते थे। कभी-कभी वे बहुत भावुक होकर बादल देश के अपने मित्रों को खुद अपनी इस विचित्र खोज के बारे में बताया करते थे, जो अभी अधूरी ही थी। असल में वे दिलों को बदलनेवाली किरणों के आविष्कार में जुटे थे और इसके लिए बादल देश की प्रयोगशाला में रात-दिन परीक्षण कर रहे थे। वे चाहते थे कि बादलों के देश में ऐसी विलक्षण- किरणों का आविष्कार किया जाए, जिन्हें अपराधियों के चेहरों पर डाला जाए तो उनके बुरे

विचार खुद-ब-खुद खत्म हो जाएँ और उनके अंदर कुछ अच्छा काम करने की प्रेरणा और लगन पैदा हो। उन्हें यकीन था कि उनकी खोज पूरी हो जाने पर दुनिया से युद्ध और नफरत जैसी बहुत सी बुराइयाँ खत्म हो जाएँगी और दुनिया खुशहाल होगी। प्रोफेसर जोशी इसे एक वैज्ञानिक की विश्व-शांति की खोज कहा करते थे।

बादलों के देश में उन्हें लोगों का बहुत सहयोग तो मिला ही, साथ ही भरपूर प्यार भी मिला। हर कोई उन्हें 'हमारे देश का प्यारा-दुलारा वैज्ञानिक' कहकर बुलाता। उनकी दूर-दूर तक इज्जत थी, नाम था। लेकिन उनके दिल में एक हलकी सी कचोट भी थी कि उनके अपने देश में सिवाय कुछ मित्रों के, किसी ने उन्हें नहीं समझा। यहाँ तक कि मखौल उड़ानेवाले लोग ही ज्यादा थे। उन्हीं की वजह से वे इस अजब-गजब देश में आ पहुँचे।

प्रोफेसर जोशी यह सोचते तो थोड़ा उदास हो जाते। पर बादलों के देश में उन्हें इतना सच्चा प्यार मिला था कि उनकी यह उदासी धीरे-धीरे खुद ही छँटने लगी। हाँ, उन्होंने यह भी तय किया था कि अपनी इस क्रांतिकारी खोज के पूरा हो जाने के बाद, अपने देश के बारे में बहुत सी बातें लिखकर वे बादलपुर के लोगों को बताएँगे। और अपनी घुमंतू डायरी में उन्होंने इस बारे में कुछ नोट्स लिखने भी शुरू कर दिए थे।

□□□